अर्द्धांगिनी

अर्द्धांगिनी

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

ARDHANGANI (अर्द्धांगिनी)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-15-5
दाम: 350/- (भा.रु.)

पाँचम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2013, श्रुति प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रम:

ग्राम्यजीवनक सत्यक संवाहक : 'अर्द्धांगिनी'

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल बहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि। कथा-कविता-नाटक-उपन्यासादि विधाकेँ ई अपन स्वर्णलेखनीसँ सजबैत रहलाह अछि। हिनक समस्त रचना हिनका मिथिला-मैथिलक लोकजीवनक प्रत्यक्षदर्शी ओ व्याख्याताक रूपमे प्रस्तुत करैत रहलनि अछि। लोकजीवनक यथार्थकेँ यथावत् चित्रित कऽ मानवीय संवेदनाकेँ उद्बुद्ध करब हिनक रचना सबहक प्रधान विशष्टता रहलनि अछि। प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास एहि तीनू कारकसँ सम्बलित हिनक रचनावलीमे मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तकर समाधानक दिशा भेटैत अछि। वर्त्तमान जीवनमे होइत नित्य नूतन परिवर्त्तनक खण्ड चित्रकेँ यथावत् प्रस्तुत करब हिनक कथाक विषय-वस्तु रहलनि अछि जकरा ई सहज रीतियेँ प्रस्तुत करैत रहल छथि।

मण्डलजीक कथा सभ मिथिलाक माटि-पानिक कथा थिक। हिनक कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आशा-निराशा, सुख-दु:ख, हर्ष-उल्लास आ जीवन-संघर्षक व्याख्या भेटैत अछि। मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक ओ राजनीतिक जीवनमे होइत परिवर्त्तन सभकेँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा ई अपन कथा सभकेँ प्रवाहमयता, रोचकता ओ विश्वसनीयताक संग प्रस्तुत करबामे सिद्धहस्त कलाकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह अछि।

हिनक कथासंग्रह 'अर्द्धांगिनी' बीस गोट कथाक समुच्चय थिक। एहि कथा सभमे नोकरिहाराक जीवनक संत्रास, परिश्रमी कृषकक उल्लास, सांस्कृतिक पावनि-तिहारमे पैसल अन्धविश्वासक प्रति जुगुप्सा, ग्राम्य जीवनमे जातीय व्यवसायक महत्व, क्रमश: टुटैत सम्बन्ध-बन्ध, सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्या आदिक सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक लोकमंगलक कामना देखि पड़ैत अछि। युगीन समस्या ओ समस्याक

कारण एवं तकर समाधानक प्रति चिन्तनशीलता हिनक वस्तु-विन्यासकेँ प्रेरक-प्रभावकारी बनौने रहलनि अछि जाहिमे परम्परित कथाधाराक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ प्रस्फुटित देखि पड़ैछ। मिथिलाक लोकजीवनक उत्थानक प्रति सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति-कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ हिनका आधुनिक कथाकार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देलकनि अछि।

एहि संग्रहक पहिल कथा थिक 'दोहरी मारि'। एहि कथामे पुरुष पात्र गुलाबक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेल अछि। अवकाश प्राप्त प्रोफेसर गुलाब कतोक वर्षसँ डाइबीटीज ओ ब्लड-प्रेसर सदृश बिमारी सभसँ ग्रस्त छथि। गामक घर-घराड़ी पर्यन्त बेचि शहरमे बनाओल मकानमे पति-पत्नी एकाकी रहैत छथि। बेटा-पुतोहु परदेशमे रहैत छनि तेँ हिनका लोकनिक सुधि लेनिहार कियो नहि छनि। नागर जीवनक चाकचिक्यसँ सम्मोहित भऽ ई शहरी जीवनमे बसि तँ गेल छथि, मुदा चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण, गंदगी आदि समस्यासँ जीवनक प्रति असौकर्य ओ ग्रस्त शहरी ग्राम्य जीवनक सौहार्दपूर्ण वातावरणक प्रति आकर्षण जगैत छनि। हद तँ तखन भऽ जाइत अछि जखन पुत्र द्वारा ई समाद भेटैत छनि जे पौत्रक मूड़न घरपर नै भऽ कऽ वैष्णो देवीमे होयतनि, जाहि लेल हुनकोलोकनिकेँ ओहीठाम अएबाक आमंत्रण भेटैत छनि आ ओ अपनाकेँ अशक्य बूझैत छथि।

एहि कथाक माध्यमे मण्डलजी साम्प्रतिक जीवनमे उपकल विस्थापनक समस्याक कारणे अवस्था-दोषग्रस्त बुजुर्ग पीढ़ीक व्यथाकेँ अभिव्यक्ति प्रदान कएलनि अछि। एहि समस्या सभक कारणे नोकरी-चाकरी भेला उत्तर लोक शहरमे बसि ग्राम्यजीवनक सौहार्दसँ तँ वञ्चित होइते छथि संगहि वृद्धावस्थामे जखन परिवारोक लोक हुनक संग छोड़ि दैत छथिन तँ अपनाकेँ वंचित अनुभव करय लगैत छथि।

एही समस्याकेँ संग्रहक दोसर कथा 'केना जीब' मे सेहो उठाओल गेल अछि। एकर पुरुष पात्र अवकाशप्राप्त प्रोफेसर छथि। ई बेटाकेँ पढ़ा-लिखा कऽ विदेश पठयबामे सफल तँ होइत छथि मुदा बेटा विदेशी सभ्यता ओ संस्कृतिक रंगमे रमि जाइत छनि आ हिनका लोकनिक खोजो-पुछारि

नहि कऽ पबैत छनि। परिणामत: दुनू परानी एकाकी जीवन बितएबाक हेतु बाध्य होइत छथि। एहन स्थितिमे हिनका लोकनिक लग एकमात्र अवलम्ब बचि जाइत छनि- जिजीविषा ओ संघर्ष। यैह जिजीविषा ओ संघर्ष करबाक मानसिकता एहि कथाक युग जीवनक अनुकूल संदेश थिक जे एकरा पूर्व कथासँ भिन्न आ स्तरीय बनबैत अछि। एहि कथाक वृद्ध दम्पत्ति कखनो हताश आ निराश नहि देखि पड़ैत छथि।

संग्रहक तेसर कथा ग्राम्य जीवनक परिश्रमी कृषकक गाथा थिक जे अपन परिश्रमक बलेँ अपन भाग्यविधाता बनल अछि। 'नवान' शीर्षक एहि कथामे मिथिलाक लोकजीवनक विभिन्न खण्डचित्र उपस्थित कएल गेल अछि यथा वृक्ष-लतादिक पहिल फड़ देवताकेँ चढ़ायब, गाय बिअएलापर महादेवकेँ दूधसँ अभिषेक करब आदि। ग्राम्य जीवनमे पसरैत जातीय ओ साम्प्रदायिक विद्वेष दिस सेहो एहिमे संकेत कएल गेल अछि। मुदा एहि कथामे मिथिलाक लोकजीवनक आर्थिक स्थितिकेँ बदहाल करएबला जाहि समस्यापर विशेष दृष्टिनिक्षेप कएल गेल अछि, से थिक बाढ़िक समस्या। एहि समस्याक कारणे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त भऽ जाइत अछि। तथापि एहि कथाक नायक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अपनाए नव किसिक धान उगबय लगैत छथि, तीमन-तरकारीक नगदी फसिल उपजाबय लगैत छथि आ नूतन नस्लक माल-जाल पोसि अपन जीवनकेँ खुशहाल बना लैत छथि। वस्तुत: एहि वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मिथिलाक कृषक जीवनक समुन्नति भऽ सकैत अछि, से संदेश देब कथाकारक उद्देश्य छनि।

संग्रहक चारिम कथा थिक 'तिलासंक्रान्तिक लाइ' एहि कथामे ग्राम्यजीवनमे पसरल अन्धविश्वासपर प्रहार कएल गेल अछि। तिलासंक्रान्तिक एकटा एहन पर्व थिक जे सोत्साह मिथिलाक घर-घरमे मनाओल जाइत अछि। एहि दिनसँ सूर्य उत्तरायण भऽ जाइत छथि आ क्रमश: शीत ॠतु वसन्त आ गृष्म दिस बढ़य लगैत अछि। मिथिलाक प्रशस्त भोजन चूड़ा-दही एहि दिन गरीबो-गुरबा धरि खाइते अछि। चूड़ा ओ मुरहीक लाइ, तिलबा आदि देवताकेँ चढ़ाय प्रसाद रूपमे ग्रहण करब एहि पावनिक कृत्य होइत छैक। शीत ॠतु रहलाक बादो मिथिलाक

ग्राम्यजीवन एहि पर्वक ओरिआओनमे मास दिन पूर्वहिसँ लागि जाइत अछि। मुदा एहि पर्वक प्रसाद ग्रहण करबाक हेतु प्रात:स्नान जरूरी बूझल जाइत छैक। मिथिलामे ई अपवाद सेहो पसरल छैक जे एहि दिन जे किओ भोरे नदी वा पोखरिमे डूब दैत छथि हुनका नदी-देवता तत्काले लाइ धरा दैत छथिन। एही अपवादपर विश्वास कऽ गोपाल नामक एकटा नेना बारहे बजे रातिमे नदीमे डूब देबऽ चल जाइत अछि आ ठंढसँ ग्रस्त भऽ जाइत अछि। ग्राम्यजीवनक अन्धविश्वासी समाजकेँ एहि कथाक माध्यममे ई संदेश देल गेल अछि जे वस्तुत: ई पावनि प्रकृति-परिवर्त्तनपर आधारित अछि आ एहिमे बिनु पाखंड कयने लोककेँ अपन सामर्थ्यक अनुसार समयपर स्नान करबाक चाही, नहि कि अन्धविश्वासमे पड़ि रोगग्रस्त भऽ जएबाक चाही। हरड़ीवालीक उक्ति- “अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसियौने छलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब” अन्धविश्वासक प्रति बेस प्रहार कएलक अछि। कथामे एहि पावनिक तैयारीमे जुटल लोकजीवन अत्यन्त सुन्दर चित्र भेटैत अछि।

पाँचम कथा ‘भाइक सिनेह’ भाइ-भैयारीक आपसी कलह ओ आत्यन्तिक प्रेमक कथा थिक। शिष्टदेव आ विचारनाथ दुनू भाइ एक दोसराक प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति ओ बन्धुत्वक भाव रखैत छथि मुदा देयादिनी लोकनिक बीच खट-पटसँ परिवारमे भिन्न-भिनाउज भऽ जाइत छनि। भिन्न-भिनाउजक मूलमे अर्थसत्तापर कबजा रहैत अछि। मुदा जखन दुनूक मनमे परस्पर प्रेमक भाव जगैत छनि तँ दुनू एक-दोसराक दु:ख बँटबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। एहि कथामे कृषक जीवनमे पारस्परिक सहयोग, सद्भाव ओ शक्तिक अनुकूल श्रमपर आधारित संयुक्त परिवारक उपयोगिताक परम्परित अनुगायन देखि पड़ैछ।

संग्रहक छठम कथा ‘प्रेमी’ वस्तुत: प्रेमकथाक रूपमे लिखल गेल अछि मुदा एहि कथामे रचनाकारक उद्देश्य समाजिक जीवनमे व्याप्त दहेज प्रथाक कुरीतिकेँ समाप्त करबाक संदेश सएह अभिव्यक्त भेल अछि। पक्षधर आ ज्ञानचन्द दू गामक छथि। दुनूमे प्रगाढ़ दोस्ती छनि। ज्ञानचन्दक पौत्र परीक्षा देबाक हेतु पक्षधरक गाम अबैत छथिन जतए परीक्षावधि धरि ज्ञानचन्दक पौत्र लोचन आ पक्षधरक पौत्री सुकन्याक बीच

संवाद होइत छनि आ दुनू परस्परानुरक्त भऽ जाइत छथि। लोचनकेँ विदा करबाक क्रममे सुकन्या ओकरे संग ओकरा घर धरि चलि जाइत अछि जे ओहि गाममे गुलञ्जरक वस्तु भऽ जाइत छैक। विजातीय रहलाक बादो पक्षधर आ ज्ञानचन्द पारस्परिक मैत्रीकेँ सम्बन्धमे बदलि एकटा आदर्शक स्थापना करैत छथि। पक्षधरक उक्ति- “जइ समाजमे मनुक्खक खरीद-बिकरी गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए ओइ समाजकेँ पञ्च तत्त्वक बनल मनुक्ख कहल जा सकैत अछि? जँ से नै तँ हमर कियो मालिक नै छी। कियो अगुँरी देखाओत तँ ओकर अगुँरी काटि लेबै।” मे दहेज प्रथाक समर्थक ओ प्रेम-विवाह, विजातीय विवाहक अवरोधक तत्वपर प्रहार कएल गेलैक अछि।

संग्रहक सातम कथा ‘बपौती सम्पत्ति’ कृषक जीवनमे जातीय व्यवसायक महत्त्वक अवधारणापर आधारित अछि। सम्प्रति कृषक-मजदूरक पलायनसँ गामक अर्थ-व्यवस्था चरमरा गेल अछि, तकरा सुधारबाक हेतु एहि कथामे चिन्तनक एकटा दिशा भेटैत अछि। कथानायक गुलटेन अपन पिताक सिखाओल व्यवसायसँ नीक जकाँ परिवारक परिपालन करबामे सक्षम अछि। तेँ कथाकारक उद्देश्य ग्राम्य स्वावलम्बनकेँ पुन:स्थापित करबाक हेतु मार्गदर्शन करब बुझना जाइत अछि।

आठम कथा ‘डंका’ लोकजीवनक अवमूल्यनकेँ रेखांकित करैत अछि। एकर मुख्य पात्र भैयाकाका गामक रक्षा करबाक संकल्प लऽ अपनो गाममे अखड़ाहाक प्रचलन शुरू करैत छथि जाहिसँ पास-पड़ोसक गाम किंवा जमीन्दारक पहलमान हुनकालोकनिकेँ अबल बूझि प्रताड़ित नहि कऽ सकनि। एहि तरहेँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति हुनका व्यग्रता छनि मुदा साम्प्रतिक जीवनमे स्वार्थक प्रवेशसँ ओ ई जानि विचलित भऽ जाइत छथि जे आब गाम-घरक लोकक कल्याणक गप्प तँ दूर, लोक अपनो सर-सम्बन्धीक खोज-पुछारि करबासँ कतरयबाक मूल्यरहित संस्कार पालय लागल छथि। हिनक उक्ति- “माए-बाप, भाए-बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार एहि रूपेँ नष्ट भऽ रहल अछि जे साधनाभूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य छै” मे समस्त कथासार

अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि।

नवम कथा ‘संगी’ शिक्षा जगतमे भेल अध:पतनक कथा थिक जाहिमे स्कूल-कओलेजमे शिक्षाक व्यवसायीकरणक फलस्वरूप सामान्य जनसँ छीनल जाइत शिक्षाक समस्यापर विमर्श भेल अछि। एकर समाधानक हेतु दूटा संगी पारस्परिक परिणयपूर्वक क्रान्तिक शंखनाद करैत देखि पड़ैत छथि। कथाक घटनाक्रम आकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त बुझना जाइछ, जे प्रभावान्वतिकेँ कमजोर करैत अछि।

‘ठकहरबा’ पूर्णत: राजनीतिक कथा थिक। एहिमे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे पुलिस ओ नेतालोकनिक भ्रष्ट चरित्र, मतदानमे गड़बड़ी आदिक चित्रण करैत लोकजगतमे क्रमश: पसरैत भ्रष्टाचारक अतिरेकक चित्रण भेल अछि, जाहिसँ कोनो वस्तुक विश्वासनीयतापर प्रश्नचिन्ह लागि गेल अछि। ई कथा लोकतंत्रमे लोक आ तंत्र दुनूक स्खलनपर सोचबाक हेतु विवश करैत अछि।

‘अतहतह’मे मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे बरियाती पक्ष द्वारा सरियाती पक्षकेँ देखार करबाक हेतु खाद्य वस्तुपर जोर देबाक परिष्कारक रूपमे सरियाती पक्ष द्वारा तकर बदला लेबाक कथा कहल गेल अछि। एहि कथामे बरियाती पक्षकेँ पानिक संग दवाइ पिआय ओकरा सभकेँ देखार करबाक प्रयास कएल गेल अछि जे लोकसंस्कृतिक प्रतिकूल होएबाक कारणेँ प्रतीयमान नहि भऽ सकल अछि। अवश्ये एहिमे वर पक्षमे शराब पीबि कऽ बरियाती जएबाक आधुनिक प्रचलनक विरुद्ध आक्रोशक अभिव्यक्ति भेल अछि। मण्डलजीक ई कथा कन्यादान-वरदानमे दुनू पक्षक सम्मान रक्षाक पारस्परिक दायित्वक प्रति कान्तासम्मित उपदेश दैत अछि।

बारहम कथा ‘अर्द्धांगिनी’ एहि पोथीक नामकरणक आधार बनल अछि। एहि कथामे अवकाशप्राप्त शिक्षकक अत्यन्त सूक्ष्म मनोविश्लेषण भेल अछि। अपन कमाइक बलें ओ आजीवन अपन पत्नीकेँ दासीसँ आगू बुझबाक हेतु तैयार नै होइत छथि मुदा जखन नोकरी समाप्त भऽ जाइत छनि तखन पत्नीक आवश्यकतापर ध्यान जाइत छनि आ अर्द्धांगिनीक महत्त्व बूझि पबैत छनि। लेखक नारीक सेविका स्वरूपकेँ मर्यादित कऽ

ओकरा पुरुषक समानान्तर मूल्य प्रदान करबाक पक्षपाती छथि, जकर अभिव्यक्ति एहि कथाक लक्ष्य बुझना जाइत अछि।

तेरहम कथा थिक 'ऑपरेशन' एहि कथामे मइटुग्गर नेनाक सामाजिक स्थितिपर विमर्श कएल गेल अछि। जखन कोनो नेनाक माय असमय कालकवलित भऽ जाइत छैक, तँ समाज ओकरा अलच्छ कऽ कऽ बूझऽ लगैत छैक आ ककरो ओकर शारीरिक ओ मानसिक विकासक चिन्ता नहि रहैत छैक। मुदा जँ ओहि बच्चाक पिता दोसर विवाह कऽ ओकर प्रतिपालनक हेतु, स्थानापन्न माताक व्यवस्था करैत छथि तँ वएह समाज बेर-बेर ई जनबाक प्रयास करैत अछि जे सतमाय ओकर पालन नीक जकाँ कऽ रहल छैक वा नहि। समाजक ई व्यवहार ओकर क्रूर मानसिकताक परिचय दैत अछि जाहिसँ नेना आ ओकर पिता आहत होएबाक लेल बाध्य होइत छथि। लेखक समाजक एहि विरूपित मानसिकतापर व्यंग्य करब एहि कथाक उद्देश्य रखलनि अछि। एही माध्यमसँ अस्पतालक दुर्व्यवस्था तथा प्राइवेट प्रैक्टिसक कारणपर सेहो विमर्श कएल गेल अछि।

चौदहम कथा 'धर्मनाथ' ढहैत जमींदार परिवारक गाथा थिक। एहिमे दहेज प्रथाक उन्मूलनक हेतु सामाजिक जागरण कथाकारक उद्देश्य बुझना जाइत अछि। एकर नायक धर्मनाथ जमीन्दार परिवारक छथि आ पिताक अमलदारी धरि हुनक परिवार दहेजक संपोषक रहल अछि आ खेत बेचि-बेचि कन्यादान करैत अपन कुलाभिमानक रक्षा करैत रहल अछि। मुदा ई मिथ्याभिमान जमीन्दारी उन्मूलनसँ क्षत-विक्षत भऽ गेल छैक आ धर्मनाथ एहि स्थितिमे नहि रहि पबैत छथि जे पुत्रीक विवाह जमीन्दारे परिवारमे करबाक हेतु धन जुटा पाबथि। अन्ततः ओ प्रो. रामरतन सन दहेजविरोधी व्यक्तिक सहायतासँ एकटा कर्मयोगी बालकसँ अपन बेटीक विवाह ठीक कऽ लैत छथि आ मिथ्या प्रतिष्ठाकेँ चुनौती दैत छथि। परिणामतः हुनक पिता अपन कुलाभिमानपर प्रहार होइत देखि मृत्युकेँ प्राप्त कऽ लैत छथि। धिया-पुताक थपड़ी बजा-बजा ई कहब जे- "बाबा मुइलाह- पूरी-जिलेबीक भोज खायब.." वस्तुतः परम्परा आ अन्धविश्वासँ जकड़ल सामाजिक व्यवस्थाक विनाशक प्रति उत्सव थिक जे

दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ संकेतित करैत ई ईंगित करैत अछि जे जँ लोक मिथ्याभिमानक त्याग नहि करताह आ दहेज देब-लेबकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक मानदंड बनौने रहताह तँ अध:पतन अवश्यम्भावी अछि।

'सरोजिनी' प्रेमविवाहपर आधारित कथा थिक। नायिका सरोजिनी जमीन्दार घरक कन्या छथि। हिनक भाय हृदयनारायण बिलैतिन कन्यासँ प्रेमविवाह कऽ लेने छथिन। इहो अपन बालसखा रमेशक संग विवाह कऽ लैत छथि। रमेश हिनके नोकर घूरनक शिक्षित पुत्र छथि। आर्थिक ओ सामाजिक दुनू स्तरपर असमान लोकक विजातीय विवाहक समर्थनक ई आधार जे "अपन मालिक हम स्वयं छी। अखन धरि जातिक पहाड़ जे अपना समाजमे बनल अछि, ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ ने पेट भरैत अछि, ने नाङटकेँ वस्त्र दैत अछि, ने बेघरकेँ घरे। एतय धरि जे मूर्खकेँ पढ़ा नहि सकैत अछि, लूटैत इज्जतकेँ बचा नहि सकैत अछि, ओहि समाजकेँ विरोध करबाक कोन अधिकार?"

कथा उपदेशात्मक ओ असहज तथा सिने जगतक वस्तु जकाँ असहजतासँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। तथापि कथाकार जातीय व्यवस्थापर आधारित वैवाहिक पद्धतिकेँ गुण ओ प्रेमपर आधारित करबाक समर्थन कऽ एहि प्रथामे युगानुरूप परिवर्त्तनक आकांक्षी बुझना जाइत छथि। विश्रृंखलित होइत वैवाहिक व्यवस्थाक प्रति समाजक ध्यान आकृष्ट करब एहि कथाक उद्देश्य बुझना जाइत अछि।

संग्रहक सोलहम कथा 'सुभद्रा' विधवा विवाहक समस्यापर आधारित अछि। दैवयोगसँ सुभद्राक पतिक देहान्त हवाइ दुर्घटनासँ भऽ जाइत छनि। ओ अभिशप्त जीवन बितएबाक हेतु बाध्य भऽ जाइत छथि। एकर कारण ई अछि जे ओ जाहि जातिसँ अबैत छथि ताहिमे विधवा विवाहकेँ मान्यता नहि छैक। कथाकार रूपलाल बाबा नामक एक गोट गाँधीवादी चरित्रक अवतारणा करैत छथि जे नारी-समुत्थानक प्रति समर्पित छथि। हिनक मान्यता छनि जे जहिना पत्नीक मुइला उत्तर पतिकेँ दोसर विवाह करबाक अधिकार छैक तहिना पतिक मुइला उत्तर पत्नीयोकेँ दोसर विवाहक अधिकार भेटबाक चाही। रूपलाल बाबा सुभद्राक पिताकेँ

मनाय सुशील नामक युवकसँ ओकर विवाह सम्पन्न करबैत छथि। एहि तरहेँ समाजमे विधवाकेँ मान्यता भेटैत छैक। आदर्शवादी संकल्पनापर आधारित ई कथा वस्तुत: एहि सामाजिक समस्याक प्रति कथाकारक प्रगतिवादी मूल्यकेँ उद्घाटित करैत अछि।

'सोनमा काका' एहि संग्रहक सतरहम कथा थिक। ई कथा मानव धर्मपर आधारित अछि। एकर प्रधान पात्र सोनमा काका स्वयं पत्नीक बीमारीसँ त्रस्त छथि। ओकर इलाज करा जखन गाम घूमैत छथि तँ रामकिसुन नामक एकटा बिगड़ैल व्यक्तिक मृत्युक समाचार भेटैत छनि। ओ व्यसनक चक्रमे पड़ि ततेक निर्धन भऽ गेल छल जे ओकरा लेल कफनो धरिक उपाय नहि छलैक। सोनमा काका समाजक सहायतासँ ओकर संस्कार करबैत छथि आ ओकर अनाथ बालककेँ अपन बेटीक संग विवाह कराय ओकर जीवनकेँ सामान्य बनयबाक प्रयत्न करैत छथि। कथाकार एहि आदर्श पुरुषक स्थापना कऽ ई सिद्ध' करऽ चाहैत छथि जे जँ समाज चाहय तँ केहनो पैघ समस्याक निदान भऽ सकैत छैक।

अठारहम कथा 'दोती बिआह' परित्यक्ताक पुनर्विवाहपर आधारित अछि। एकर प्रमुख पुरुष पात्र उमाकान्त छथि जे पचास वर्षक आयुमे पत्नीक देहावसानक कारणेँ एकाकी जीवन जीबाक हेतु बाध्य छथि। जीवन-संगिनीक अभावमे हिनक दिन काटब पहाड़ भऽ गेल छनि। दोसर दिस यशोदिया नामक एकटा युवती छथि जनिक पति दिल्लीमे नोकरी करैत छलथिन मुदा शहरी चाकचिक्यमे पड़ि यशोदियाकेँ परित्यक्त कऽ कतहु पड़ा जाइत छथि। निस्सहाय यशोदिया गाम घूरि अबैत अछि आ हरिनारायण नामक एक गोट सम्भ्रान्त व्यक्तिक आश्रममे रहि जीवन-यापन करऽ लगैत अछि। हरिनारायण उमाकान्तक स्थितिकेँ परखि हुनका यशोदिया संग विवाह करा दैत छथिन जाहिसँ दुनूकेँ अवलम्ब भेटैत छनि आ दूटा उजड़ल परिवार बसि पबैत अछि। एहि कथाक माध्यमे कथाकारक ई उद्देश्य स्पष्ट होइत छनि जे मानव जीवनकेँ सन्तुलित रखबाक हेतु पति-पत्नीमे किओ जँ एकाकी जीवन जीबैत अछि, तँ ओ अनेक प्रकारक मानसिक व्यथामे पड़ल रहैत अछि जकर निदानक हेतु समतूल युगल बनयबाक हेतु प्रयत्न होएबाक चाही।

उनैसम कथा 'पड़ाइन' ग्राम्य जीवनमे पसरल अराजकताक कथा थिक जकरा कारणेँ बलगर लोक निर्बलकेँ सता कऽ ओकरा गामसँ उपटयबापर लागल रहैत अछि। एहि कथाक पात्र चेथरू महाजनी अत्याचार, खेत-पथारमे बेइमानी-शैतानी, चोरि, बलपूर्वक दोसरक जताति नष्ट करब आ माय-बहिनिक इज्जतक संग खेलवाड़ करब आदिसँ त्रस्त भऽ गाम छोड़ि दैत अछि आ नेपाल जा कऽ बसि जाइत अछि। ओतऽ परिश्रमपूर्वक अर्जित धनसँ सम्पत्तिशाली बनि नीक जकाँ गुजर करऽ लगैत अछि। एहि कथामे कथाकारक उद्देश्य ग्राम जीवनक किछु समस्या सभकेँ इंगित करब बुझना जाइत अछि। मुदा आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे एहिमे स्वभाविकताक अभाव बुझना जाइत अछि।

'कतौ ने' कथा संग्रहक अन्तिम कथा थिक जे वस्तुत: यात्रा-वृत्तान्त थिक। एहिमे जनकपुर यात्राक वर्णन आएल अछि। गामक एकटा टोली जनकपुरमे विवाह पंचमीक मेला देखबाक हेतु प्रस्थान करैत अछि मुदा विवाह पंचमी दिन ई लोकनि धनुषा दर्शन करबाक हेतु जाइत छथि आ ओतए गाड़ी खराब भऽ जएबाक कारणेँ विवाह पंचमीक रातिमे पुन: जनकपुर घुमि नहि पबैत छथि जाहिसँ हुनकालोकनिकेँ जनकपुरक कार्यक्रम देखबाक अवसर नहि भेटि पबैत छनि। अन्तत: हारि-थाकि कऽ सभ सोचैत छथि जे कतए एलौं तँ कत्तौ ने। दुर्योगवशात् मनोरथपूर्त्तिमे बाधा होएबाक एहि कथामे वस्तुत: जनकपुर यात्राक एक गोट मनोरम वृत्तान्त भेटैत अछि।

एहि तरहेँ 'अर्द्धांगिनी' कथा संग्रह मिथिलाक ग्राम्य जीवनक विभिन्न आयाम ओ समस्या तथा तकर समाधान सबहक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी व्याख्या थिक।

एहि संग्रहक कथा सभ वर्णन-प्रधान देखि पड़ैत अछि। कथाकारक शैली एहन छनि जे ओ कोनो घटनाकेँ प्रस्तुत करबासँ पूर्व ओकर पूर्वपीठिकाकेँ ततेक सघन कऽ दैत छथि जे पाठक ताहिमे तल्लीन भऽ जाइत छथि। एहि प्रकारक वर्णन-विन्यास हिनक औपन्यासिक वृत्तिकेँ स्पष्ट करैत अछि जाहिमे वर्णनक हेतु पर्याप्त अवसर रहैत छैक।

मनोविश्लेषण मण्डलजीक कथा सबहक अन्यतम विशिष्टता

थिकनि। ई जाहि कोनो पात्रकेँ प्रस्तुत करैत छथि तकर अन्तस्तलमे प्रवेश कऽ ओकर भावराशिकेँ अभिव्यक्त कऽ दैत छथि जाहिसँ पात्रक चरित्र स्वत: स्फुट होमय लगैत अछि। उदाहरणार्थ 'बपौती सम्पत्ति' कथामे गुलटेनक मानसिक स्थितिकेँ अभिव्यक्त करैत ई पाँती द्रष्टव्य अछि- "मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एक ठाम फाटल सीने दोसर ठाम मसकि जाइत अछि, तहिना परिवारोक काज अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुँहेँ नहि ससरि रुकि गेलै। चिन्ताक अँटकिते मनमे खुशी भेलै। अपनापर ग्लानि भेलै जे जाहि धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवी-देवताकेँ होइत छनि ओकरा हम मायाजाल किअए बुझैत छी। ई दुनियाँ ककरा लेल छै? ककरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक छैक नहि कि उपभोग करैक।"

मण्डलजी कथाक भाषामे मैथिलीक गमैया बोली-वाणीक सहज स्वरूप अभिव्यक्त भेल अछि। ई पात्रानुरूप भाषाक प्रयोग कएलनि अछि जाहिसँ प्रत्येक पात्रक बौद्धिक ओ सामाजिक स्थिति स्पष्ट होइत चल जाइत अछि। हिनक कथा सभमे कथाकारक भाषा सेहो मैथिलीक लोकजगतक भाषाहिक अनुगमन करैत अछि जाहिमे सहजता अछि। कनेको कृत्रिम प्रयोगसँ ई बचैत रहल छथि। हिनक भाषामे तद्भव ओ देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। युग्म शब्दक प्रयोग हिनक भाषाकेँ लालित्य प्रदान करबामे आ ओकर प्रवाहमयतामे सहायक रहलनि अछि। उदाहरणक हेतु माल-जाल, लेब-देब, दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी, ताड़ी-दारू, छहर-महर, चोरी-डकैती, बाल-बोध, बेटा-पुतोहु, भोज-काज, अन्हर-बिहाड़ि, दार-मदार, सुक-पाक, भुखल-दुखल, चीज-बौस, घुसका-फुसका आदिकेँ देखल जा सकैछ।

मण्डलजी कथा भाषाक ई अन्यतम विशिष्टता थिकनि जे ई कोनो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिव्यक्त करबाक हेतु चमत्कारिक उपमानक प्रयोग करैत छथि जाहिसँ वस्तुस्थितिक स्पष्ट चित्र पाठकक सोझाँ आबि जाइत अछि यथा- "जहिना खढ़ाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बूझि पड़ैत छैक तहिना सुशीलक मन समस्याक बोनाएल रूप देखलक।

जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जाय मिलैत अछि तहिना ने टटघरक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत।” आदि।

एतावता कहल जा सकैछ जे मण्डलजीक कथा वर्णनक दृष्टिञे मिथिलाक ग्रामजीवनक यथार्थवादी चित्र, घटनाक दृष्टिञे आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म मनोविश्लेषणक प्रति प्रतिबद्ध तथा उद्देश्यक दृष्टिञे लोक मंगलकारी अछि। मैथिलीक आधुनिक कथा लेखन हिनक रचना सभसँ सम्बलित भेल अछि आ एकर समाजोपयोगी तत्व सभ अनन्त काल धरि मिथिलाक लोकजीवनकेँ प्रेरित-प्रभावित करैत रहत।

- डॉ. योगानन्द झा

कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001 (बिहार)

दोहरी मारि

दस सालसँ डायबीटीज आ साढ़े-सात सालसँ ब्लड-पेसरक शिकार सरसठिम सालक प्रोफेसर गुलाब पाँच साल पहिने कौलेजसँ सेवा-निवृत्त भेला। सूर्यास्तक समय, सोफापर प्रोफेसर गुलाब ओंगैठ पाँचो आलमारीक पोथीपर नजैर खिड़बैत रहैथ। पत्नी चाह नेने कोठरीक मुँह टपिते छेली आकि भुक-दे मड़कड़ी बरल। ओना, अन्हारक आक्रमण तइ रूपेँ नइ भेल छेलै मुदा किड़ी-फतिंगीक आवाहन बाहरसँ घरक कोठरी दिस हुअ लगल छेलइ। टुटल ऐगला दाँतक मुहसँ मुस्की दैत लालमनि पति दिस कप बढ़बैत बजली-

"कौफी सधि गेल छेलए। पहिलुके चाहपत्ती घरमे छेलै सएह बनेलौं। मुदा चाहक गन्ध केनादन लगल।"

पत्नीक बात सुनि गुलाबक मन अमताए लगलैन। मुदा जहिना पाकल अमतीक खट-मधुर सुआद होइए तहिना प्रोफेसर गुलाब अपन चौहु टुटल मुहसँ मुस्किया देलैन। मन कलैप उठलैन। एहेन समय भऽ गेल जे एक कप चाहोपर...। ठीके बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन- 'करनी देखब मरनी बेर।'

पत्नीक हाथसँ कप पकैड़ गुलाव मुँहमे लगौलैन। मुँहमे चाह अबिते ठोर बिजैक गेलैन। हाँइ-हाँइ कऽ चाह तँ घोंटि गेला मुदा जाकरी पत्तीक सुआद मनकेँ हौंड़ देलकैन। चाहक कप टेबुलपर रखि उठि कऽ ठाढ़ होइते रहैथ आकि बुझि पड़लैन जे रद्द हएत। दुनू हाथसँ छाती दाबि पुन: सोफापर बैसला।

चौसैठ वर्षीए लालमनि गैस्टिकसँ आक्रान्त। पेटक गैससँ मन अस-बिस करैन। जोरसँ ढेकार भेलैन। मन हल्लुक होइते पतिक पीठ ससारए लगली। रसे-रसे प्रोफेसर गुलाबक मन खनहन हुअ लगलैन। मन खनहन होइते पत्नीकेँ पुछलखिन-

"मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि?"

दुनियाँक रागसँ ऊपर उठि लालमनि चहैक उठली-

"की गड़बड़ आ की नीक, कोनो की तेहैया बोखार छी जे तीन दिन जाइते चलि जाएत, निरक्टौवैल भऽ कऽ छुटि जाएत। गोटीक चाह करैए। जाइ छी एकटा गोटी खा लेब, ठीक भऽ जाएत।"

कहि लालमनि दोसर कोठरीक रस्ता धेलैन। प्रोफेसर गुलाबक नजैर चाहक कपपर गेलैन। मुदा चाहक कपपर नजैर नै अँटैक पोथीक आलमारीपर पहुँच गेलैन। अखनुक जे जिनगी अछि से आइ धरि किए ने बुझलौं? जँ अपने नइ बुझलौं तँ जिनगी भरि पढ़ौलिऐ की? आकि दीमक बनि पोथीकेँ माटि बनौलिऐ? तैबीच ब्लड-पेसरक जोर पबिते गरजला-

"एकटा गोटी खाइमे केते देरी लगैए?"

पतिक बात सुनि लालमनि बुझि गेली जे ब्लडपेसरक झोंक छिऐन। धड़फड़ाइते कोठरीमे आबि मुस्की दैत आलमारीसँ गोटी निकालए बढ़ली। गोटी निकालि, गिलासमे जगसँ पानि लऽ पतिक हाथमे दैते रहैथ कि सिरमाक बगलमे मोबाइल टनटनाएल।

गुलाब हाँइ-हाँइ कऽ गोटी मुँहमे लैत पानि गुलगुलबैत मोबाइलपर हाथ बढ़ौलैन। मोबाइल उठा देखलैन। बेटा-लीलाकान्तक नाओं देखि पत्नी दिस मोबाइल बढ़बैत बजला-

"ननुगर बेटाक फोन छी। लिअ...।"

प्रोफेसर गुलाब अपनाकेँ बेटा रूपमे देखलैन। मोन पड़लैन माए-बाप। की जिनगी छल, की आइ अछि। जाधैर पिता जीबै छला परोपट्टाक किसानक समाज रूपी समुद्रमे बसल छला। माल-जालसँ लऽ कऽ बीआ-बालि धरिक कारोबार छेलैन। लेब-देब छेलैन। सोझे लेब-लेब नै छेलैन। लेब-लेबसँ बेसी देब-देब छेलैन। खीरा-झिंगुनी आकि नव कोनो अन्न, फल-फलहरी होइ, बीआक मूल्य कहाँ लइ छेलखिन। मुदा हमरा कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे एक तँ कौलेजक नोकरी भेटल तैपर सँ पिताक देल घर-घराड़ी धरि उजाड़ि देलौं! की हम दरमाहाक पाइसँ जीवन नै चला सकै छेलौं..?

तरे-तर अपन पैछला विचारपर सेवा-निवृत्त प्रोफेसर गुलाब गरमा गेला। मुदा जहिना खढ़-पातक धधरा धुधुआ कऽ उठैत आ लगले पझा कऽ तेहेन छाउर बनि जाइत जेकरा हवाक सिहकियो उड़िया दैत, तहिना प्रोफेसर गुलाबक मन लगले खढ़क झोली जकाँ ठंढा गेलैन। मन घुमलैन, किछु मजबुरियो भेल। एक तँ परोपट्टामे बहरबैया जमीनपर लड़ाइ सुनैग गेल, दोसर अपन पितियौत कारी भायकेँ बटाइ खेत करए कहलयैन तँ कहलैन जे ‘एक बाबाक अरजल सम्पैत छी, सेहो कीनल नहि, दान देल, तइ जमीनक उपजा बाँटि बँटेदार बनब। अहाँ कियो आन छी। जहिना सभ दिनसँ एक परिवार बनल रहल अछि तहिना रहत। जखने हम बाँटि कऽ देब तखने बँटेदार भऽ जाएब। किसान जँ बँटेदार भऽ जाए तँ ओकर प्रतिष्ठा बँचलै केना। पाबैन-तिहारसँ लऽ कऽ पारिवारिक काज-उद्यम धरि–जहिया गाममे रहब, अपन परिवारक समांग जकाँ रहब, मौका-मुसीबतमे दरभंगा जाएब तँ अपन घर जकाँ हमहूँ रहब।’ ..कहलैन तँ विचारणीय बात मुदा से उचित भेल? बाजारक चमक-दमक देखि अपनो मन उधियाएल। महग बुझि घराड़ियो बेच मकान बना शेष बैंकमे रखि लेलौं..!

प्रोफेसर गुलाबक फेर मन घुमलैन, की आजुक बाजारवादक नींव हमहीं सभ ने तँ देलौं? आइ की देखै छी, भरि मन चाहो नै पीब सकलौं। हुनके (पत्नीए) की दोख देबैन, तीन दिनसँ बाजारमे करफू लगल अछि। दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी सभ बन्न अछि। सौंसे बाजार भकोभन लगैए। बन्दूकधारी पुलिस आ पुलिसक गाड़ी छोड़ि सड़कपर ऐछे की? पनरहे दिन मेहतरक हड़ताल भेल, गन्दगीसँ बाजार भरि गेल। बेमारीक प्रकोप बढ़ि गेल! तहिना पानिक अछि। ताड़ी-दारू, चोरी-डकैती, लूट-पाट आ अपहरण तँ आम भऽ गेल अछि। एक दिस गाम छोड़लौं, दोसर दिस बेटा-पुतोहु राँचीमे सभ बेवस्था कऽ लेलक। दुनू परानी रोगसँ अथबल बनल छी, केना दिन कटत? की अछैते औरुदे परान तियागि ली? हे भगवान जनिहह तूँ?

जहिना पूसक ओस सदिकाल प्रकृतिकेँ ठंढ बनौने रहैए तहिना हृदय शीतल भऽ गेलैन। पत्नी दिस आँखि उठा कऽ देखली तँ बुझि पड़लैन

जे जहिना हमर मन जिनगीसँ निराश भऽ कानि रहल अछि तहिना हुनकर (पत्नीक) मन बेटाक फोन सुनैले फूलक कोढ़ी सदृश बिहुँसि रहल छैन। मन आरो बेथित भऽ गेलैन। जहिना असमसानक बरियातीक मन खाएब-पीबसँ हटि मृत्युक घाटपर बैस गंगा (नदी, सरोवर) मे डुम दऽ पवित्र होइले कछमछाइत तहिना प्रोफेसर गुलाब बाबूक मन जिनगीक घाटपर वौआ गेलैन। राजस्थानक पुष्कर जकाँ अनेको घाट। उन्मत्त मन आलमारीक पोथी दिस पड़लैन। सतरहम शताब्दी धरि अर्थशास्त्र आ राजनीतिशास्त्र सझिया भाए छल। संगे-संग जीवन-यापन करै छल। से भीन भऽ गेल! हम सभ खुट्टा गाड़ि राजनीतिशास्त्रकेँ धेलौं। गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिकेँ अधिकार-कर्तव्य सिखबैत रहिऐ। मुदा जइ अवस्थामे अखन दुनू परानी जीब रहल छी ओ कोन अधिकार-कर्तव्य छी? की बारह बजे रातिमे डॉक्टर ऐठाम जा सकै छी? जँ से नहि, तँ की बेमारी हमरा मुकदमाक तारीख जकाँ भरि रातिक मोहलत दऽ देत?

जिनगीक काँट-कूश फानि लालमनि मोबाइल कानमे सटौने पतिसँ फुट भऽ सुनैक विचार केलैन। मुदा मुहसँ निकैल गेलैन-

“बौआ, नूनू।”

“हँ, हँ। पाँचम दिन बौआ- कल्पनाथक मूड़न छी।”

टाबर हटने मोबाइलक लाइन कटि गेल। मुदा लालमनि से नइ बुझि सकली। बुझि पड़ैन जे कम जोरसँ बजने नै सुनैए, छातीसँ जोर लगा जोर-जोरसँ बाजए लगली-

“सभ परानी नीके छह किने?”

‘सभ परानी’क नाओं सुनि कोठीक चाउर जकाँ प्रोफेसर गुलाबक मन गुमसरए लगलैन। जहिना सड़ल आ नीकक मध्य अपन-अपन सेनाक बीच रणभूमिक दृश्य होइए तहिना प्रोफेसर गुलाबो बाबूकेँ भेलैन। मुदा जहिना बेटा-पुतोहुपर खौंझ उठलैन तहिना पत्नीक अनभिज्ञतापर हँसी सेहो लगलैन, माने पत्नीक हँसी दौगल आबि हृदयकेँ सुतल आदमी जकाँ डोलबए लगलैन। बजला-

“सभ परानीक कुशलमे अपनो लगा कऽ कहलयैन आकि अपनाकेँ

छोड़ि?"

बाजि तँ गेला मुदा लगले मन धिक्कारए लगलैन। पत्नी अज्ञानी रहि गेली, तइमे हमर कोनो दोख नहि? दिनमे डेरासँ बाहर रहै छी मुदा बाँकी समय..? अपने कएल लोककेँ काज अबै छइ। ..जेते अपना दिस देखैथ तेते ओझरी लगए लगलैन। एक कालखण्डक पढ़ल-लिखल कर्त्ता–परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिक–रहितो आइ धरि ऐ विषयकेँ बुझैक कोन बात जे मनोमे नै आएल! ..प्रो. गुलाबक मन कानए लगलैन। अपने रोपल गाछी भुताहि भऽ गेलैन। दलकैत मनमे उठलैन- गाछी तँ फूल-फलसँ लऽ कऽ बगुर धरिक होइए मुदा कहबैत तँ अछि सभ गाछिए। तहिना तँ जिनगियो अछि! ..भदबरिया अन्हार जकाँ इजोत केतौ देखबे ने करैथ। तैबीच पत्नी मोबाइल बढ़बैत कहलकैन-

"देखियौ ते, की भऽ गेलइ। बजबे ने करैए।"

पत्नीक बात सुनि पुन: प्रोफेसर गुलाबक मनमे आशा जगलैन। हाथमे मोबाइल लऽ बजला-

"टाबर चलि गेल, तँए नै आवाज अबैए। फेर टाबर औत तँ आवाजो औत।"

लालमनि टाबर बुझबे ने करैथ। बजली तँ किछु नहि, मुदा जहिना दोकानसँ कोनो वस्तु झोरामे अनैत काल, झोरा मसैक गेलासँ वस्तु गिरए लगैत, छिड़ियाए लगैत तहिना पतिपर भेल आक्रोश लालमनिक मनसँ ससरए लगलैन...।

एमहर, गुलाबबाबूक मनमे उठलैन, पाँचम दिन पोता–कल्पनाथक मूड़न छी। मूड़न की छी संस्कार छी। संस्कार तँ समाजमे भेटै छै, देल जाइ छइ। राँचीक समाज आ मिथिलाक समाज तँ एक नइ छी। तहूमे शहरक समाज तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि। पुन: मोबाइलमे रिंग भेल। रिंग होइते पत्नीकेँ कहलखिन-

"आबि गेल टाबर। लिअ।"

"पाँचम दिन कल्पनाथक मूड़न बैष्णो देवी स्थान कश्मीरमे रखने छी। अहाँ दुनू गोरे भोरुके गाड़ी पकैड़ चलि आउ। परसूका टिकट बनबा

देने छी।”

बेटाक फोन सुनि प्रोफेसर गुलाबक छाती छहोंछित्त भऽ गेलैन। मुँह मलिन हुअ लगलैन, दुनू आँखिसँ नोरसँ ढबकए लगलैन, देहक पानि उतरए लगलैन, मन्हुआएल स्वरमे पत्नीकेँ कँ कहलखिन-

“कनी मोबाइल लाउ।”

मोबाइल दइसँ पहिने लालमनि बेटाकेँ कहलखिन-

“बाउ, बाबूसँ गप्प करह।”

“बौआ।”

“हँ बाबू। अपने असिरवाद देबै...।”

पोताकेँ असिरवाद देबाक बात सुनि, गुलाबकेँ वकार नै फुटलैन। हुचकी सुनि लीलाधर पुछलकैन-

“बाबूजी, अपने कनइ किए..?”

खखसैत गुलाबबाबू बजला-

“मोबाइल छोड़ि असिरवादो केना दऽ सकब। तीन दिनसँ बाजारमे करफू लागल अछि। सिपाहीसँ सड़क भरल अछि। एहेन स्थितिमे घरसँ केना निकलब?”

“कौलेजोमे छुट्टी लऽ नेने छी। टिकटो कटा नेने छी तहन.. ?”

❑

शब्द संख्या: 1368

केना जीब

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन, सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल छला। दुनू बेकतीक मन खटाएल रहैन। दस बजेक करीब दिनेमे सुनने छला जे संगीक संगिनी चूल्हिक गैसक रिसावसँ झड़ैक अस्पतालक सीटपर चिकैर-चिकैर कानि रहल छैथ। सत्तैर बर्खक अवस्थामे संगी अपने दौग-धूप कऽ रहल छैथ! मुदा अस्पतालक डॉक्टर, नर्स आ कम्पाउण्डरो जी-जानसँ रोगीकेँ बँचबै पाछू लगल छथिन! तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नहि, आ दोसर पहुँचो नीके छैन। संगिनीक घटनाकेँ सरस्वती लगसँ तँ नइ देखने छेली मुदा समाचारक रूपमे सुनने छेली। सुनिते करेज तेना दहैल गेलैन जे साँसक गतिसँ छातीक धुकधुकी बढ़लैन ओ असथिरे ने भऽ रहल छेलैन। जेना नस-नसमे भयक भूत समा गेलैन। अन्हारक वाण जकाँ चारूकातसँ मृत्युक तीर बेधए लगलैन। जहिना वैरागी रागसँ डरैत आ जोगी भोगसँ तहिना मृत्युक भयसँ सरस्वती डरए लगली।

पाँच साए एम.एल.बला ह्विस्कीक बोतल प्रोफेसर शंकर कुमारकेँ बेअसर बुझि पड़लैन। मनक चिन्ता रूपी तीर ह्विस्कीक असरकेँ रस्तेमे रोकने छल। लग अबै ने दैन। कछ-मछ करैत शंकर पत्नीकेँ कहलखिन-

"एकबेर चाह...।"

सरस्वतीक मन 'चाह' पीऐसँ सुरक्षित चूल्हि नै जराएब बुझैन। अपन आज्ञाक उल्लंघन होइत देखि शंकरक मन महुराए लगलैन। जहिना भोज्य-पदार्थक बरतनमे गिरगिट खसि महुरबैत तहिना। बेअसर सरस्वतीकेँ देखि डेग भरि पाछू घुसैक शंकर मुस्की दैत दोहरा कऽ बजला-

"चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि, खाली अहाँ देखा-देखा देब।"

जिनगीक अन्तिम अवस्थामे पतिपर जीत देखि ढेंग सन देहकेँ उठा सरस्वती कीचेन दिस बढ़ली।

चाह बना शंकर कीचेनेमे पीबए लगला। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको ने होइन। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे अबै ने दैन। जहिना घी नइ अरघनिहारकेँ थारीमे देखिते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचार अबिते जी-मन पचपचाए लगैन। चाह पीब दुनू गोरे कोठरीमे आबि फेर सोफेपर पड़ि रहला। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्थ होइ छैथ तहिना दुनू गोरे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगला।

सरस्वतीक नजैर पाँच बर्खक अवस्थापर पहुँचलैन। की छेलए माए-बापक राज..!

खेनाइ, खेलनाइ, पढ़नाइक संग पाबैनमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ.., बस यएह छल जिनगी। मनमे सुख-दुखक जन्मो कहाँ भेल छल। सोहनगर वातावरणमे बिआह भेल। नैहरसँ सेवा करए नोकरनी आएल छल। सासुरो सम्पन्ने रहए। कथुक अभाव नहि। नोकरे पानियोँ भरै छल आ भानसो करै छल। अपनो प्रोफेसरे छला। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छला। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छला। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलैन। आब जे महगाइ शिक्षामे आबि गेल अछि तइसँ इमानदार कमेनिहारक धिया-पुता-ले शिक्षा असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहियेँ मुदा पिताक देल सम्पैतसँ एते जरूर केलैन। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलैन। मुदा अखन की देखै छी? ऐ अवस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतरब-चढ़ब पार लगत? ओहिना तँ हाथ-पएर बिनबिनाइत रहैए। देह भारी बुझि पड़ैए। तैपर परिवारक सभ काज! ऐ उमेरमे बुढ़-कनियाँ बनि जीब रहल छी। ..तरे-तर सरस्वतीक देहसँ पसेना चलए लगलैन। अनासुरती मुहसँ निकललैन- “ऐ जीवनसँ मरब नीक।”

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क टुटलैन। अखन धरि चेतनाहीन भेल शंकरो अपन पैछला जिनगी देखै छला। गामक स्कूल...। केते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा ‘सरस्वती

माताक जय' कहि आँगनसँ निकैल सरस्वतीक मन्दिरमे लऽ गेल छला। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नहि। डेरामे गाड़ल देवता तँ नइ अछि मुदा देवालमे टाँगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनौल मुरती तँ अछिए। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नहि, मुदा मह-मह करैत भकराड़ रूपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छिऐन। धुमन-सररक धूपक बदला गुगुल आ अगरबत्ती तँ चढ़ैबते छिऐन। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ेबे केलिऐन। पिताजी जेतेक हमरा पढ़ौलैन आ एक सीमा धरि पहुँचा देलैन, तहिना तँ हमहूँ केलिऐन। नोकरी भेलापर ताधैर पत्नी गाममे रहली जाधैर बाबू-माए जीबैत रहला। मरितोकाल धरि माए संगे खाइले कहैथ। संगे तँ नहि खाइ, मुदा एकठाम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ जहिये-सँ कनभेन्टमे नाओं लिखेलौं तहिये-सँ एके शहरमे रहनौं फुट-फुट रहए लगलौं! समैयक संग शिक्षो बदलल। ..एकाएक शंकरक नजैर आगू बढ़ि अपन जिनगीक अवस्थापर पड़लैन। चारिम अवस्था। जइ अवस्थामे सभ कथूसँ सम्पन्न भऽ अभावकेँ निर्मूल-नष्ट कऽ परिवारसँ ऊपर उठि समाजमे मिलि जाएब होइ छइ। हमर समाज केहेन? जइ समाजमे मनुक्खक संग-संग जीव-जन्तु, माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसरकेँ नीक-अधला, सुख-दुखमे संग दैत अछि। जैठाम एकठाम बैस सभ भोज-काजमे खेबो करैए, दसगरदा उत्सवो हँसी-खुशीसँ मनबैए, ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैए, जुड़शीतलमे इनार-पोखैर उड़ाहबो करैए, शिव-पार्वती बना बजाक संग गामो घुमैए...। बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिलि गेल जे अपन सभटा बिसैर गेल। आइ जँ हम अमेरिका जा रहए लागी तँ ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ केतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यु छोड़ि हमरा सभ-ले किछु शेष नै बँचल अछि! ..प्रोफेसर शंकर कुमारक निराश मनमे एलैन 'करनी देखिहह मरनी बेर।' जिनगीमे केतए चूक भेल? जँ चूक नइ भेल तँ ऐ अवस्थामे पहुँच केना गेल छी?

पत्नीक बात 'ऐ जीवनसँ मरब नीक' सुनि धड़फड़ा कऽ उठि प्रोफेसर शंकर कुमार बजला- "अखन सुतैबेर अछि जे सुति रहलौं?"

"सुतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।"

“तँ की भुखले रहब?”

शंकर कुमार बाजि तँ गेला मुदा मन पाछू घुमि कऽ तकलकैन। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी, तहूमे जे दस-बीस बर्ख जीबो करितौं से तेहेन रोग भेल जाइ छैन जे भुखले मरब। जँ खाएब नहि, तँ रातिमे नीन केना हएत? जँ नीन नइ हएत तँ जीब केतेक दिन?

पत्नी- “केता-दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?”

‘नोकर’ सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेला। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नहि। मनमे जोर मारलकैन जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहु–दुनू इंजीनियर–अनके नोकरी करैए आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करै छेलौं, बेसी तलब उठबै छेलौं तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छल जे पत्नी थेहगर छेली आ बेटो-पुतोहुक आशा छल। सरस्वती थोड़े बुझै छेली जे बुढ़ाड़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर केते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छैथ। तकलीफ हेतैन तँ बजबे करती। भलेँ हमरा बुते पुरौल हुअए वा नहि। पहिले जकाँ पाँच-रुपैआ-दस-रुपैआमे नोकर भेटत? तहूमे बाल-बोधकेँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी-के-देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जँ सियान राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत? तहूमे कि कोनो स्कूल-कौलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतइ। घरमे काज करत तँ खाइले नै देबै से हएत? तहूमे नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तेहेन समय आबि गेल जे कहीं सम्पैते ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए! ..जानपर नजैर पड़िते शंकरक आँखि ढबढबाए लगलैन। जाने नइ तँ जहान की? ..जहिना वीणाक तार टुटलापर आवाज खनखना कऽ निकलै छै तहिना टुटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार सरस्वतीकेँ कहलखिन- “अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै-जोकर अपनेसँ टभका लइ छी।”

मने-मन सरस्वती बजली- “केना जीब?”



शब्द संख्या: 1039

नवान

बाध दिससँ भोरे बड़का काका आबि नादिमे कुट्टी-सानी लगा, गाए बाहर कऽ केटली नेने कलपर पहुँचला। जइ कलपर आन समयमे–जाड़-बरसातमे–हेँक-हेँक भेल रहै छल ओ सोल्हन्नी रूख बुझि पड़लैन। समैयक गरमियोँमे अन्तर बुझि पड़लैन। जाड़क मासक दस बजे दिनक समय, पाँच बजे भोरेमे बुझि पड़लैन। सोहनगर समय बुझि वसन्तपर नजैर गेलैन। आमक मंजरक महमही फल रूपमे महमहा रहल अछि। मनमे उठलैन जे वसन्त ॠतु बर्खक पहिल ॠतु होइतो शरद-शिशिर सन ॠतु केना आगू अबैए..?

हाँइ-हाँइ कऽ केटली अखाइर लोटामे पानि नेने चूल्हि लग आबि बड़का काका चाह बनबए लगलैथ। केतलीमे चाहकेँ खौलैत देखि मनमे उठलैन- अहिना समुद्रोमे लहैरक ज्वार-भाँटा उठैए। एते गहींर समुद्र, जइमे करोड़ो-अरबो पानिक तह रहैए तइ ऊपरमे किएक एते जोरसँ लहैर उठै छइ? ..मन औनाइते रहैन कि चाहक गन्ध लगलैन। गिलासमे चीनी दऽ चाह छनलैन। केटली अखाइर कऽ रखि चाहक गिलास नेने दरबज्जाक चौकीपर बैस पीबए लगला। मन तेना औनाइत रहैन जे चाहो नीक-नहाँति नहियेँ पीअल होइन। तखने हहाएल-फुहाएल अबैत रविया कनी फरिक्केसँ टोकलकैन-

“गोड़ लगै छी काका।”

असिरवाद दैत बड़का काका बजला-

“कनीए पहिने अबितह तँ चाहो पीऐबतियह, आब तँ हूसि गेलह।”

“नइ काका, हुसलौं नहि, नीके भेल। एक चुटकी विष्णु भगवानकेँ चढ़ाइए कऽ मुँहमे पानि लेब।”

‘विष्णु भगवान’क नाओं दिस बड़का-कक्काक धियान नै गेलैन।

बजला-

"तूँ तँ अनेरे वौआइबला आदमी नै छह?"

"हँ काका, काजे एलौं हेन।"

"भोरे कोन काज बजैड़ गेलह?"

"नोत दइले एलौं।"

'नोत' सुनि बड़का काका तारतम करए लगला। अखन तँ, ने बिआह-मूड़नक दिन अछि आ ने केशे कटौल देखै छिऐ जे बरखियो-तरखीक करैत। मुदा रवि चौलो तँ कहियो नइ केलक जे आइ करत। सभ दिन शिष्ट बुझि श्रद्धाक नजैरसँ देखैए। मन पाड़लैन- जेठ मास परिव तिथि। आमो पाकब नहियेँ शुरू भेल अछि जे अमैयो भोज करैत। पनरह दिनक पछाइत अमैया भोज चलत। तहूमे नवको गाछी-कलम तँ केतौ नहियेँ नजैरपर अबैए। तीन दिन रोहैणोकेँ चढ़ैमे बाँकीए अछि। खिच्चा आम पाकि कऽ केहेन हएत। धिया-पुता ने चोकर-मोकर खाइए। भोज-काज ओइसँ केना हएत। भोज-काज-ले तँ नीक आम चाही। मन आगू बढ़लैन। तीमन-तरकारीक तँ भोज नै होइए। ओ तँ ओहिना पहिल फड़ महादेवो स्थानमे चढ़बैए आ हितो-अपेक्षितकेँ देल जाइत अछि।

ओना लोक कटहरोक भोज करैए, मुदा ओ तँ आमोसँ पाछू पकैए...। भऽ सकैए जे गाए बिआएल होइ। मुदा गाइक दूध तँ छाँकी देल जाइ छइ। ओना, कियो-कियो रकतमाला स्थानमे चढ़बैए। पाल खेलापर राजाजीकेँ गाँजा चढ़बैए आ बिएलापर कुशेश्वर स्थानमे घी चढ़बैए। हमरा किएक नोत देत? पुछबो केना करबै? दही-दूधक चर्च तँ खाधुर लोक करैए। ..हँ-निहँसक बीचमे पड़ल बड़का काका सोचलैन जे हमहीं सवाल पुछिऐ आ वएह ने किए जवाब देत जे अनेरे अपसियाँत होइ छी। मुस्की दैत बजला-

"आरो के सभ नोतहारी रहथुन?"

बड़का काक्काक प्रश्न समाप्तो नइ भेल छेलैन तइ बिच्चेमे रविया बाजल-

"अहींटा छिऐ काका। पहिल नवान छी, केते गोरेकेँ नोत देबैन।

कोनो कि उपनैन छी जे गिनती पुरबए पड़त।”

‘नवान’ सुनि बड़का काका आरो ओझरा गेला। केना ने ओझरैतैथ। किछु दिन पूर्व धरि तँ वएह सभसँ पहिने नवानक चर्च करै छेलखिन। जहियासँ बाढ़ि आबि-आबि अगहने उसाइर देलक तहियासँ बाजब छोड़ि देलखिन।

..अमती काँट जकाँ एकटा डारि छोड़बैथ तँ दोसर लगि जाइन। मिरचाइक घोँदा जकाँ ओझरी देखि बड़का-कक्काक मन असोथकित भऽ गेलैन। आँखि बन्न हुअ लगलैन।

बड़का-कक्काक बन्न होइत आँखि देखि रविया कहलकैन-

“काका, ओरियान-पाती करैक अछि। अखन जाइ छी।”

रविया विदा भऽ गेल, मुदा कक्काक आँखि बन्ने होइत गेलैन। मनमे उपकलैन, भने पतरो कीनब छोड़ि देलौं। एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक पतरा गाममे आबए लगल अछि। सेहो जँ भिन्न-भिन्न लेखक जकाँ एक्के ढंगसँ बुझौल जाइत तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सेहो नहि। सभ तरहक पतरा कीनि अपनेसँ निर्णय करैक ज्ञानो नहियेँ अछि। मनमे खुशी उपकलैन। जे पाबैन क्षण-पल गनि निर्धारित होइए ओ तीन-दिना हुअ लगल। एक-दिना पाबैन दू-दिना भऽ गेल आ दू-दिना तीन-दिना। तहूमे तेहेन-तेहेन अगिमुत्तू छुछुनैर सभ गामे-गाम फड़ि गेल अछि जे एक डारिए समाजकेँ थोड़े चलए देत। समाजो तेहने गँड़िखच्चर अछि जे अपन वर्चस्वक दुआरे उचित-अनुचितक, जाइज-नाजाइजक विचारे ने करत। कियो जातिक सिपाही, तँ कियो सम्प्रदायक सिपाही बनि मोछ टेढ़ करैत रहैए! केकर के सुनत? एहेन परिस्थितिमे चुप्पे रहब नीक।

..फेर मनमे उठलैन जे एते ओझरीमे ओझराइक कोन जरूरत अछि। जहन रविया नोत दइए गेल अछि तहन किएक ने स्नान कऽ ओकरे ओइठाम जा बुझि ली।

चारिम सालक बाढ़ि दुनू परानी-रवियाक जिनगीकेँ मोड़ि देलक। एहेन विकराल बाढ़ि जिनगीक पहिल छेलइ। पाँच बीघा जमीनबला रविया पुरान ढर्राक किसानी जिनगीकेँ बदलैत रहए। लगभग चारिअना बदैलियो

गेल छेलइ। उन्नत किस्मक तरकारी आ फल-फलहरीक खेती अपनाए नेने रहए। ओना, अन्नक खेतीमे कोनो सुधार नइ कऽ सकल रहए आ मालो-जाल तहिना रहइ। बाधक सभ जजात दहा गेलइ। गाछीक बड़का आम-जामुनक गाछ छोड़ि सभ सुखि गेलइ। अंगूर, अनारस, नेबो, लताम, धात्री, अनरनेवा इत्यादि सभ नष्ट भऽ गेलै, घरोक सभ समान नष्ट भऽ गेलइ। बाढ़िए दिनसँ दुनू परानीक मन टुटए लगलै। जेना-जेना पानि सटकैत जाइ तेना-तेना सुखल गाछ आ घरक सड़ल समान सभ देखि-देखि दुनू परानी-रविक मन टुटिते गेलइ। मुदा जिनगीक आशा दुनूकेँ अन्हारसँ इजोत दिस धकेल देलकै। नव उत्साहक संग दुनू परानी आँखि उठा आगू देखि डेग बढ़बए लगल।

सबेरे स्नान कऽ बड़का काका रविया ऐठाम पहुँचला। आँगन नीपि बुधनी नहाइले विदा भेली कि बड़का काकापर नजैर पड़लैन। हाँइ-हाँइ कऽ गोबराएल हाथ धोइ धड़फड़ाएले आँगन आबि ओसारपर कम्मर बिछा पतिकेँ कहली-

“काका एलखिन।”

दरबज्जापर आबि बड़का काका कनडेरिये आँखिए हिया-हिया कऽ आँगन, दरबज्जा आ बाड़ी दिस देखए लगला। आँखिपर सँ मनक बिसवास उठए लगलैन जे सत्ते देखै छी आकि फुइस। जइ जेठमे पियाससँ धरतीमे दरारि फटि जाइत अछि, हाथ-हाथ भरि जीह बाहर करैत माल-जाल अधसुक्खू भऽ जाइत अछि, ठेहुन भरि मोट गाछक निच्चाँ सुखाएल पातक पथार लगि जाइत अछि, तैठाम वसन्तक-बहार देखि रहल छी! मनमे ई सभ नचिते रहैन कि पानक खिल्ली सिक्कीक चँगेरीमे सेरिया कऽ ओसारक चक्कापर रखि रविया आगू आबि कहलकैन-

“अँगने चलू ने काका। अनठिया जकाँ डेढ़ियापर किएक ठाढ़ छी।”

रवियाकेँ मनमे अपन सेहवाल गाए आ दस कट्ठा गरमा धानक बोझ देखबैक इच्छा रहइ। मुदा कक्काक मनमे एलैन जे आँगन तँ औरतक होइ छै, पुरुखक नहि। पुरुख तँ केवल खाइकाल चाहे कोनो काजक काल आँगन जाइत अछि। मुदा बुधनियो तँ अँगनेक ओसारपर कम्मर बिछौने।

ओ एना उट-पटाँग किएक केलक? ओसारक एक भागमे दू कसतारा दही, दू-चँगेरा आम, एक चँगेरा चूड़ा, स्टीलक अढ़ियामे तरकारी इत्यादि सेहो आनि-आनि बुधनी रखली। सभ कथुकेँ देखेबाक इच्छा पेटमे रहैन। सभ गोरे अपन-अपन विचारमे मगन आ काजोमे जुटल।

..अगहन जकाँ लरती-चरती देखि बड़का-कक्काक मन असथिर होइत रहैन। अस्सियो बर्खक ओ औरत जिनका पति छैन अपनाकेँ केते सुन्दर बुझै छैथ, मुदा सोलह बर्खक विधवा अपनाकेँ की बुझै छैथ? जे जेठ गरमीक विराट मास छी से वसन्ती हवा केना बहा रहल अछि! सालक एक्को दिन ओहन अछि जइ दिन अनेक ऋृतु नै भ्रमण करैत हुअए! चुप-चाप आँखि नचबैत देखि बड़काकाकाकेँ रविया टोकलकैन-

“काका, जहिना पाँच अंग उठलासँ शरीरक वसन्त अबैए तहिना ने वसन्त-पंचमीसँ वसन्त ऋृतुक आगमन होइए। आगू-आगू चलू, सभ किछु देखा दइ छी।”

रवियाक बात सुनि बड़काकाकाकेँ खुशी भेलैन मुदा मनमे ‘नवान’ शब्द घुरियाइत रहैन। मन नचैत रहैन अगहनक नवानपर। बजला-

“पतरा देखब छोड़ि देलौं तँए सभ बात नजैरपर नै अबैए। कनी-मनी मन अछि जे नवान तँ अगहनमे होइ छइ, माने कातिकक इजोरिया पखसँ लऽ कऽ अदहा पूस धरिमे!”

कक्काक बातसँ रवियाक मनमे खुशी नइ भेल, बाजल-

“काका, नवान की?”

“नव अन्नक ग्रहण।”

“सएह छी काका।”

“चलह कनी देखा दएह।”

धान देखबैत रविया कहलकैन-

“चौरीमे एक बीघा खेत अछि। सत-सत-अठ-अठ बर्खपर हँसुआ खेत पहुँचै छल। सेहो दूध-महक डाढ़ीए होइ छल। गोटे साल आध-मन कट्ठा तँ गोटेबेर तीन-पसेरी कट्ठा धान होइ छेलए। तहूमे तेते चिलमिल,

कोढ़िला आ करमी लत्ती भऽ जाइ छल जे ऊपरका खेतीसँ दोबर खर्च होइ छेलए। उपजा देखि मन होइ छल जे बेचिए लेब नीक हएत। मुदा लेबालो नहि। के अनेरे पूजी दुइर करत। सबहक एक्के गति। गामक अदहा हिस्सा जमीन एहने अछि। बर्ख दसम मनमे उठल जे चौथाइ खेतमे डबरा खुनि माछ पोसब। नवका-नवका माछक थड़ सभ हेचरीमे बिकाइत अछि। ओकरे पोसब। सदिकाल रेडियौओसँ आ अखबारो-पत्रिका सभमे माछ पोसैक लाभ देखौल जाइ छइ। खूब लाभकारी अछि। सएह केलौं। दू कट्ठा ऊपरका खेत बेच चौरीमे डबरा खुनेलौं। हेचरीसँ थड़ आनि देलिऐ। ले बलैया! कोसी नहरमे पानि एलइ। फाटक खुजले छोड़ि देलकै। भरि मुँहखर पानि चौड़ीमे पसैर गेलइ। बीच बाधमे खेत अछि। डबराक महारोपर जाएब कठिन भऽ गेल! एक दिन नहाइ-बेरमे केरा थम्हक बेरही बना कऽ गेलौं तँ देखलिऐ जे सौंसे चौरी सलाढ़ लगल अछि। एक्कोटा थड़क दर्शन नइ भेल।"

"देखि कऽ बड़ दुख भेल हेतह?"

"एँह, की कहब काका! अपनेटा होइत तहन ने, सौंसे बाधे झलकैत रहइ।"

"तब तँ निचला खेतक संग दू कट्ठा ऊपरको चलि गेलह?"

"ओतबे गेल। साले-साल मलगुजारियो भरए पड़ैए। तेहेन पाहीपट्टीक पट्टी अछि जे अग्गह-सँ-बिग्गह भरए पड़ैए। गामक खेतक कोनो एक्के रंग मलगुजारी अछि। अन्हरा राज छइ। जइ खेतमे उपजा नै होइए ओकरे मलगुजारी बेसी अछि। हँ, तँ कहै छेलौं जे ओइ एक बीघा चौरी खेतमे डबरा भरा देलापर तेसराँ आ पौरुकाँ पच्चीस क्विन्टल आ सताइस क्विन्टल धान भेल। उपजबैक ढंगो नै छल। थोड़े-थोड़े आब सीखने जा रहल छी। ऐबेर दुनू सालसँ नीक धान अछि। अखन काटि-काटि अनिते छी। तैयार पछाइत करब। चलू, गाएकेँ देखियौ।"

सेहवाल गाए। ललौन-कारी। केतौ-केतौ चितकाबर। पतरकी नाँगैर। साढ़े चारि फुट खड़ाइ आ आठ फुट नमती। निच्चाँ-सँ-ऊपर धरि काका तजबीज केलैन मुदा नजैरपर चढ़बे ने करैन जे कोन किस्मक गाए

छी। थने कहै छै जे भरि बाल्टीन खुआउ आ भरि बाल्टीन दूहि कऽ लऽ जाउ। गाम दिस नजैर दौगेलैन। कहाँ केतौ ऐ कटिंगक गाए छइ! कियो-कियो जे अनबो केलैन ओ महींसक खाँढ़क जरसी छैन। सेहो तँ गनले-गूथल अछि। पहिलुका गाए सभ जे अछि ओकर खाँढ़े बिगैड़ गेलइ। तेहेन-तेहेन दानी सभ साँढ़ दान केलैन जे टाएरक बरदक वंश कोल्हुक रस्ता धेलक।

रविया-

"काका, की सभ देखै छिऐ?"

बड़का काका-

"हौ रवि, कोन चीज नै देखैबला छह। केतए-सँ अनलह?"

"चारिम साल जे बाढ़ि आएल से मालो-जालकेँ नष्ट कऽ देलक। खुट्टेपर बान्हल गाए-बरद मरि गेल। धिया-पुता मात्रिकमे रहए तँए बँचि गेल। बाढ़िक पछाइत सासु भेँट करैले समाद पठौलैन। हमर मन नै मानलक। पत्नीए-केँ कहलिऐ जाइले। एक तँ नैहर दोसर धियो-पुताकेँ देखना साल भरि भऽ गेल छेलइ। गेल। ओतै एकटा गाए आ खेती करैले बरदो आ मन तीनेक अन्न देलखिन। किछुए दिनक पछाइत गाए उठल...।"

मुस्की दैत पुन: बाजल-

"जहिना बाढ़ि एने मूस पतरा गेल तहिना अनेरुआ साँढ़ो सभ। मन भेल जे साँढ़ लग लऽ जाइऐ। मुदा मनमे उठल, अनेर खाइत-खाइत तँ बुधियारो लोक सनैक जाइत अछि, साँढ़-पारा तँ जानिए कऽ पशु छी। साँढ़ लग नै लऽ जा डॉक्टरकेँ बजा अनलयैन। वएह पाल देलखिन तेकरे बच्चा छी। गाए तेहेन दुधगैर जे अपन जीह दागि बच्चाकेँ पोसलौं। वएह गाए छी। पाँचम दिन बिआएल हेन।"

पाँचम दिन सुनिते बड़का-कक्काक मन फेर ओझरा गेलैन। मनमे नाचए लगलैन जे गाए तँ नअ दिनपर शुद्ध होइए। अशुद्ध दूधक दही खुऔत आकि केकरोसँ दूध आनि पौड़ने अछि। मुदा पुछबो केना करबै! ओहन खाधुर थोड़े छी जे खाइसँ पहिने पते लगा लेब। ..शुद्ध-अशुद्धक

विचार बड़का-कक्काक मनमे संघर्ष करए लगलैन। एक दिस देखै छैथ जइ गाइक दूध, गोंत, गोबर सभ शुद्ध होइए, एते तक जे दूधक लाटमे छुतहर घैलो शुद्ध भऽ जाइत अछि, दूध तँ अमृतोसँ पैघ होइए। दोसर दिस देखै छैथ जे सभ अशुद्ध गाइक दूधसँ परहेजो करैए। ओना देस-देसक आ कोस-कोसक चलैन सेहो एक-दोसराक विपरीतो चलैए...।

विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ देखि बड़का काका निर्णय केलैन जे पुछनहि शुद्ध-अशुद्ध। जँ बुझले नइ रहत तहन शुद्ध-अशुद्ध की। मनमे खुशी एलैन, बजला-

"दूध केते होइ छह?"

दूधक नाओं सुनि रवियाक मन, फूलक पहिल सुगन्ध जकाँ महैँक उठल। बाजल-

"काका, की कहू! दुहैत-दुहैत आँगुर भरा जाइए। बेराबेरी दुनू बेकती दुहै छी। ओना, अखन पाँचे दिन भेल अछि। तहूमे दू दिन अदहे-छिदहे दूहलौं। पहिलौठ रहने थनमे गुदगुदीक चलते हरपटाए लगए। मुदा परसूसँ दूधो फाटब बन्न भऽ गेल अछि आ गाइयो असथिर भऽ गेल।"

"दूध बेचबो करै छह?"

"अखन तक तँ नै बेचलौं हेन मुदा एते दूध दुइए गोरे बुते केना सठत।"

कहि रवि आगू बढ़ल। आमक कलम। चारूकातक हत्तापर लताम, दारीम, नेबो, शरीफा रोपल। गाछक बीचमे अनारस, हरदी-आदी सेहो रोपल देखि खुशीसँ गदगद होइत बड़का काका बजला-

"रबी, तेहेन वृन्दावन सजौने छह जे एत्तए-सँ जाइक मने नै होइए।"

कक्काक खुशी देखि रविया हँसैत कहलकैन-

"काका, बाढ़िक नोकसानसँ मन टुटि गेल। आगू नाथ ने पाछू पगहा देखि मनमे आबि गेल जे सभ खेत-पथार बेच गामसँ चलि जाइ। मुदा फेर मनमे आएल जे गामसँ केतए जाएब। गाम-घर बाढ़िमे दहाइत अछि,

रौदीमे जरैत अछि। मुदा शहरो-बाजारक दशा तँ सएह देखै छी। दिन-दहारे डकैती, हत्या, अपहरण, सदिकाल होइते रहै छइ। तेतबे नहि, केतौ भाषाक तँ केतौ सम्प्रदायक जहर वायुमण्डलकेँ दुषित केने अछि।"

रवियाक बात सुनि मुड़ी डोलबैत काका बजला-

"हँ, ई तँ लाख रुपैआक बात कहलह। हम तँ बुढ़ा गेलौं। दू-चारि सालक मेहमान छी। भने भगवान आँखिक इजोत लए लेलैन। ने किछु देखब आ ने दुख हएत। छोड़ह दुनियाँ-दारीकेँ अपन कहअ।"

बड़का-कक्काक जिज्ञासा देखि रविया बाजल-

"काका, घर-सँ-बाहर धरि एक्के रंग बुझि पड़ल। की करी की नै करी, से मनमे एबे नै करए। बड़ी-कालक पछाइत मोन पड़ल अपन देश आ पूर्वज। जहिये-सँ मनुक्ख ऐ धरतीपर अछि तहिये-सँ ने हमर-अहाँक वंश सेहो छैथ। जँ से नइ रहितैथ तँ अखन केना रहितौं। तहिना तँ अपन देशो (मिथिला) अछि। अदौए-सँ मिथिलाक चर्च वेद-पुराणमे अछि। तैबीच लाखो भुमकम, अन्हड़-बिहाड़ि, पानि-पाथर आ बाढ़ि आएल होएत। केना अपन पूर्वज सहलैन? की अपनो सभमे ओइ वंशक खून नै अछि? मनमे उत्साह जगल।"

बड़का काका-

"वाह! अच्छा, ऐ बगीचाक विषयमे कहअ?"

रविया-

"काका, तेसर साल मद्रासी वेपारी ट्रकपर फल-फलहरीक गाछ बेचैले आएल। हमहूँ पनहरटा गाछ कीनि कऽ रोपलौं। वएह छी। पौंरकों-तेसरों मोजरल रहै मुदा मोजर तोड़ि देलिऐ। एकटा-दूटा आम फड़ैत मुदा गाछक सेखीए चलि जाइत। बढ़नमो खूब अछि। तीने सालक गाछ छै, साए-सवा-साए कऽ फड़ल अछि। अपने ऐठामक गुलाबखास जकाँ अछि मुदा पकैए ओइसँ पहिने। यएह आम खुआएब। आब आगू चलू तरकारीक खेत दिस।"

खेतक आड़िपर अबिते कक्काक नजैर चोन्हरा गेलैन। तरहत्थीसँ आँखि पोछि देखलैन तँ मनमे शंका उठलैन। जइ जेठमे धार-पोखैर-इनार

सुखि जाइत अछि, बाध-वोनमे लू चलैत रहैए, खेतसँ धधड़ा जकाँ ताव उठैत रहैए ओइ खेतकेँ हरिअर वस्त्र पहिरा गहना-जेवरसँ सजा नायिका जकाँ मलड़बैत अछि, ई नान्हिटा काज नइ छी। मुदा काजो ओहन अछि जे सोझे स्वर्ग बनबैए। जिज्ञासा भरल नजैरसँ काका पुछलखिन-

“रबी, की सभ लगौने छह?”

रवि बाजल-

“केते कहब काका, एकबेर घुमिए कऽ देखि लियौ। सुरुजो बारहसँ निच्चाँ उतरैपर छैथ। चलू भोजन कऽ लिअ।”

“मन भरि गेल, रवि। खाइक छुधा मेटा गेल। होइए जे जहिना कृष्ण वृन्दावनमे रहैथ तहिना हमहूँ एतै रहि जाइ।”

❑ शब्द संख्या: 2306

तिलासंक्रान्तिक लाइ

धानक लरती-चरती पतराइते गमैया विद्यालयमे तिलासंक्रान्तिक पढ़ाइ शुरू भऽ गेल। विद्यालय-ले ने जगहक कमी आ ने पढ़ौनिहारक। इनार-पोखैरक घाट सन पवित्र स्थान आ बिनु आरक्षणवाली अनेको महिला शिक्षिका। शिक्षिको सभ इमानदार। ने ट्यूशन फीस लैत आ ने दरमाहा। पढ़बैले एते उताहुल जे खेनाइयो-पिनाइक चिन्ता नहि। छोट दिन होइतो भानस-भातक कौड़ियो भरि ढेकार नहि। पाबैनक विषयो नमहर तँए पूरा विषयक शिक्षक तँ नहि, मुदा टुकड़ी-टुकड़ी कऽ अपना-अपना ढंगसँ अपन-अपन हिस्साक विषय पढ़बए लगली।

पाँच दिन पहिनहि केदार कलकत्तासँ गाम एला। ओना ओ दुर्गोपूजामे सभ साल एबे करै छैथ, तिलोसंक्रान्ति सेहो नहियेँ छोड़ै छैथ। केना छोड़ता? आब कि कलकत्ता ओ कलकत्ता रहल जे तीन-तीन दिन गाड़ीमे बैसल-बैसल देह-हाथ अकैड़ जाएत। आब तँ छह घन्टाक रस्ता अछि। तहूमे केदार अपने गाड़ियो रखने छैथ, चाह-नाश्ता कलकत्ताक डेरामे करै छैथ आ कलौ गाममे। हुनके सबहक तँ ई दुनियाँ आ देश छिऐन। एक तँ बैंकक मैनेजरक दरमाहा, दोसर कुरसीक कमीशन आ तैपर सँ अपनो बैंकक शाखा खोलने छैथ। कमीशने वेतन तँए स्टाफोक कमी नहियेँ छैन। शहरो कलकत्ता सन, जैठाम भीखमंगो करोड़पति अछि।

“गाममे जँ कियो मरद छैथ तँ केदारे छैथ। आँखि उठा कऽ हुनका दिस के तकतैन। तिलासंक्रान्तिमे अखनो सतरहटा अँचार आ बीकानेरी पापड़ केदार छोड़ि के खाइत अछि? विधि पूर्वक जँ पाबैन करैए तँ केदार छोड़ि दोसर के?”–पोखैरक घाटपर दतमैन करैत जगदरवाली कछुबीवालीकेँ कहलखिन।

साड़ी-साया रखि कछुबीवाली घाटपर बैस झुटकासँ पएर माजै छेली। मन चिन्तामे बझल छेलैन। काल्हिए पाबैन छी। ने चूड़ा कुटलौं हेन

आ ने मुरही भुजलौं! जाबे चूड़ा-मुरही नै हएत ताबे लाइ कथीक बनाएब। गलती अपनो भेल जे अगते-ओरियान नै केलौं...।

चिन्तित कछुबीवालीक मनमे फेर उठलैन- एक दिनक पाबैन-ले मास दिन पहिनेसँ ओरियान करए लागब, से एतबे काज अछि? काजक दुआरे एक्को दिन ने समैपर नहाइ छी आ ने खाइ छी। जेकरा काज नै छै ओ सालो भरि पाबैने करए। कोनो की हम जनै छेलिऐ जे पनरह दिन पहिनेसँ शीतलहरी लादि देतइ, जे चूड़ा-मुरहीक तारल धान भारलो ने जाएत? जइ देवताकेँ पाबैन करबैन हुनका एतबो बुत्ता नै छैन जे अपनो पाबैनक ओरियानक चिन्ता करतैथ।

..फेर मनमे एलैन जे चूड़ा-मुरही तँ दोकानो-दौरीमे बिकाइत अछि। कीनि लेब। मुदा लाइ केना हएत, चूड़ा-मुरही तँ अखड़ा होइए! अमैनियाक जरूरत नै अछि। मुदा लाइ। केहन-कहाँ हाथे, केहेन-कहाँ बरतनमे बनौने हएत? तहूमे आइ-काल्हिक बनियाँ सभ तेहेन गैखोर भऽ गेल अछि जे गुड़क बदला छुए-मे बना पाइ टलिया लैत अछि। दिनेमे मुरही-चूड़ा लऽ आनब आ रातिमे खेला-पीला पछाइत बना लेब...।

कछुबीवालीक मन असथिर होइते रहैन कि जगदरवालीक बात मोन पड़लैन। क्रोध फेर आपसी रस्तासँ घुमि गेलैन। तुरुछ भऽ उत्तर देलखिन-

“सतरह रंगक आकि पचासे रंगक अँचार जे केदरबा खाएत तइमे कछुबीवालीक जीहोक पानि मेटेतै?”

श्यामाकाकी चुपचाप नहा कऽ घर दिसक रस्ता धेली। अपना धुनिमे श्यामाकाकी। ने समाजसँ कोनो मतलब आ ने समाजक काजसँ। समाजक काजे बेढंग अछि। केकरो कोनो ठेकान छै जे की बाजत आ की करत! कोनो ठेकान नै छइ। एक्के मुँह जेते लोकसँ गप करत, एक्के गपकेँ तेते रंगसँ बाजत। लगले किछु लगले किछु। तहूमे आब तेहेन-तेहेन अगिमुत्तू सभ भेल हेन जे जुड़शीतलक मुइल नढ़ियाकेँ जहिना कुत्ता सभ अपना-अपना दिस दाँतसँ पकैड़-पकैड़ घिचैत रहैए, तहिना भऽ गेल अछि। नइ तँ केतौ एना हुअए जे एक्के गाममे एक्के पाबैन दू-दिना, तीन-

दिना दुनू होइ! तखन तँ जेकरा जे मन फुरै छै से, से करैए। सभ करत अपना मने आ हम करब लोकक मने। अपन जिनगी अछि अपन दुख-सुख अछि। अपनासँ पलखैत हएत तँ दोसरो बच्चा दिस देखब। नइ तँ अपन के सम्हारि देत..?

यएह विचार सभ श्यामाकाकीक मनमे नचैत रहैन। चूड़ो-मुरहीक लाइ भइये गेल। तिलबो बनाइए लेलौं। कुरथियो-तेबखाक दालि अछिए। लोको सभ जीहक चसकी दुआरे कियो खेरही तँ कियो राहैड़ तँ कियो बदामक दालिक खिचड़ी बनबैए। ..एते बात मनमे उठिते काकीक विचार रूकि गेलैन। कुरथीक तुलना राहैड़ आ खेरहीसँ करए लगली। पूसक संक्रान्तिक दिन पाबैन होइए आ राहैड़ चैत-बैशाखमे होइए, जखन कि बदाम फागुन आ खेरही जेठ-अखाढ़मे होइए, तइ हिसाबे कुरथीए ने नवकी कनियाँ बनि घर एली। ..ई बात मनमे अबिते काकीक मन आगू बढ़लैन। हमरा सन दही केकर हेतइ? कियो लोहा महींसक दूध पौड़ने हएत तँ कियो पोखैर-इनारक पानिक...।

मुहसँ हँसी निकललैन। जेहने लोक सभ ठक भऽ गेल अछि तेहने देवियो-देवता सभ। अनदिना कियो दूधमे पानि फेँटि कऽ बेचैए तँ बेचैए, पाबैनमे जे हुनको सभकेँ खुअबै छैन से ओ अपने नइ बुझै छैथ। किएक ने हरहरी बज्जर खसा दइ छथिन। एते दिन हुनको सभकेँ शक्ति छेलैन आब ओहो सभ डलडाक मधुर खा-खा पेट बिगाड़ि लेलैन अछि। ..फेर मन अपना दिस घुमलैन। खिचड़ीमे जमीरी नेबो नीक आकि घी? मुदा ऐ प्रश्नपर मन नै अँटकलैन। मन कहलकैन खाइबेर-मे बुझल जाएत। फेर मनमे खुशी एलैन। मुस्की दैत आँखि उठा कऽ तकली तँ दिनकरपर नजैर पड़लैन। मने-मन प्रणाम कऽ बजली-

“एहनो जाड़मे अहाँ चास-वासकेँ भरि देने छिऐ। अपना-ले कोठी माल-जाल-ले टाल, खेतक-खेत तरकारी, बाधक-बाध गहुम, दलिहन-तेलहनसँ सजल खेत। हे दिनकर! बहुत जाड़ सहि जीब रहल छी, कल्लह फेरू।”

आँखि निच्चाँ होइते श्यामा काकीक मनमे एलैन। आइए ने सीमापर माने मकर रेखापर दिनकर जेता। काल्हिसँ तँ तिले-तिल बढ़बे करता।

पाबैनक छुट्टीमे ज्योतिषी-काका गाम कि एला जे काकीकेँ आफद भऽ गेलखिन। ओना, साल भरिसँ काकियोक मन बदैल रहल छैन। काकी जेते बुधियार भेल जाइ छैथ तेते काकासँ मन-भेद भेल जाइ छैन।

ज्योतिषी-काकाकेँ काकीक ओइ किरदानीसँ हृदयमे चोट लगलैन। जइ दिन काकी हुनकर कमाएल रुपैआ चोरा कऽ बुधिक सर्टिफिकेट कीनि लेलखिन, ओही दिनसँ काकीक आफद काका आ कक्काक आफद काकी भऽ गेलखिन।

विद्यालयसँ अबैतकाल बाटेमे कक्काक नजैर पाबैनपर गेलैन। कनीकाल गुम्म भऽ उत्तर-दच्छिनक सीमापर आँखि रोपलैन। आँखि रोपिते हृदयमे हँसी उठलैन- जे लोक दक्षिणायणमे मरैत अछि तँ नर्क जाइत अछि आ उत्तरायणमे मुइलापर स्वर्ग। स्वर्ग तँ मनुक्ख निर्मित छी जखन कि मकर संक्रान्ति ग्रह-नक्षत्रक प्रक्रिया छी। दुनू एकठाम केना भऽ गेल? बाटेसँ ई ज्योतिषी-कक्काक मनकेँ हौंड़ने रहैन। आँगनमे पएर रखिते काकी टोकि देलखिन-

“तलब भेटल की नहि? अखन धरि कोनो ओरियान नइ भेल अछि।”

काकीक बात सुनि कक्काक मन लहैर गेलैन। आँखि गुड़ैर काकीकेँ देखि ओसारक चौकीपर झोरा रखि हाथ-पएर धोइले कल दिस बढ़ला। मनमे उठलैन- सभ काजक बेर फँड़बन्ही करती आ टाका बेरमे हम मोन पड़ै छिऐन!

काका अप्पन धुनिमे आ काकी पाबैनक धुनिमे। तिलासंक्रान्ति सन पाबैन दंगलक अखाड़ापर उतरैबला अछि, ओइले अखन धरि हाथ-पर-हाथ जोड़ि बैसल छी...।

मुदा पहिलुके नजैर काकीकेँ डोला देलकैन। करेज काँपि उठलैन। मन निर्णय कऽ लेलकैन जे परिवारक गारजन पुरुख होइ छैथ, मान-अपमान पुरुखक कपारपर चढ़त। हम तँ अनेरे तबाह छी। जे आनि कऽ देता ओ बना कऽ आगूमे धऽ देबैन।

कलपर पानि पीब, आँगन आबि ज्योतिषी-काका चौकीपर बैस

तमाकुल चुनबए लगला। अपन भलाइ सोचि काकी बाड़ी दिस टहैल गेली। मुँहमे तमाकुल लैत काका आँखि घुमा कऽ पत्नी दिस ताकए लगला। मन खुट-खुट करैत रहैन जे फेर ने केम्हरोसँ आबि किछु फरमा दइथ। मुदा सोझमे नइ देखि मन असथिर भेलैन। मनमे उठलैन, काल्हि मकर संक्रान्ति छी। जैठामसँ सुरूज दच्छिन-मुहेँ नै बढ़ि उत्तर-मुहेँ घुमता। उत्तरायण होइते सुर्ज जीव-जन्तुमे अपन प्रकाशसँ नव स्फूर्ति पैदा करैए। मौसमक बदलाव हुअ लगैए। ऐसँ परिवर्त्तनक रूप देखि पड़ैए मुदा लोकमे परिवर्त्तन की औत? जे दछिनपंथी विचार बेवहारिक रूपमे पर्वत सदृश अपन रूप बनौने अछि से चूड़ा-लाइ खेने भेट जाएत?

संक्रान्तिक पहिल संध्या अबैत-अबैत भोरमे नहेबाक कार्यक्रम तैयार भऽ गेल। ऐ प्रश्नपर विद्यालयक सभ शिक्षिका एकमत भऽ गेली। मुदा कार्यक्रममे एकटा फनिगा आबि गेल। फनिगाक गन्धसँ वातावरणमे गन्ध पसैर गेल। गन्ध ई जे पोखैरक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी चुड़लाइक छिट्टा रखने छथिन! जे पहिने नहाइले जाएत ओकरा देथिन।

टेल्हुक धिया-पुतासँ लऽ कऽ ढेरबा धरि अपन दावा ठोकए लगल जे पहिने हम नहाएब आ कमलेसरी महरानीक चुड़-लाइक छिट्टा आनब। अपन-अपन शक्तिकेँ जगबैत संकल्पित सभ हुअ लगल।

जारैन तोड़ि कऽ अबैकाल अझप्पे पोखैरक घाटक तरमे कमलेसरीक चुड़लाइक छिट्टा-दे गोपला सुनलक। मुदा किछु दोहरा कऽ नइ बुझए चाहलक। माथपर ठहुरीक बोझ रहइ। मुदा भार मनसँ हटि चूड़ा-लाइक छिट्टापर पड़लै। बड़का छिट्टा, जेहेन भत-भोजमे भात झँकैले होइ छइ। भरिए दिन ने पाबैन छइ। केते खाएब। मनमे खुशीक अँकुरा उगलै। ..घरपर आबि गोपला जारैनक बोझ रखि मने-मन संकल्प केलक जे सभसँ पहिने हम घाटपर जाएब। गहींर गोपला, विचारकेँ गोपनीय रखलक। माइयो-बापकेँ नै कहलक।

बारह बजे रातिमे नीन टुटिते गोपला माए-बापकेँ बिनु किछु कहनहि पोखैर दिस विदा भेल। माए बुझलैन जे लघी-तघी करए निकलल। बुधू नीनभेर, तँए बुझबे ने केलैन। जहिना प्रेमीकेँ अपन प्रिय छोड़ि दुनियाँमे किछु नै देखि पड़ैत, तहिना लाइक छिट्टा छोड़ि गोपला

किछु नै देखैत। दुलकी मारैत पोखैर दिस बढ़बो करै आ आँखि-कान उठा-उठा आगुओ ताकै जे कियो दोसर ने तँ बढ़ि गेल। ने कानसँ कोनो भनक बुझि पड़ै आ ने अन्हारमे किछु देखए, बढ़ैत गेल।

किछु-काल देखि माए बान्हपर आबि तकलक तँ गोपलाकेँ नै देखलक। मनमे टराटक लगए लगलै, जे एते अन्हारमे गोपला केतए चलि गेल। भरिसक भकुआएलमे केम्हरो चलि ने तँ गेल। मुदा अन्हारमे देखबे केते दूर करब। ओह! से नहि, तँ हुनको उठा दुनू गोरे चोरबत्तीक हाथे ताकी। सएह कैलक।

पनरह-बीस दिनसँ शीतलहरी चलैत। लागल-लागल पछबो संग दइत। घूरक आगियो मलिमुँह भेल। गोपलाकेँ ने रस्ता अन्हार बुझि पड़ै आ ने पोखरिये दूर, ने जाड़ बुझि पड़ै आ ने पोखैरमे पानि। साक्षात् ब्रह्ममे लीन भक्त जकाँ गोपलो लाइमे लीन भऽ गेल। पोखैर पहुँच घाटक तरमे गोपला हँथोरिया दिअ लगल। जाधैर लाइक आशा मनमे रहै ताधैर खूब हँथोरलक। होंथरैत-होंथरैत देह बर्फ जकाँ जमि गेलइ। जाड़ बुझि पड़ए लगलै। सौंसे देह थरथर काँपए लगलै। गोपलाक मन मानि गेलै जे मरि जाएब। पोखैरसँ ऊपर भऽ घर दिसक रस्ता धेलक। ताधैर चोरबत्तीक हाथे आगू-आगू माए आ दू लग्गा पाछू पिता पेना नेने अबै छेलखिन। फरिक्केसँ माए थर-थर कँपैत गोपलाकेँ पुछलक- “गोपाल!”

‘गोपाल’ सुनि बुधबाकेँ खौंझ उठलै। बाजल-

“मिरगी उठल छेलौ जे पोखैर आएल छेलँह!”

थरथराइत गोपलाकेँ माए अपन आँचरसँ देह पोछए लगली। बेटाक दशा देखि पिताक मन पघिलए लगलैन। जहिना गंगा स्नानक पछाइत नीक विचार मनमे उपकैए तहिना बुधूक मनमे उपकलै। सोचए लगल, आइ जँ मरि जाइत तँ दिनमे केकरा तिल-चाउर दितिऐ, के तिल बोहैत! दछिनबारि टोलमे सबहक बेटा-पुतोहु बाप-माएकेँ छोड़ि परदेश चलि गेल अछि। बुढ़िया सभ नवकी कनियाँ जकाँ अपनेसँ तिलकोर तड़ै जाइ छैथ। तिलकोरक तरुआ केहेन होइ छै ई तँ बुढ़िए कनियाँ सभ बुझै छथिन...।

जिबठ बान्हि बुधबा गोपलाकेँ पजिया कऽ पकैड़ कोरामे लऽ

डेगगरसँ आँगन दिस बढ़ए लगल। आँगन आबि पुआर धधकौलक।

जहिना गोपलाक देह भीजल तहिना देहमे सटल गंजियो-पेन्ट। मुदा कपड़ा बदलैक साहस नइ भेलइ। देह कठुआएल, हाथ बिधुआएल, ओंगरी ठिठुरल! मुदा कनीए-कालक पछाइत गोपला टनकल। दुनू परानी बुधबो जाड़सँ ठिठुरले छल। तीनू टनगर भेल। टनगर होइते गोपला माएकेँ कहलक- "आँगी-पेंट आनि दे।"

गोपला पेंट-शर्ट पहिरए लगल। तीनूक सिरसिराएल देह आगिक गरमी पाबि वसन्ती हवामे टहलए लगल। बुधबा पत्नी दिस देखि हाथ पकड़ैत, पहुँचल फकीर जकाँ बाजल- "आइ, गोपला हाथसँ चलि जाइत! सबहक आँगनमे पाबैनक उत्साह रहितै आ अपना दुनू गोरे बेटाक सोगमे कनैत दिन बितैबतौं!"

पतिक बात सुनि आशा चौंकल। जेना भुमकमक धक्का धरतीकेँ लगैत तहिना आशाक हृदयमे धक्का लगलै। धड़फड़ा कऽ उठि कोठीपर रखल मुजेलासँ दूटा गोल-गोल लाइ लेने गोपलाक हाथमे देलक। हाथमे चूड़ाक लाइ अबिते गोपला हबक मारलक। मुदा तेहेन सक्कत जे ठोर चँछा गेलै, मगर दाँतसँ लाइ नै कटलै। माएकेँ कहलक- "लाइ कहाँ टुटैए।"

बेटाक बात सुनि आशाक मनमे खुशी उपकल। अपन कारीगरीकेँ परीक्षामे पास होइत देखि मुस्की दैत पतिक आँखिमे आँखि मिला बाजल-

"तेहेन पाकमे लाइ बनौने छी जे बिना सिलौट-लोढ़ीसँ सुनत!"

बेटा दिस होइत बुधू बाजल- "आइ तँ केतौ नाचो-ताँच ने होइ छै तखन किए तूँ रातिमे एते दूर चलि गेलेँ?"

बिच्चेमे आशा बजली- "लघी-तघी करैले उठल हएत, भकुआएलमे वौआ गेल।"

हाँइ-हाँइ गोपला मुँहक लाइकेँ चिबा कऽ घोंटि माए दिस तकैत बाजल- "लोक सभ साँझमे बजै छेलै जे पोखैरक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी लाइ रखने छथिन। उहए अनैले गेल रहौं।"

गोपलाक बात सुनि बुधूक मन महुरा गेलइ। मनमे उठलै- जे अपना कमेने नै हएत ओ भोला बाबा बरदक...। मुदा क्रोधकेँ ऐ दुआरे मनमे दबने

रहल जे गामक लीला सभ आँखिक सोझमे नाचए लगलै। जे सभ जुआनीमे, मद-मस्त भोम्हरा जकाँ जिनगी बितौलैन, बेटा-पुतोहुक अछैत मुहसँ धुँआएल चूल्हि फूकए पड़ै छैन, जइसँ दुनू आँखिमे नोर टघरैत रहै छैन। मुदा ओ सभ तेकरा हृदयक बेथा नहि, धुँआ लागब बुझै छैथ। ..बुधूक हृदय पसीज गेल। मन कहलकै- मुरखो अछि तैयो तँ बेटे छी। बरखे ने चौदहटा भऽ गेलै मुदा भरि दिन तँ असकरे लग्गी लऽ कऽ वोनाएल रहैए। ने खाइक ठेकान रहै छै आ ने नहाइक। तखन बुधिसँ भेँट केना हेतइ..?

बेटाक बात सुनि माइक मन उमैड़ गेलैन। बुझबैत बजली- “रौ बौआ! अपना की कोनो चीजक कमी अछि। जेते रंगक धान गिरहतकेँ होइ छै तेते अपनो ने होइए। सतरियाक चूड़ो कुटने छी, लाइयो बनौने छी आ सतरिये चाउरक खिचड़ियो रान्हब।”

पछुआरक रस्तापर गल्ल-गुल्ल सुनि आशा घरसँ निकैल डेढ़ियापर पहुँचली कि महरैलवालीक बाजब सुनलैन। डेढ़िएपर ठाढ़ भऽ आरो कान ठाढ़ केली। महरैलवाली हर्ड़ीवालीकेँ कहलखिन-

“हम तँ आध पहर रातिए नहेलौं। अखन धरि अहाँ पछुआएले छी।”

हर्ड़ीवाली- “अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसियौने छेलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब।”

दुनू गोरेक गपकेँ दबैत तमोरियावाली जोर-जोरसँ पुतोहुकेँ कहैत रहथिन- “तीन दिनसँ बोखार छेलह तखन एहेन समयमे भोरे किए नहेलह?”

मुदा पुतोहु उत्तर नै देलकैन। आशाकेँ मोन पड़लैन जाड़सँ कँपैत गोपला।



शब्द संख्या: 2056

भाइक सिनेह

बारहसँ बेसी राति ढहि चुकल मुदा एक नै बजल छल। अगहन मासक अन्हरियाक चतुर्दशी। एक तँ डम्हाएल अन्हार तैपर झक्सी जकाँ ओस खसैत। आँखिक रोशनी एते दुबरा गेल जे अपनो देह भरि नै देखि पबै छेलौं। जाड़क राति, तँए लोक सबेरे सीरक सेरिया कऽ ओछाइन पकैड़ लइ छल। पहिल नीन पूरि कऽ टुटिते शिष्टदेवक मन छोट भाएपर पहुँचलैन। सभ तरहेँ श्रेष्ठ रहितो आँखिक सोझहेमे परिवार टुटि गेल। जिनगी तँ ओहन जाल नहि, जइमे ओझराएब अनिवार्य अछि। विधाता तँ सभ किछु दऽ मनुक्खकेँ पठबै छथिन तहन किए लोक मकड़ा जकाँ अपने करनीसँ ओझरा जाइत अछि! आ विवेकमे केना भूर भऽ जाइ छै जे हंस नइ बनि कऽ कार-कौआ बनि जाइत अछि! खाएर.., परिवार भलेँ फुट भऽ गेल हुअए मुदा विचारनाथ तँ छोटे भाए छी, आ अपने पितातुल्य छिऐ। ई कियो बुझए वा नइ बुझए मुदा अपने तँ जरूर बुझै छी। अखन धरि जेते दुनियाँ आ उगैत सुरूजक दर्शन हमरा भेल अछि ओतेक तँ विचारनाथकेँ नहियेँ भेलैहेँ। परिवार टुटैक दोख केकरा लगतै? पितातुल्य तँ परिवारमे अपने छिऐ। मनुक्खक जिनगीक गाड़ी समैयक संग चलैत आएल अछि आ आगुओ चलिते रहत...।

सोचैत-विचारैत शिष्टदेवक हृदय बर्फ जकाँ पघिल-पघिल पानि हुअ लगलैन। पिपनीमे अँटकल नोरक बून सरस्वती नदीक धार जकाँ पहाड़पर सँ समतल भूमिमे बहए लगलैन। नोरक संग भाइक सिनेह सेहो उमड़ए लगलैन। जिनगीक सभ बाटमे विचारनाथ पाछू अछि तँए ओकर बाँहि पकैड़ आगू खिंचब। अपना पाँच समांग कमेनिहारक परिवार अछि। ओ दुइए परानी अछि। घरक कोनो वस्तु निकालि कऽ देलासँ पत्नी देखि लेती मुदा खरिहाँनक धानक बोझ तँ नइ देखती। बिनु ठेकानल रातिमे शिष्टदेवे जकाँ विचारनाथक नीन सेहो टुटल। नीन टुटिते मनमे उठलै जे जइ भैयाक

संग चन्देसर, विदेसर आ जागेसर स्थान संगे जाइ छेलौं आ महादेवोक दर्शन करै छेलौं, मेलौ घुमै छेलौं। की बेटो-भातिज संगे जाएत? एहेन टूट परिवारमे केना भेल? जहियासँ ज्ञान-परान भेल तहियासँ जहिना भैयाक संग रहैत एलौं तहिना भीन होइसँ पहिनौं धरि ओहिना रहलौं। मुदा कोन रोग परिवारमे केमहरसँ घुसि आएल जे दुनू भाँइ महींसक सींग जकाँ भऽ गेल छी? मुदा भैयाक दोख कहाँ केतौ छैन। दू परिवारसँ दुनू दियादिनी आबि दुनू भाँइकेँ दू दियाद बना देलक! दुनू भाँइमे जेठ-छोटक बेवहार कहाँ अछि। दुनू भाँइ तँ भैये-बच्चा छी मुदा दियादिनीमे से कहाँ छइ? माए तुल्य भौजीक दोख केना लगेबैन मुदा की ओ छोट दियादिनीकेँ छोट बहिन बुझै छथिन..? मनुक्खोक अजीब गति अछि। जाधैर सम्मिलित परिवार रहैए ताधैर दुनियाँक सभ रोग परिवारकेँ पकड़ने रहै छै मुदा परिवार टुटिते रोग पड़ा जाइ छइ। खाएर जे हौउ, जाधैर जीबै छी ताधैर भैयाकेँ भैये बुझबैन, भलेँ ओ जे बुझैथ। जहिना आमक वंशकेँ बढ़ैक दू रस्ता अछि। डारिसँ गाछ जोड़ि कऽ–जे कलम बनैए–जइमे आगूओ पुन: वएह आम रहैए, आ आँठीक जन्मल गाछ सेहो होइए जे दिनानुदिन अपन रूप बदलैत-बदलैत सभ किछु बदैल लैत अछि। खाएर.., एक हिस्सा रहितो भैयाकेँ पाँच गोरे खेनिहारो छैन आ तीनू भाए-बहिनकेँ पढ़बैयोमे खर्च होइ छैन। हमर तँ नापल-जोखल अढ़ाइ गोटेक परिवार अछि। एक सम्पैतमे भैयाक दोबर खर्च छैन। सहोदर रहैत जँ भैयाक दुख हम नइ बुझबैन तँ आन थोड़े बुझतैन? जइ धरतीपर राम-लक्ष्मण सन भैयारी भऽ चुकल अछि, की हम ओइ धरतीपर जन्म नइ लेने छी?

चुपचाप ओछाइनपर सँ उठि खरिहाँन जा धानक जाकमे सँ एक बोझ उठा भाइक खरिहाँन दिस विचारनाथ विदा भेल। तहीकाल शिष्टदेवो अपना खरिहाँनसँ धानक बोझ उठा विचारनाथक खरिहाँन दिस चलल। दुनू भाँइक खरिहाँनक मुँह दू दिस रहने किछु क्षणक रस्ताक दूरी बनि गेल।

..बीच बाटपर दुनू दिससँ दुनू भाँइ बोझ उठौने एक दोसराक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मुदा अन्हार रातिक दुआरे कियो केकरो चिन्हलक नहि, दुनूक मनमे चोरक शंका भेल। मुदा हल्लो केना करैत, दुनू तँ छल अखन

चोरे। भलेँ अपने धान किए ने छेलइ। मक्खन चोर कृष्ण तँ नै छल जे चोरा कऽ खाइयौ लैत आ झूठ बाजि छिपाइयो लितए। ..खरहोरिक कड़ची जकाँ दुनू भाँइ सजीव रहितो निर्जीव आ निर्जीव रहितो सजीव ठाढ़ रहल। किनको मुँहमे बोल नहि, आँखिमे नोर नहि। अमरलत्ती जकाँ दुनूक हृदय ओझरा कऽ लटपटा गेल। एक क्षण-ले जेना सरस्वती नदीक धार बहब छोड़ि असथिर भऽ मोटाए लगल।

मुड़ी उठा शिष्टदेव अकास दिस तकैत उतरे-दछिने डगहरकैँ देखैत माथसँ थोड़ेक निच्चाँ सतभैंयार्कैँ पच्छिम दिस हिया-हिया कऽ देखए लगला। सतभैंयापर सँ नजैर निच्चे ने उतरैत रहैन। तैकाल उतरबरिया गाछपर चकबी-चकेबाक झूण्ड देह डोलबैत भोरक इशारा करैत बोली देलक। चकवीक आवाज सुनिते शिष्टदेवक मनमे उठलैन- हो-ने-हो कहीं पत्नी जागि ने गेल होथि! हाँइ-हाँइ मुड़ी निच्चाँ करैत शिष्टदेवक मुहसँ फुटलैन-

“के?”

बोलीक आवाज अकाइन विचारनाथ बाजल-

“हम।”

‘हम’ सुनि शिष्टदेवक मन कहलकैन- ‘ई तँ विचारनाथ छी!’ मुदा तर्क कहलकैन- ‘एत्ती रातिमे बोझ उठौने केतए जाइए? ताड़ियो-दारू तँ नहियेँ पीबैए जे पसिखन्नो जाएत कि भट्ठीखाने जाइत हएत।’ सामंजस करैत शिष्टदेवक मुहसँ जहिना निकललैन-

“बौआ!”

तहिना विचारनाथक मुहसँ बहराएल-

“भैया!”

‘बौआ’ ‘भैया’क पछाइत दुनूक मुँह एक्केबेर बाजल-

“हँ!”

शिष्टदेव बजला-

“एहेन काजर सन कारी रातिमे बोझ केतए नेने जाइ छहक?”

जहिना सिनेह अपना हृदयसँ लगा कारीखमे चमक आनि दैत अछि, आ आँखिक गुण बढ़बैत अछि तहिना विचारनाथक हृदय-आँखि चमकल- "भैया, अहाँक खर्च देखि मन कहलक जे पाँच बोझ धान दए अबहुन।"

दुनू भाँइक मनमे उठल- "भीन किए.. ?"

जाधैर सदनदेव आ श्रद्धावती जीबैत रहैथ ताधैर स्वर्गक परिवार छेलैन। अपन अमलदारीए-मे सदनदेव दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा बिआह-दुरागमन करा जिनगीक लीलासँ निचेन भऽ गेल छला। सोलह बीघा जमीनक किसान परिवार, बाढ़ि-रौदीक बीच रहितो दोसराक सेवाकेँ कर्ज बुझि अपन परिवारकेँ सालक आमदनीक भीतरे खर्च कऽ रखि उगरल आमदनीसँ कातिक मास भागवत-कथाक संग भोज कऽ अगहनसँ नव जिनगीमे पएर रखै छला। ने बेटाकेँ किछु अढ़बैत रहथिन आ ने पत्नीकेँ। अढ़बैक प्रयोजने नइ रहैन। परिवारकेँ संस्था बुझि अपन-अपन समैयक उपयोग अपना-अपना शक्तिक अनुकूल सभ कियो काजमे लगबैत रहै छला। अपने अनुकूल परिवार देखि सदनदेव दुनू भाँइक बिआह केने छला। शिष्टदेवक बिआह बीस बीघाबला लालबाबूक परिवारमे आ विचारनाथक बारह बीघाबला श्रमदेवक परिवारमे भेलइ।

तइ समय महिला शिक्षा अवैध रहने कैकेयी सेहो नियमक पालन करैत रहली। जइसँ पितो–लालबाबू–खुश भेला। माल-जाल पोसैले एकटा नोकर छेलैन आ खेती जने-हरबाहक हाथे होइन। अँगनाक मालिक पत्नीए रहथिन। खाइ-पीऐक चहैट पत्नीकेँ नैहरेसँ लगल रहैन जइ दुआरे बेटी-पुतोहुकेँ रहितो भानस अपने करै छेली। खाली गठुलासँ बेटी जारैन आनि दइ छेलैन आ घरसँ बरतन-बासन आनि पुतोहु चूल्हि लग दऽ दैन। अपने तँ तरकारीए बनबए, चाउरे फटकए आ दालियेक खोंइचा बीछैमे पसेना पोछैत रहै छेली। चूल्हिक एक भाग पुतोहुकेँ आ दोसर भाग बेटीकेँ बैसा बीचमे अपने बैस सभ दिन नैहरक खिस्सा सुनबैत रहली जेकरे चलैत ने बेटी परबाबाक नाओं आ ने ददिया ससुरक नाओं पुतोहु बुझै छेलैन।

बाढ़िक उपद्रवसँ परिवार चलब कठिन बुझि श्रमदेव पितियौत भायकेँ सातो बीघा खेत सुमझा परिवारक संग कलकत्ता चलि गेल। माए-

बापक संग साते बर्खक दमयन्ती सेहो चलि गेली।

रिसरा जूट मिलमे श्रमदेव नोकरी ज्वाइन केलैन। पक्का आठ घन्टाक ड्यूटी रहैन। रस्ताक समय श्रमिकक। डेराक बगलेक स्कूलमे दमयन्तीक नाओं लिखा देलखिन। संगी-साथी सभसँ पँइच रुपैआ लऽ कऽ दस किलो दूधवाली गाए कीनि पत्नी-ले सेहो काज ठाढ़ कऽ लेलैन। बच्चेसँ माने साते बर्खसँ दमयन्ती थैर-गोबर करैत-करैत गाए पोसनिहारि भऽ गेली। आठ बर्ख नोकरीक उत्तर मिलमे वेतन-ले श्रमिक सभ हड़ताल केलक। मिलमे ताला लटैक गेल। नोकरीक डगमगाइत स्थिति देखि श्रमदेव अपन अरजल सभ किछु बेच पुन: घर घुमि एला। सस्त जमीन रहने पाँच बीघा जमीनो आ तीनटा गाइयो कीनि दोहरी काज ठाढ़ केलक।

..समैयक संग चलि दुनू भाँइ शिष्टदेव सेहो परिवारक गाड़ीकेँ पटरीपर चढ़ा अपन गतिए चलबैत रहला।

अँगनाक मालिक कैकेयी आ सहयोगीक रूपमे दमयन्ती रहए लगली। जेठ होइक नाते कैकेयी मुँहक बले जुइतो चलबए लगली आ हाथ-पैरकेँ अरामो दिअ लगली। वएह अराम काल भऽ भीन करौलकैन..!

मुदा दुनू भाँइक बीचक सिनेह पुन: एकाकार कऽ देलकैन।



शब्द संख्या: 1201

प्रेमी

फगुआक दिन। मुर्गाक बाँग सुनिते ओछाइन छोड़ि पक्षधर बाबा परिवारक सभकेँ उठबैत टोलक रस्ता धेने गौंआँकेँ हकार दिअ विदा भेला। मनो गदगद रहैन। खुशी भीतरसँ समुद्रक लहैर जकाँ उफनैत रहैन। गौंआँकेँ फगुआक भाँग पीबाक हकार दऽ दरबज्जाक ओसारपर बैस गर अँटबए लगला जे दस किलो चीनी, मसल्ला आ भाँगक ओरियान तँ कइये नेने छी। आब खाली बाजा-गाजाक संग लोककेँ एबाक छैन। ..एते बात मनमे अबिते पक्षधर बाबा उठि कऽ भाँगक पत्ती आ मसल्ला–मरीच, सौंफ, समतोलाक खोंइचा, गुलाब फूलक पत्ती, काबुली बदाम–लऽ आँगन जा पुतोहुकेँ सुनबैत बजला-

“कनियाँ, बुड़हीकेँ पुआ-मलपुआक ओरियान करए दियौन आ अहाँ भाँग पीसू। खूब अमैनियासँ पत्ती धुअब। तिनसलिया छी, जल्ला-तल्ला लगल अछि।”

कहि ओसारपर सभ समान सूपमे रखि दरबज्जा दिस घुमि गेला। ‘हँ-हूँ’ केने बिना गन्धारी मसल्लाक पुड़िया निच्चाँमे रखि पत्तीकेँ सूपमे पसाइर आँखि गड़ा-गड़ा जल्ला ताकए लगली। मनमे उठलैन जे आइ बुढ़ा सनैक-तनैक तँ ने गेला हेन! एते भाँग लऽ कऽ की करता..? मुदा गन्धारी किछु बजली नहि। आँखि उठा कऽ देखि बिहुँसि कऽ नजैर निच्चाँ कऽ लेलैन। ओना, मिथिलाक नारी अपन आँखिमे गान्धारी जकाँ पट्टी बान्हि घरती सदृश सभ किछु सहैत एली। दरबज्जापर बैस पक्षधरक मनमे उठलैन- जिनगीक एकटा दुर्गम स्थान दुर्गा टपा देलैन। मने-मन दुनू हाथ जोड़ि हृदयसँ सटा हुनका गोड़ लगला। सुकन्या अपना विचारसँ जिनगीक प्रेमी चुनलक। केना नहि आनन्दसँ जीबैक असिरवाद दैतिऐ। जइ फुलवारीकेँ लगबैमे साठि सालक श्रम लगल अछि, ओइ श्रमकेँ जहिना छोट-छोट बेदरा-बुदरी टिकुली पकैड़ पुनः उड़ा दैत तहिना हमहूँ उड़ा देब?

नहि, कथमपि नहि!

रूपनगर हाइ-स्कूलक बोर्ड परीक्षाक सेन्टर प्रेमनगरक हाइ-स्कूलमे भेल। देहाती स्कूल रहितो परीक्षार्थीकेँ डेरा-ले मनमे कोनो चिन्ता नहि। सबहक मनमे एते खुशी जे डेरापर धियाने ने जाइत। सभ निसचिन्त जे गाम-घरमे अखनो विद्याकेँ देवी स्वरूप बुझि सभ मदैत करए चाहै छैथ। जँ मधुबनी सेन्टर होइतए तहन ने डर होइतए जे मेहता लॉजमे सभ समान चोरीए भऽ जाएत तँए असुरक्षित अछि आ प्रोफेसर कॉलनीक भड़े-किराया तेते अछि जे ओतेमे विद्यार्थी परीक्षाक सभ खर्च पूरा लेत।

ओना, प्रेमनगरक सैयोसँ ऊपरे कुटुमैती रूपनगरमे अछि, तँए किए केकरो मनमे रहैक चिन्ता होइतै। तहूमे प्रेमनगर हाइ-स्कूलक हेडमास्टर तेहेन छैथ जे स्कूलक समयमे स्कूलक काज करै छैथ बाँकी बारह बजे राति धरि विद्यार्थीक खोज-पुछारिमे लगल रहै छथिन जे केकरो कोनो तरहक असुविधा तँ ने भऽ रहल छइ। तहूमे आनन्दी बाबाक दरबज्जा तेहेन छैन जे इलाकाक लोक धर्मशल्ले जकाँ अपन रहैक ठौर बुझैए। धैनवाद यशोदिया दादीकेँ दिऐन जे बुढ़ाड़ियोमे अभ्यागत सबहक अँइठ-काँठ बारह बजे राति धरि उठैबते रहै छैथ।

परीक्षासँ एकदिन पहिने लोचन सभ समान शुटकेशमे लऽ साइकिलसँ प्रेमनगर पहुँचल। लोचनक परिवारकेँ पक्षधरक परिवारसँ साइठो बर्ख ऊपरसँ दोस्ती आबि रहल छैन। आजादीक हुर-बरेड़ाक समय रहइ। जहिना गामक धिया-पुता गुल्ली-डन्टासँ क्रिकेटक मनोरंजन करैए, आ शहरक धिया-पुता जगहक अभावमे खेलक स्कूलमे नाओं लिखा मनोरंजन करैए, तहिना पक्षधरो आ ज्ञानचनो आजादीक लड़ाइमे पढ़ाइ छोड़ि समाजक बीच आबि हुर-बरेड़ामे शामिल भऽ गेला, समाजक काजमे हाथ बँटबए लगला। समाजमे केकरो ऐठाम बेटीक बिआह होइ, बरियाती अबै तँ अपन बहिन बुझि, बिनु कहनौं पाँच दिन निसचित समय दिअ लगला। तहिना आरो-आरो काज सभमे हाथ बँटबए लगला। मुदा अस्सी बर्खक उपरान्तो पक्षधर पक्षधरे आ ज्ञानचन ज्ञानचने रहि गेला। कहियो कियो नेता नै कहलकैन। हँ, एते जरूर भेलैन जे भाए-भैयारी भेने गाममे तेते भौजाइ भऽ गेलैन जे बढ़ैत वसन्त ग्रीष्मक रस्तेकेँ घेर देलकैन। आब तँ

सहजे बुढ़ाड़ीमे धिया-पुताक संग रंगो-रंग खेलै छैथ आ जोगीरो गबै छैथ। गाम स्वर्ग जकाँ लगि रहलैन अछि।

किएक नै मन लगितैन, जइ गाममे कालिदास सन विद्वान भेला जे जही डारिपर बैसब ओही डारिकेँ काटब मुदा ने तँ कुरहैरक धमक लगत, ने डारिए डोलत, ने दुनू हाथे कुरहैर भाँजब तँ देह डोलत-थरथराएत आ ने दुनू पैरक बाइलेंस गड़बड़ाएत। निसचिन्तसँ जखन डारि खसए लगतै तखन ओइपर बैसले-बैसल धरतीपर चलि आएब, एहेन विद्वान् सभसँ तँ गामे भरल अछि। एते दिन, अपराधीक संख्या कम रहने ओकरा सबहक नजैर निच्चाँ रहै छेलै मुदा आब केकरा कहबै, अपनो घरवाली धमकी देती जे माए-बाप आ भाय-भौजाइक पाछू लगल रहै छी आ अपना धिया-पुताले किछु करबे ने करै छी! ऐ जिनगीसँ जहर-माहुर खाए कऽ मरब नीक। हौ बाबू, हमरा एहेन भ्रममे नै दएह। ऐ दुनियाँमे ने कियो अप्पन छी आ ने बीरान। सीता जकाँ लक्ष्मणक रेखाक भीतर रहअ। नइ तँ रावण औतह आ लऽ कऽ चलि जैतह। अपन-अपन पैरपर ठाढ़ भऽ गंगोत्रीसँ निकलैत गंगाक पानि जकाँ, जे साथीक संग ऊपर-निच्चाँ होइत प्रशान्त महासागरमे मिलैए तहिना समैयक संग चलैत रहअ।

पक्षधर बाबाक घर-दुआर लोचनकेँ देखले। केकरोसँ पुछैक जरूरते किएक होइतै। साइकिल हरहरौने दरबज्जापर पहुँच साइकिलसँ उतैर घरक देवालक पजरामे साइकिल ठाढ़ कऽ दुनू हाथे बाबाक पएर छुबि गोड़ लगलकैन। बाबाकेँ बुझले रहैन, बजला-

“भने अखने चलि एलह। सभ समान सेरिया सेन्टरपर जा कऽ देखि-सुनि अबिहह।”

कहि पोतीकेँ हाक देलखिन। मुदा लोचनो तँ आँगन-घर जाइते-अबैत रहए। सुकन्याकेँ लोचन आँगनसँ बजा अनलक। भाए-बहिन जकाँ दुनूकेँ देखि पक्षधर बाबा सुकन्याक कहबाक बात बिसैर दुनू गोरेकेँ कहलखिन-

“बाउ, आब तँ हम चलचलाउ भेलियह। तोरे सबहक पार ऐ दुनियाँमे एलह हेन। दुनियाँमे जेते मनुक्ख अछि ओ अपना समैयक जिम्मा

लऽ जीबैए। अखन तूँ सभ सुकुमार कोमल-किसलय सदृश छह। मनुक्ख बनि जिनगी जीबिहह। हम दुनू संगी–पक्षधर आ ज्ञानचन–दू जातिक रहितो संगे-संग जिनगी बितेलौं, जे समाजोक लोक बुझै छैथ। मुदा हुनको धैनवाद दइ छिऐन जे संगीक महत अदौसँ बुझैत आएल छैथ। एकरे फल छी जे जाति-कुटुमसँ कनियोँ कम दोस्तीकेँ नै बुझल जाइ छी। संगे-संग जहलो कटलौं आ एक्के ओछाइनपर सुतबो करै छी। मिथिलांचलक कोनो राजनीतिक आकि सामाजिक संगठनक बात हौउ, मुदा की ऐ संस्कृतिकेँ आँखिक सोझहामे नष्ट होइत देखि सकै छी?”

पक्षधर बाबाकेँ मोन पड़लैन गाड़ीक ओ दिन जइ दिन जहल जाइत-काल दुनू गोरेकेँ पैखाना लगि गेल आ हाथमे हथकड़ी छल। ट्रेनक पैखाना-कोठरीमे पानि नहि। की कएल जाए? जेबीसँ रुमाल निकालि दू टुकड़ीमे फाड़ि दुनू गोरे शुद्ध भेलौं। आँखि ढबढबाए गेलैन। भरल आँखिसँ पोतीकेँ कहलखिन-

“बुच्ची, दरबज्जापर रहने बौआकेँ पढ़ि नै हेतइ। एक तँ पढ़बह की खाक। बहुत लिलसा छल जे परिवारमे इंजीनियर-डॉक्टर देखिऐ मुदा से हमरा सन-सन परिवारबला-ले सपना नइ तँ आरो की अछि। एक दिस पनरह-बीस लाखक पढ़ाइ आ दोसर दिस दुइयो हजार मासक आमदनीक परिवार नहि। मुदा अखन बच्चा छह, आशासँ जीबैक उत्साह मनमे जगबैक छह।”

जहिना जनकजीक फुलवारीमे राम आ सीताक प्रथम मिलन भेलैन तहिना सुकन्या आ लोचनक बदलल रूपक बीच भेल। अखन धरि जे बच्चा सदृश परिवारमे खेलौना छल ओकरा कानमे एकाएक जिनगीक बात पड़लै। जिनगी-ले प्रेम भरल संगीक जरूरत होइत अछि। जिनगीक बात सुनि दुनूक देह सिहैर गेलइ। ..सिहरैत देह देखि पक्षधर कहलखिन-

“बुच्ची, लोचन तोहर पाहुन भेलखुन। अँगनेक ओसारक कोठरी दऽ दहुन। सभ देखभाल तोरे ऊपर। कोनो तरहक असुविधा पढ़ैमे नै होइन।”

पक्षधर बाबाक बात सुनि सुकन्या शुटकेस माथपर उठा लोचनक पाछू-पाछू विदा भेल। कोठरी खुजले रहै, अँटकैक केतौ जरूरते नै पड़लै।

एकजनियाँ चौकी, कपड़ा-ले अलगनी, एकटा टेबुल आ एकटा कुरसी रहइ। कुरसीपर शुटकेश खोलि लोचन कपड़ा निकालि चौकीपर रखलक। चौकीपर रखिते सुकन्या ओही अलगनीपर लोचनोक कपड़ा रखलक जैपर ओकर अपनो रखल कपड़ा छेलइ। सौनक झूला जकाँ दुनूक कपड़ा झूलए लगलै। किताब, कॉपी, कलम निकालि टेबुलपर रखलक। एक्के कोर्सक पोथी दुनूक। लोचन मैट्रिकक सेनटप केंडीडेट आ सुकन्या मैट्रिकक विद्यार्थी...।

टेबुलक बगलमे लोचन लग ठाढ़ भऽ सुकन्या पोथी फुटा कऽ नइ रखि, सभकेँ जोड़ा लगा-लगा रखलक। दुनूक नजैर दुनूक किताब-कॉपी-पेनक जोड़ापर अँटैक गेल। पहिनेसँ दोबर पोथीक थाक भऽ गेल। ऐना जकाँ एक-दोसराक हृदयमे अपन-अपन रूप दुनू गोरे देखए लगल। पोथीक लिखाबट प्रेसक होइ छइ। तहूमे एक्के प्रेसक पोथी छेलइ। मुदा कॉपी तँ अपन-अपन हाथक लिखल होइ छइ। एक दोसराक कॉपी उलटा-उलटा देखए लगल। देवनागरी लिखाबट लोचनक सुन्दर मुदा रोमन लिखाबट सुकन्याक सुन्दर, एना किए भेल? एक्के हाथक लिखाबट दब-तेज केना भऽ गेल? मुदा उत्तर केकरो मनमे नहि अबइ। अनासुरती सुकन्याक मन नाँचल। एते-काल भऽ गेल, अखन धरि पानियोँ नै अनलौं। धड़फड़ा कऽ कोठरीसँ निकैल छिपलीमे जलखै आ लोटामे पानि नेने आबि चौकीपर छिपली रखि हाथ शुद्ध करैले लोटा बढ़ा, चौकीक गोड़थारी दिस पलथा मारि बाबाक पाहुनकेँ खुआबए बैस गेली। खाइकाल पुरुख चुप रहैत अछि तँए नोन-अनोनक प्रश्न किए उठितै। समदर्शी मिथिला छिऐ किने..! एक बजेसँ लऽ कऽ चारि बजे धरि परीक्षाक कार्यक्रम अछि। पहिल दिन लोचन दुर्ग टपैले जाएत तँए सुकन्याक मन मृगा जकाँ नचैत रहइ। भिनसरेसँ सुकन्या लोचनपर नजैर अँटकौने...। समैपर अपन काज पुरबैक अछि। हमरा चलते जँ शुभ काजमे बाधा होएत तँ भगवानक ऐठाम दोखी हएब।

..मास्टर साहैबक सिखौल बात सुकन्याकेँ मोन पड़ल। काजक भार तँ लोचनक ऊपरमे छैन, हम तँ हुनकर मदैतगार मात्र छिऐन। तँए नीक हएत जे हुनकेसँ पुछि लिऐन। सुकन्या चँचल मनमे फेर उठलै, पूजाक

तैयारीमे सभ किछु फुलडालीमे सजबैत होएत। बीचमे बाधा देब उचित नहि। हो-ने-हो फूल-पत्तीक जगहे बदैल जाइन।

..अनासुरती मनमे एलै- हाय रे बा, घड़ी तँ देखबे ने केलौं। अगर बारह बजि गेल हेतै तँ खेनाइ खुएबक दोखी के हएत? मन व्याकुल, अव्यवस्थित वस्त्र, केश छिड़ियाएल, कर्मक भारसँ भादबक अन्हरिया जकाँ सुकन्याक आँखिक आगू अन्हार पसैर गेलइ। केतए जाउ, केकरा पुछिऐ? गाछो-बिरीछ नै अछि जे पुछि लितिऐ। अस्त-व्यस्त अवस्थामे सुकन्या माए लग पहुँच बाजल-

“भानस भेलौ?”

“अखने। अखन तँ आठो ने बजल हएत।”

“जलखै?”

“बच्चा कहलक एक्केबेर खा कऽ सबेरे जाएब।”

जहिना केचुआ छोड़ैत समय साँपकेँ कष्ट होइ छै, भलेँ नव जीवन किएक ने प्राप्त करत, मुदा दरद तँ हेबे करै छइ। मीरा जकाँ सुकन्या, तहूमे राजस्थानक नहि, मिथिलाक बाला जे परिवार आ समाज-ले अदौसँ समरपित। बम्बइक गीतक धून बहुत मधुर होइए तहिना तँ समबेत स्वरमे माए-बहिनक चैताबर, बारहमासा आ समदाउनो तँ मधु सदृश अछिए। जहिना मधुमाछी उड़ि-उड़ि कखनो आमक गाछपर चढ़ि सोझे अपन प्रेमी मंजर लग पहुँच जाइत अछि, आ लगले माटिपर ओंघराएल चमेलीक रसकेँ आमक रसमे महामिश्रण कऽ घोल बनबैए, तहिना ने हमहूँ आ लोचनो छी।

कोठरीसँ निकैलते लोचनक आँखि सुकन्यापर पड़ल। हजारो रश्मि रूपी तीर दुनूक बीच टकराए लगल। मुदा दू रंग। जहिना लड़ाइक मैदानमे वीर असीम बिसवासक संग मरैले नहि बलिदान होइले बढ़ैए, तहिना लोचनोक हृदयमे। कोढ़िक फुलाइत फूल जकाँ मुँह, मुदा सुकन्या मने-मन भगवानसँ अराधना करैत-

“कुरुक्षेत्रसँ लोचन हँसैत आबए।”

उचंगल मन फेर उचैंग गेल। ओसारसँ निच्चाँ उतैरते सुकन्याक हृदय

लोचनकेँ पाछूसँ ठेलए लगल। जहिना बच्चा सभ माटिक पहिया लगा कड़चीक गाड़ीपर धनखेतीक माटि उघि-उघि अँगनाक ओलतीमे दऽ खुशी होइत जे आँगन चिक्कन बनत, तहिना आगू-बढ़ैत लोचनकेँ देखि सुकन्याकेँ खुशी भेलइ। मुदा खुशी अँटकलै नहि। लगले चारि बाजि गेलइ। मनमे उठलै- भूखल भायकेँ जलखै कहाँ खुएलौं। जहिना किसानक खेत दहा गेलासँ, वेपारीमे मन्दी आबि गेलासँ, बेरोजगारी बढ़लासँ भीखमंगोकेँ कियो भीख देनिहार नइ रहैत तहिना जे धरती करोड़ो पतिव्रता नारी पैदा केलक वहए धरती पतिहत्यारिनकेँ जन्म दऽ ओकरा जहल कटबैए...।

साढ़े चारि बजे बेर-बेर देखला पछाइत सुकन्याक नजैर मौकनी हाथीपर चढ़ल गणेशजी जकाँ लोचनकेँ अबैत देखि लोटामे पानि, थारीमे जलखै परैस अँगनाक ओलतीमे ठाढ़ भऽ देखए लगल। अखन धरिक लोचनक सैयो मनोहर रूप सुकन्याक मनमे नाचए लगलै। कोठरी आबि लोचन गरमाएल देहक कपड़ा बदैल जलखै करए लगल। विस्मित भेल सुकन्याक मुहसँ निकलल-

“केहेन परीक्षा भेल भाय?”

“बहुत बढ़ियाँ। जरूर पास करब।”

‘जरूर पास करब’ सुनि सुकन्याक हृदय सीताक राम जकाँ गुण लोचनमे देखलक। मनमे आशाक सिहकी उठलै। संगीए तँ जिनगीक जीत दियबैए। अपन सुखद जिनगीक मनोहर रूप लोचनमे देखि सुकन्या मोहित होइत बाजल-

“औझुका पेपर तँ नीक भेल मुदा आन दिनक जँ अधला हुअए, तखन?”

“ओ ओइ दिनक मेहनतपर निर्भर अछि। एकर जवाब हँ-नइ मे नै देल जा सकैए।”

आइ सातम दिन परीक्षाक अन्त भेल। स्कूलसँ आबि पक्षधरकेँ गोड़ लगि लोचन बाजल-

“बाबा, परीक्षा समाप्त भऽ गेल। गाम जाइ छी।”

असिरवाद दइसँ पहिनहि बाबाक मनमे उठलैन, जखन ऐठामक

काज सम्पन्न भऽ गेलै तँ रोकब उचित नहि। सबेर-अबेर भेनौं अपन घर तँ पहुँच जाएत। बात बदलैत बाबा पुछलखिन-

"केहेन परीक्षा भेलह?"

मुस्की दैत लोचन बाजल-

"पास करब, बाबा।"

लोचनक मुस्की पक्षधरक हृदयक आनन्दक कोठरीमे सलाइक काठी जकाँ रगैड़ देलकैन। मोन पड़लैन जनकपुरक धनुष यज्ञ। ठहाका दैत बजला-

"भाग्य केकरो लिखल नै होइ छै बनौल जाइ छै, बौआ।"

अँगनाक ओलती लग ठाढ़ सुकन्याक मन मृगा जकाँ व्याकुल भऽ नचैत रहइ। जहिना अपने नाभिक सुगन्धसँ मृगा नचैए तहिना सुकन्याक मन लोचनक मुहसँ परीक्षाक समाचार सुनैले नचैत रहइ। मुदा दरबज्जो तँ दोसराक नहियेँ छी, सोचि आगू बढ़ल। दुनू गोरे–सुकन्या आ लोचन–केँ देखि पक्षधर बाबा बजला-

"लोचन, आइसँ तोँ विद्याध्ययनसँ गृहस्ताश्रममे प्रवेश कऽ रहल छह। तँए बाबाक लगौल फुलवारीक सुखल-मौलाएल डारिकेँ कमठौन कऽ खाद-पानिसँ सेवा करिहह। ओइमे नव-नव कलश चलतै जइसँ हँसैत-खेलाइत जिनगी चलतह।"

मुड़ी गोंतने लोचन आँगन आबि पानि पीब पोथी सेरियबैक विचार केलक। पोथीपर पोथी गेंटल देखि हाथ कँपए लगलै। सुकन्याक मन कानि उठलै। जहिना कोनो धारक दुनू भित्तापर बैसल यात्रीकेँ होइए तहिना सुकन्याक मनमे दूरीक भाव उठए लगलै। लोचन सफलताक जिनगीमे पहुँच गेल आ हम? आशा-निराशाक क्षितिजपर सुकन्या लसैक गेल।

सुकन्या लोचनकेँ सीमा धरि अरियातए विदा भेल। गामक सीमा बिला गेलइ। ने लोचन सीमा ठेकानि सकल जे घुमबाक आग्रह करितै आ ने सुकन्या बुझि सकल जे अन्तिम विदाइ दइतै। अजीब गामोक सीमा अछि। एक्को परिवारकेँ गाम मानल जाइए–जेना भोजमे–दसोगाम माला बनि गाम बनि जाइत अछि, जेना दस गम्मा जाति। अरियातने-अरियातने

सुकन्या लोचनक घर धरि पहुँच गेल।

पनरह दिन बीतैत-बीतैत अनेको मौगियाही कचहरीमे फैसला लिखा गेल जे 'सुकन्या पक्षधरक घरसँ निकैल अजाति भऽ गेल।' कचहरीक फैसला सुनि सुकन्याक माए-बापक करेज दड़कए लगलैन। कनैत मन बाजए लगलै, मनो ने अछि जे कहियासँ दुनू परिवारमे दोस्ती अछि। सभतुर हमहूँ जाइ छी आ ओहो सभ आबि जाइ छैथ। मुदा आइ की देखि रहल छी! जाधैर पिता जीबै छैथ ताधैर ऐ परिवारक हमसभ के? तँए समाजक लोकक जवाब ओ देथिन..।

पिताकेँ गामक लोकक बात कहलकैन। बेटा-पुतोहुक बात सुनि गरैज कऽ पक्षधर बजला-

"जइ समाजमे मनुक्खक खरीद-बिक्री गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए, की ओइ समाजकेँ पंच-तत्त्वक बनल मनुक्ख कहल जा सकै छइ? जँ से नहि तँ हमर कियो मालिक नइ छी। कियो ओंगरी देखौत तँ ओकर ओंगरी काटि लेबइ। आइए दोस्तक ऐठाम जाइ छी आ देखि-सुनि अबै छी।"

जखन भाँग पानिमे अलैग गेल तखन पुतोहु बुझलैन जे भाँग पिसा गेल। पोछि-पाछि सिलौटकेँ धोइ बाटीमे रखलैन। दरबज्जापर बैसल पक्षधरक मनमे उठलैन जे नअ बाजि गेल, अखन धरि किए ने कियो आएल? फेर मन उनैट कऽ भाँगपर गेलैन। भाँगपर नजैर पहुँचते मनमे उठलैन जे बिनु भाँग पीनहि तँ ने सभ निशाँए गेल अछि! तखन भाँगक जरूरते की? किछु दिन पहिने धरि सभ गाममे एक-दिना फगुआ होइ छेलै मुदा आब तीन-दिना भऽ गेल। ओना तीन रंगक पतरो आबि गेल अछि। मुदा अपना गाममे तँ एकदिने अखनो धरि होइत आएल अछि आ जाधैर जीब ताधैर होइत रहत। कीर्तन मण्डलीक संग-संग आनो-आन मण्डली पक्षधर ऐठाम पहुँचला। अनगिनित थोपरी बजौनिहार आ अनगिनत गबैयाक समारोह। चीनीमे घोरल भाँग। सभसँ उमेरदार रहितो पक्षधर भाँग परसनिहारकेँ कहलखिन-

"पहिने नवतुरिया सभकेँ पिआबह। वएह सभ ने बेसी-काल गेबो

करतह आ नचबो करतह।”

मुदा एक्कोटा नवतुरिया बाबाक बात नै सुनलक। सबहक यएह कहब रहै जे बाबा गाममे सभसँ श्रेष्ठ छैथ, अनुभवी सेहो छैथ, तँए जँ ओ गोबरखत्तोमे खसता तैयो हम सभ नै छोड़बैन। नवतुरियाक बात सुनि पक्षधरक मनमे उठलैन अखन आँगनमे कहाँ छी दरबज्जापर छी। दस गोरेक बीच छी। तखन के छोट के पैघ? सभ तँ ब्रह्मेक अंश छी। तहूमे एते टुकड़ी एकठाम एकत्रित छी। ..दू गिलास भाँग पीब पक्षधर उठि कऽ ठाढ़ होइत फगुआ शुरू केलैन-

“सदा आनन्द रहे ऐ दुआरे मोहन खेले होरी हो।”

ढोलक, झालि, कठझालि, हरमुनियाँ, मजीरा, खजुरी, डम्फा, गुमगुमा-गुमगुमियाँक संग सैयो जोड़ थोपड़ीक महामिश्रणक धूनक संग कोइली सन मधुर आवाजसँ लऽ कऽ टिटहीक टाँहि धरिक बोल अकासमे पसैर गेल। ओना जमीनो खाली नइ रहल। इग्लिश डान्ससँ लऽ कऽ जानी धरिक नाच आ मेल-फीमेलक जोगीरा जोर पकड़नहि रहए। बजनियाँ सभ अपन-अपन बजो बजबैत आ कुदि-कुदि नचबो करैत।

गोसाँइ डुमैबेर पक्षधर बाबा फेर भाँग बनबौलैन। अपन शक्तिकेँ कमजोर होइत देखि सभ कियो दोबरा-दोबरा पीलक। उत्साहो दोबरेलै। पुरनिमाक राति। हँसैत चान। फागुन मास रहने अकासमे केतौ बादल नहि। मुदा तरेगन मलिन भऽ अपन जान-ले झखैत। किएक ने तरेगन अपना जान-ले झखत? आखिर वसन्त-वसन्तीक समागमक दिन छेलै किने। गामक दछिनबरिया सीमापर समन जरए लगल। समनक धधड़ाकेँ पक्षधर उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ कुदला। बाबाकेँ देखिते सभ एका-एकी कूदए लगल।

धधड़ा मिझा गेल। मुदा जाड़क आगि चकचक करिते रहल। समदाउन गबैत सभ-कियो घरमुहाँ भेला।

❑ शब्द संख्या: 2526

बपौती सम्पैत

आसिनक अन्हरिया चौठ। गोटि-पँगरा खाएन-पीन शुरू भऽ गेल। मातृनौमी-पितृपक्ष साझीए चलि रहल अछि। कियो-कियो बाप-दादा-परदादाक नाओंसँ तँ कियो-कियो माइयो-दादी-परदादी निमित्ते नोति-नोति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परीवे दिनसँ शुरू भऽ गेल। मुदा ईहो गोटि पँगरे। किछु गोरे ठेकिऔने जे एकादशी-के जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्ष-ले नौमी आ पितृपक्ष-ले एकादशी-के नोतहारी नोति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होइए जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकैँ एक-एक दिन खुअबैए। जेकरा ढढक कहैए आ किछु गोरे मातृपक्ष-ले महिलाकैँ आ पितृपक्ष-ले पुरुखकैँ नोत दऽ सेहो खुअबैए। पक्षक भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष 'मातृनौमी' आ दोसर 'पितृपक्ष'। नौमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल अछि...।

दुनू टेंगारीकैँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक कि तमाकुल खाइक मन भेलइ। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते छल कि पत्नी आबि कहलकै-

"घरमे एक्को चुटकी नून नै अछि, भनसा बेर भऽ गेल, कखन आनब?"

"अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमैन बनाएब ताबे हम दौगले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबइ।"

गुलटेन हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लइते, मरचूनक दुआरे केनादन लगलै कि थुकैड़ कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकैँ हौंड़ देलकै, दोसर काज पछुआइत देखि गुलटेनक मन आरो घोर-घोर भऽ गेल। मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकैँ एकठामक फाट सीने दोसरठाम

मसैक जाइ छै तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू-मुहेँ नै ससैर रूकि गेलइ। चिन्तार्कें अँटैकते गुलटेनक मनमे खुशी भेलइ। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवियो-देवतार्कें होइ छैन ओकरा हम माया-जाल किए बुझै छी? ई दुनियाँ केकरा-ले छइ? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक वस्तु छी नइ कि उपभोग करैक...। गुलटेनकेँ देखि आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना बाजल-

"तमाकुल खा लएह काका, तखन जइहह।"

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनार्कें कहलक-

"बौआ, अगुताएल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी-काल नइ अँटकब।"

"एह काका! तोहूँ हरिदम अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खाइक छुट्टी नइ रहै छह।"

कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल लइते गुलटेनकेँ रसगर लगलै, सुआद पाबि बाजल-

"बड़ टिपगर खैनी खुऔलेँ भुखन! एहेन टिपगर माल! कोन दोकानक छियौ?"

"काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक वेपारी साइकिलपर एक बोझ नेने बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीम रहल। एह! भरि राति ओ वेपारी एक हिसाबे जगौनहि रहल। जेहने खिस्सक्कर तेहने महरैया। खाइसँ पहिने महराइ गौलक आ खेला पछाइत एक्केटा तेहेन खिस्सा–रजनी-सजनीक–उठौलक जे ओरेबे ने करइ। जखन डंडी-तराजू पच्छिम चलि गेल तखन हमहीं कहलिऐ- 'आब छोड़ि दियौ, बड़ राति भऽ गेल।' तखन जा कऽ छोड़लक।

भिनसर भने पोखैर-झाँखैर दिससँ आएल तँ चाह पिआ देलिऐ। दलानपर सँ साइकिल निकालि तमाकुल सेरियाबए लगल। हमहूँ गिलास धोइ चक्कापर रखि एलौं, जेबीसँ दस टकही निकालि दिअ लगल। कहलिऐ- 'ई की दइ छी?' ओ कहलक- 'हम वेपारी छी कोनो अभियागत

नहि। तँए खेनाइक पाइ दइ छी।' आब तोंही कहह काका, ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत? की हम सभ अपन बाप-दादाक बनौल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ बपौती सम्पैत छी किने। एकरा केना आँखिक सोझहामे मेटाइत देखब।"

थूक फेक गुलटेन बाजल-

"एहनो कियो बुड़िबक्की करए। पाभैर खेने हएत कि नइ खेने हएत, तइले लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक केलह जे पाइ नै छूलह।"

अपन बड़प्पन देखि मुस्की दैत भुखना बाजल-

"ऐँह की कहिय काका! ओहो बड़ रगड़ी रहए, कहए लगल- 'से केना हएत। हम कि कोनो भूखल-दूखल छी कि वेपारी छी।' मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐ। तखन ओ दस-बारहटा पात निकालि कऽ दैत कहलक- 'जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइए-ले दइ छी।' सएह छी।"

आगू बढ़ैत गुलटेन बाजल-

"बौआ, अखन औगुताएल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोने रहि जाएत।"

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। दोकानपर गेल। गुलटेनकेँ देखिते झिंगुर काका कहलखिन-

"अखन धरि माथमे केश लगले देखै छिअ!"

माथ हसोंथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल-

"अखन कटबै-जोकर कहाँ भेल हेन! जखन कानपर केश लटकए लगत तखन ने कटाएब।"

"बिसैर गेलह! काल्हिए ने बाबूक बरखी छिअ। हमरो चच्चा साहैबकेँ छिऐन। दुनू गोरे एक्के दिन ने मरल रहैथ।"

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेनकेँ धक्-दे मोन पड़ल। बाजल-

"हँ, ठीके कहलौं काका। आइ जँ अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी

छुटिये जाइत।"

"अखनो किछु नइ भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहेन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोरे लागल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लगल हेन।"

"अखन तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर वेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैमे। अपने केश कटाएब कि ओरियान बात करब आकि ओकरा सभकेँ बजबैले जाएब...।"

"असली कर्त्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरूरी छह। हमरा सभमे तँ पाँच बरखी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैत अछि आ कम-सँ-कम एगारह गोरेकेँ खाइयोले दैत अछि। तोरा एकटा आरो हेतह। खाएन-पीन माने मातृनौमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजी केँ तीर्थेपर बरखी पड़ि गेलैन, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझटे नइ रहलैन। मुदा तूँ सभ तँ एकादशीकेँ खुअबै छहक तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना, ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलैनो तँ अपन महत रखैए किने।"

झिंगुर-कक्काक बात सुनि गुलटेन दोकानदारकेँ कहलक-

"हे हौ घोघन साहु, झब-दे एक टकाक नून दएह।"

गमछामे नून बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस विदा भेल। मनमे पिता नाचए लगलखिन। हृदय पसीझ गेलइ। मोन पड़लै, बाबू अनका जकाँ नै छला। आगू-पाछूक बात जनै छला। जँ से नहि, तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीनि देने रहितैथ। कोनो कि कमाइ-खटाइ नै छला। जँ से नै छला तँ कातिक मासमे ओते खरचा करि कऽ भागवत केना करबै छला। तैपर सँ भोजो-भनडारा करिते छला। हमरे-ले की कम केलैन? घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलैन। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नइ होइत अछि। कमाइ छी, खाइ छी, ठाठसँ जिनगी बितबै छी! जँ खेते रहैत आ खेती करैक लूरिए नइ रहैत, तँ छुच्छे खेते लऽ कऽ की करितौं। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअए कि दाही, अछैते खेते हाट-बाजारसँ मोटा उघै

छैथ। हमरा तँ घराड़ी छोड़ि एक्को धूर नै अछि। तँए कि केकरोसँ अधला जीबै छी...।

अपन खुशहाल जिनगीपर नजैर अबिते गुलटेनक हृदय आनन्दसँ ओलैड़ गेल। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नहि, अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। मनमे उठलै- केना लोक बजैए जे जेकरा अ आ नै लिखए अबै छै ओ 'मुरुख' अछि? बाबू तँ औंठे-निशान दऽ कोटासँ मटियो तेल आ चिन्नियोँ अनै छला। बड़का-बड़का सर्टिफिकेटोबला सभकेँ देखै छिऐन जे दारू पीब लेता आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंगरेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छैथ! तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छला। खाइ बेरमे आँगनमे नइ रहै छेलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छला। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छला आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बुझि पड़ै छेलैन तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दइ छेलखिन नइ तँ ओते छोड़ि कऽ उठै छला। आ-हा-हा! एहेन बाप होएब की अधला छी। जखन काज करए जाइ छला तँ संगे नेने जाइ छला आ काजक लूरि सिखबै छला। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करए लगलौं। हुनकर सालो भरिक हिसाब केहेन छेलैन। आसिन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धनकटिया, नारबन्हिया, दाउन केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। किए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नइ ने जे कहत काजे ने अछि। रस्तापर बाउल उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलैन जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समय होइ छइ। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्हैमे मदैत कऽ सकैए। जेकरा लूरिए ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकतै तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत..?

अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकलै। मुहसँ हँसी निकललै। ओगरवाहिबला गाछीक मचकीपर नजैर गेलइ। की हमरा सबहक दुनियाँ अछि! बड़क गाछपर सँ बर्ड़ू काटि बरहा बनबै छी। मुठबाँसीक बल्ला, पिढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झूलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छमासा, बारहमासा मचकीक

स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना होएत..! असकरे कृष्ण-राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करै छला, बौसरियो बजबै छला आ आसो लगबै छला। मुदा अखन तँ देखै छी जे बजा कियो बजबैए, नाच कियो करैए आ गीत कियो गबैए। तेहने ने देखनिहारो अछि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैए तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैए तँ कियो ओकर कानक झूमकाकेँ। गौनिहारक आवाज सुनैए कि ओकर मुँह देखैए..!

नूनक पोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन बाजल-

“बाबूक बरखी काल्हिए छी। बिसैर गेल छेलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी-ले जे चाउर रखने छी, ओकरा निकालि रौदमे पसाइर दियौ। राहैड़ सेहो उलबए पड़त। बेरू-पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ आनब। दूध तँ आइए पौड़ल जाएत। ओना अम्हौरपर सौंझुको दूध जनैम जाएत।”

पतिक बात सुनि मुनिया बजली-

“एहेन अहाँ बिसराह जे छी से सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत! ने कुटुमकेँ नोत देलौं आ ने बेटी-जमाएकेँ खबैर देलिऐन।”

“अच्छा सभ हेतइ। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहैथ जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छैथ आ पारो लगौता।”

कहि, गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना नोत दऽ चोट्टे घुमि गेल।

काजमे गुलटेन जेहने होशगर, माने लूरिगर तेहने बिसराहो। ई सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महींस दूहब, डरबुक-सँ-डरबुक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोड़ब, सुरुंगवा शीशो पाँगब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांङ्गिपर ढेंग

उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब, फड़काह बच्छाकेँ पटैक नाथब, हर लगाएब इत्यादि काज समाजमे केकरो कऽ दइत। करबो केना ने करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पैत बुझैए।

बरखी-भोजक चर्चा जनीजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसैर गेल। अपन दायित्व बुझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लगली। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँच जाइए तहिना समाजोक लोक आबए लगलैन...।

रवियापर नजैर पड़िते गुलटेन बाजल-

“रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइए-ले छेलौं। भने आबिए गेलह। बहुत दिन जीबह।”

रविया-

“किए भैया? अखने फोकचाहावाली काकी आँगनमे बजली; तब बुझलौं।”

“ठीके बुझलहक। बिसैर गेल छेलौं। दोकानपर झिंगुर काका मन पाड़ि देलैन। मुदा काज तँ कल्हुका बदला परसू नइ हएत।”

“हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।”

“चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब मुदा पंचकेँ दुइयो कौर दही नै खुएबैन से नीक हएत?”

“सौंझुका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। केते दूध पौड़बहक?”

“दू मन चाउर रान्हब। आधोमन तँ दही चाही।”

“अदहा मन सँ हेतह?”

“अपना सभमे दहीए केते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आकि फल-फलहरी खाइयो चाहत से आनत केतए-सँ।”

“हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारियो किए हाटपर सँ अनबह। अखन तँ सबहक चारपर सजमैन-कदीमा आ बाड़ीमे भँट्टा अछिए। तइले पाइ किए खर्च करबह। औगताइमे अदौरी बनौल नै हेतह।

बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहेन हएत?”

“मन होइए जे बड़-बड़ीक ओरियान करी।”

“तों सनैक गेलह हेन। बड़-बड़ीक घाटि केते मेठनियाँ होइए से बुझै छहक।”

“हँ, से तँ ठीके कहलह।”

“अखन जाइ छिअ। दहीसँ निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह, आकि पुजौनिहारो औथुन।”

“अपना सभमे केते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छइ।”

भगिन-पुतोहु दालि दर्ड़ैले अबै छेली। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजैर पड़लैन। मुँह बिजकबैत बजली-

“बुढ़ा, अपनो मरता आ दोसरोकेँ जान मारथिन। काल्हि-परसू ई सभ काज होइतै।”

कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़ली।

गोसाँइ डुमिते भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भाइक माथपर चाउर-दालिक मोटरी। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आँगन पहुँच सिंहेसरी कानल नहि, माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइ छइ। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खुट्टापर लगहैर महींस अछि, बरखी सन काजमे जँ एक्को कराही दही नै लऽ जाएब से केहेन हएत..?

ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरू केलक-

“अँइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपए नइए जे काल्हि बाबाक बरखी छिऐन आ आइ तूँ अबैले कहलेँ?”

तैबीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेल। माथपर मोटरी रहबे करै तखने मुनिया सिंगहेसरीकेँ कहलक-

“दाइ, हमर कोन दोख, मासे-मास जे छाया करैत एलौं तेकर

ठेकाने ने रहल। बापो तेहेन बिसराह छथुन जे बिसैर गेलखुन। आइए बुझलौं।”

माइक जवाब सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नइ बुझि माएकेँ अगुअबैत बाजल-

“जाबे बाबा जीबै छला ताबे केते मानै छला। आब जखन ओ नै छैथ तखन हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबैन। एगारहो गोरेक तँ ओरियान करि कऽ अबितौं।”

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत रहल। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै-काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइ छइ। मुदा हम तँ बिसैर गेल छेलौं। ..सामंजस करैत गुलटेन बाजल-

“पाहुन किए ने एलखुन?”

सिंहेसरी बाजल-

“से तूँ नइ बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखन तँ एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महींसकेँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।”

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजली-

“ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि। तोरा लिए जेहने ई तेहने उ। अहूठीम तँ दहीक ओरियान भइये रहल हेन। तइले तोरा किए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइयेक छिऐ, आकि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस किए होइ छह। मोटरी सभकेँ खोलि-खोलि चीज-वौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पएर धोइ गोसाँइकेँ गोड़ लगहुन।”

पत्नी आ बेटीकेँ शान्त होइत देखि गुलटेन मुस्की दैत बाजल-

“गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। केते भारी काजे अछि।”

घरक गोसाँइकेँ गोड़ लगि सिंहेसरी पिताकेँ गोड़ लगैले बढ़ल कि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने बाजल- “बुच्ची, कोनो

चीजक दुख-तकलीफ तँ ने होइ छह?”

हँसैत सिंहेसरी बाजल-

“बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पएर लड़बै छी, सुखसँ दिन कटैए।”

भोजमे खूब जश गुलटेनकेँ भेल। भरि-दिन एमहर-दौड़ तँ ओमहर-ताकमे दुनू परानी लगल रहल। मुनियाक छाती केराक भालैर जकाँ कँपैत रहलैन। बिना अन्ने-पानिक भरि दिन खटैत रहली। जेना भुख-पियास केतौ पड़ा गेल। मुदा भोजक जश दुनू परानी गुलटेनकेँ, जहिना ऊसर खेतमे कूश लहलहाइत तहिना लहलहा देलक। पिताकेँ सिंहेसरी कहलक-

“बाबू, सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लए।”

खेला-पीला पछाइत गुलटेनक मनमे सिनेमाक रील जकाँ सभ काज नाचए लगल- ठीके ने लोक कहै छथिन जे जे जेहेन करत से तेहेन पौत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छेलैन तहिना ने हेतैन। आ-हा-हा! ओंगरी पकैड़-पकैड़ घर बन्हैक लूरि सिखौलैन! जीबले बारहो मासक काज सिखौलैन..!

मने-मन गुलटेन पिताकेँ स्मरण करैत गोड़ लगलक।



शब्द संख्या: 2350

डंका

चुड़लाइ, तिलकुट आ चूड़ा-मुरही गमछाक एक भागमे बान्हि दोसर भाग दहिना-हाथे पकैड़ लटकौने जीवानन्द उत्तर-मुहेँक रस्ता डेग झाड़ने जाइत रहए।

दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया अखड़े-चौकीपर बाँहिक सोंगरक कान्हपर माथ अड़कौने भैयाकाका रस्ते दिस देखैत रहैथ कि नजैर पड़िते जीवानन्दकेँ किछु पुछए चाहलैन, मुदा मन रोकए लगलैन। सोगाएल मन। मुदा जीवानन्दक आकर्षित रूप मनकेँ धिक्कारलकैन जे सभ दिन एकठाम बैस नीक-बेजाए, गप-सप्प करैत एलौं। आइ तँ सहजे तिलासंक्रान्ति सन पाबैन छी। तखन जँ नै टोकब तँ केहेन हएत? गंभीर मन मुदा मुस्की दैत भैयाकाका बजला-

“केतए एते हड़बड़ाएल जाइ छह, जीवानन्द?”

भैया-कक्काक टोकबकेँ अनठा आगू बढ़ि जाएब जीवानन्द उचित नइ बुझि रस्तेपर ठाढ़ भऽ कहलकैन-

“की कहौं काका! ऐबेरक पाबैन रीब-रीबेमे रहि गेल!”

जीवानन्दक परेशानी मिलल बात सुनि भैया-कक्काक मनमे गुदगुदी लगलैन। जहिना आत्मा खुट्टा आकि रस्सी सदृश ब्रह्मसँ मिलैत तहिना भैया-कक्काक मन जीवानन्दक बेथा-कथा सुनैले सुरसुरेलैन। चौअन्नियाँ मुस्की दैत भैयाकाका पुछलखिन-

“तिलासंक्रान्ति सन खाइ-पीबैबला पाबैन, तखन तोरा केना रीब-रीबेमे जा रहल छह?”

भैया-कक्काक बातमे जीवानन्द ओझरा गेल। मनमे उपकलै नीक काज भेने खुशीसँ हँसी लगैए मुदा अधला काज भेने की हँसी नइ लगै छइ। रस्तापर ठाढ़ भेल जीवानन्दकेँ किछु फुरबे ने करइ। जहिना खेतमे

हाल कम रहने अँकुर नइ जनमैत तहिना जीवानन्दोकेँ भेल। असमंजसमे पड़ल मनमे उठलै जे भोरसँ अखन धरिक अपने बात सुना दिऐन। जँ किछु कहबैन नहि, तँ मनमे हेतैन जे कोनो उकड़ू काज जीवानन्द केने अछि। ..मुस्कियाइत जीवानन्द कहए लगलैन-

"काका, की पुछै छी। चारि बजे भोरे पोखैरक घाट परहक पी-पाह सुनि निन्न टुटि गेल। उठैक विचार करिते रही कि तखने पत्नी आबि कऽ कहलैन जे 'रतुपारवाली दीदीकेँ भरिसक दरद उपैक गेलैन। पूर मासो छिऐन। भरिसक वएह कुहरै छैथ।' सुनिते मन खुशी भऽ गेल जे खूब पाबैन हएत! मुदा अपन दियाद नइ रहने असथिर भेलौं। उठि कऽ गेलौं तँ देखलिऐ जनानी सभ घेरने। मुदा हमरा देखिते सिबावाली काकी कहलैन जे 'बौआ, गामपर नै सम्हरतह, डाकडर लग लऽ जाहक।' डॉक्टरक नाओं सुनि लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे गाए-महींस जकाँ देहो-टाँग छिड़ियौने आ अर्रऽ-बोंऽऽऽ करैत...। एक्को क्षण बिलम करब उचित नइ बुझि खाटक ओरियान केलौं आ तमोरिया लए गेलौं। ..केकर मुँह देखि कऽ उठलौं जे अखन धरि दू कप चाहेटा पीने छी। दतमैनो पछुआएले अछि!"

"की भेलैन?"

"बेटा।"

"बेसी तबाही ने तँ भेलह?"

"ऐंह की कहूँ काका, जनीजाति तेहेन भौनी होइए जे एकबर हेतै आ सातबर भभटपन करत! जखन खाटपर चढ़बैत रहिऐन तखन तेना ने हाथ- पएर कठुआ लेलैन जे बुझि पड़ल दाँती लगि गेलैन। मुदा मुँहमे बोल रहबे करैन। पकैड़-पकैड़ हाथ-पएर सेरियौलिऐन। मन तेहेन लहैर गेल जे हुअए दू-एँड़ ऊपरोसँ लगा दिऐन। मुदा फेर भेल जे अधिक दरद भेने लोकक बुधियो बाइत जाए छइ। हो-ने-हो कहीं सएह भऽ गेल होइन।"

मुस्की दैत भैयाकाका-

"डॉक्टर लग ने तँ बेसी भँगठी लगलह?"

"नहि। संयोग नीक रहल जे एकमुहरी काज सुढ़ियाइत गेल। साते बजे निकास भऽ गेलैन। मुदा तेते ने काजक ओझरी रहए जे सम्हारैत-

सम्हारैत डेढ़ बजे विदा भेलौं।”

“पबनौट केतए लऽ कऽ जाइ छह?”

“तीन पुश्तसँ यूनूसक परिवारसँ आवाजाही अछि। आइ भोरे हुनकर छोटकी बेटी एक मुजेला तरकारी दऽ गेल छेलए। सभ साल दइ छैथ। अपने कारोबार छैन। ओना, पाबैन सभमे सेहो पबनौट दइ छैथ। तहिना हमहूँ दइ छिऐन। सएह छी। आन बेर आठे-नअ बजे दऽ अबै छेलिऐन। मुदा आइ तँ दोसरे भाँजमे पड़ि गेल छेलौं।”

“हमर तिल-चाउर कखन खेबह, आकि अपने ताले-बेताल रहबह?”

“की कहूँ काका, मरैयोक पलखैत नइए। निचेन भऽ कऽ आएब। अखन ओहो बच्चा सभ बाट तकैत हएत। सभ भोरे नहाएल आ हम अखैन तक दतमैनो नै केलौं हेन।” “अच्छा जाह। बाट तकबह!”

कहि भैयाकाका चुप भऽ गेला।

जीवानन्द फुसफुसाइत विदा भेल-

“तेहेन माया-जालक झमेल अछि जे विचारेकेँ घुसका-फुसका दैत अछि, जइसँ समैयक झुट्ठा बनि जाइ छी! काजक अपन गति छइ। समैयक गतिसँ मिलि कऽ चलैले ओकरा केना छोड़ब?”

रस्तेपर जीवानन्दकेँ यूनूसक कोरैला बेटा आ छोटकी बेटी देखलक। देखिते दुनू दुआरपर सँ आँगन जाए माएकेँ कहलक-

“जीवानन्द काका अबै छथिन! बड़ीटा मोटरी हाथमे छैन!”

हाटक कोबी सेरियौनाइ छोड़ि यूनूसक पत्नी अँगनाक मुहथैरपर आबि ठार भेली। तैबीच भाए-बहिनकेँ कहलक-

“बड़का लाइ हम लेबौ।”

बेटाक बात सुनि माए किछु बाजल नहि। मुस्कियाइत रहली। जीवानन्दकेँ पहुँचते सुनबैत बेटीकेँ कहलखिन-

“काका एलखुन, प्लास्टिकबला ओछाइन बैसैले ओछा दहुन।”

हाथक गमछा दैत जीवानन्द बाजल- “नै दाइ, अखन नै बैसब।

झब-दे गमछा अजबारि कऽ लाबह।”

जीवानन्दकेँ गेलोपर भैया-कक्काक नजैर जीवानन्देक बात ‘मरैयोक पलखैत नै अछि’ पर नचैत रहैन। पाबैनो रहने दतमैन करैक पलखैत जेकरा नइ छै, ओकरा-ले पाबैने की? मन आगू बढ़लैन, ई दुनियाँ विचित्र रंगमंच छी। जेहने कलाकार तेहने रंगमंच। सुपात्र-ले जँ इन्द्रासन सदृश अछि तँ कुपात्र-ले गन्ध करैत नर्क जकाँ सेहो अछि, वीर-ले वीरभूमि, तपस्वी-ले तपोभूमि, साधक-ले साधना भूमि तँ चोर-डकैत-ले सोनाक चिड़इ। मधु चढ़ौनिहार-ले मधुशाला तँ इज्जतखोर-ले वेश्यालय सेहो छी! पार्ट खेलेनिहार सेहो अजीब अछि। केतौ पुरुख महिला बनि कला प्रदर्शित करैए तँ केतौ महिला पुरुख बनि सेहो करैए। मुदा तँए कि पुरुख पुरुख बनि आ महिला महिला बनि अपन पार्ट अदा नै करै छैथ? जरूर करै छैथ! मन आगू बढ़ि रामायण दिस बढ़लैन। हँसी लगलैन। जे मर्यादा पुरुषोत्तम राम दसमुहाँ रावणकेँ मारलैन, नाश केलैन वएह वोन जाइकाल कौशल्याक सम्बन्धमे की केलैन! माइक सेवा बेटाक धर्म नइ छी? पितासँ कम माए होइत?

..मन ओझराए लगलैन। मुदा कनी घुसैक कृष्ण दिस चलि गेलैन। कृष्णपर जाइते हँसी लगलैन। ठोर पटपटेलैन- “नान्हि-नान्हिटा छौड़ा बड़का-बड़का जहलक छहरदेबाली तोड़ि बहरा जाइत अछि, मुदा जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकेँ नचौनिहार छैथ, हुनका बुते उक्खैरक बन्हन नै टुटलैन!”

छगुन्तासँ भैया-कक्काक नजैर निच्चाँ हुअ लगलैन मुदा लगले बदैल गेलैन। नजैर बदैलते जोरसँ हँसी लगलैन। मनमे एलैन शिवजी। हद केलैन ओहो, शिवसँ शिवानियोँ बनैमे देरी नै लगलैन!

फेर घुमि कऽ भैया-कक्काक मन जीवानन्देपर चलि एलैन। जाधैर जीवानन्द सन-सन बेटा समाजमे नै जन्म लेत ताधैर समाजक उन्नति कागतपर बनौल फूल-फलक गाछ सदृश रहत। जइ समाजक लोक पाबैनक पाछू पनरह-पनरह दिन पहिनहिसँ लागल रहैए। तहूमे एकटा नहि, केतेको पाबैन सालक भीतर अछि! जेकर खर्चाक बाट तँ चौड़गर देखै छिऐ मुदा आमदनीक बाटपर नजरियो ने गेलै हेन। कियो चारि बजे

भोरे स्नान कऽ लाइ-मुरही खेलक तँ कियो चारि बजे बेर झूकैत दतमैन करत। की चारि बजे भोरक सुरूज, चारि बजे अपराह्नोमे रहै छैथ? सुरूज तँ महाविशाल छैथ। तखन मौसम किएक बदलैए? की तइ सदृश मनुक्खक नइ अछि?

रस्ते कातक बँसबिटीमे दतमैन तोड़ि, रस्तेसँ दतमैन करैत जीवानन्द आँगन आबि बाल्टीन-लोटा लऽ सोझे कलपर पहुँचल। हाँइ-हाँइ कुड़ुर कऽ अदहे-छिदहे नहा आँगन आबि पीढ़ीपर बैस पत्नीकेँ कहलक- “पहिने लाइ-मुरही आ तिलबा नेने आउ।”

“आब कल्लौ खाएब आकि भुज्जा-भर्री खाएब।”

“हद करै छी अहूँ, भोरुका स्नान अखन केलौं आ खाइबेरमे साँझ पड़ि गेल। सभ सखी सासुर गेल हमरा लेखे चैत पड़ि गेल! ठीके लोक कहै छइ। भिनसरसँ बारह बजे धरि लोक जलखै बेर बुझैए आ बारह बजेसँ पहिल साँझ धरि कलौक समय। जइ समैयक काज पछुआ गेल पहिने ओकरा ने पुराएब। जँ से नै करब तँ दुनियाँक संग केना चलि सकब?”

पतिक बात सुनि सुधा भरि थारी चूड़ा-मुरही आ लाइक संग-संग तरुओ-तरकारी घरसँ आनि आगूमे रखि ठाढ़ भऽ गेली। भरल थारी देखि मुस्कियाइत जीवानन्द बाजल- “एते किए अनलौं। वीधे पुरबैक अछि। जहिना ‘नहि पान तँ पानक डण्टियोसँ काज चलैए तहिना लाइ-मुरहीक वीधे पुराएब। मुदा खिचड़ियो तँ लइये भऽ गेल हएत?”

पतिक बात कटैत सुधा बजली- “नइ, जखन अबैक चाल-चूल पेलौं तखन खिचड़ी बनेलौं। धिपले अछि।”

“तखन तरुआ किए पानि भेल अछि?”

“तरकारी आ तरुआ सबेरे बनेलौं, तँए सेराए गेल अछि।”

दू-तीन फँक्का फकिते जीवानन्दकेँ तरास जोर केलक। गिलास भरि पानि पीब निच्चाँमे रखिते रहए कि सुधा पुछलखिन- “तिलासंक्रान्तिमे सभ अपन-अपन बहिन ऐठाम पबनौट लऽ कऽ जाइए, अहाँ छोड़ि देबइ?”

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन थारीसँ हटि बहिनपर पहुँच गेल।

सासुर बसैसँ पहिलुका बहिनपर नजैर पड़िते मोन पड़लै, गठुलाक टाटपर सँ केना तिलकोरक पात तोड़ि आनि माएकेँ तड़ैले दइ छल। जहन भानस करै-जोकर भेल तँ केते सिनेहसँ तरुआ तरि बहिन खुअबै छल। ..उझूक मारि-मारि पत्नीक बात मनमे उठए लगलै- जँ एक्के दिन अपनो बेटाक बिआह आ साढ़ूओक बेटाकेँ बिआह होइ, तँ की करैक चाही? विचारमे अबिते अपना दिस तकलक। पाबैनक दिन छी, बेर झूकि गेल मुदा नहाइयोक छुट्टी नइ भेल। अखनो धरि चैन नइ भेलौं। भैया-कक्काक तिल-चाउर पछुआएले छैन। की हमरा हिस्सामे पैघ लोक लग बैस एक्को घन्टा बुझै-सुझैले नै अछि? सदिखन काजक टिकटिकिया कपारपर चढ़ले रहैए!

..जीवानन्दक मन घुमि कऽ भरदुतियापर पहुँचल। ठाँउ कऽ अरिपन बना, पीढ़ी धोइ बहिन केहेन आसन बनबैए। तैपर बैस जोड़ल दुनू हाथ धोइ सिनुर-पिठार लगा फूल-पान रखि अराधना करैए! की ओइ बहिनकेँ बिसैर जाएब? कथमपि नहि। मुदा बहिनो की हमरासँ अधला जिनगी जीबैए। सभ तरहेँ ओ नीक अछि। भागिन कौलेजमे पढ़ैए। केहेन ठाठसँ भगिनियोँक बिआह केलक। अपन सभ लूरि सिखा माए अपने जकाँ बना देने छइ। कोनो चीजक कमी छइ। ओ कि हमरे पबनौटक भरोसे हएत? जीवानन्दक मनमे खुशी एलइ। मुस्की दैत बाजल-

“आइ तँ सभठाम पाबैन छीहे। कोनो कि दुइर होइबला वौस अछि। काल्हि भोरे गेलासँ एते तँ हएत जे सबहक एक-दिना तरुआ हमरा दू-दिना हएत।”

बाजि जीवानन्द हाँइ-हाँइ खा कऽ भैयाकाका ऐठाम विदा भेल।

अखन धरि भैयाकाका आँखि बन्न कऽ चौकीपर विचारमे डुमले छला। फरिक्केसँ जीवानन्द टोकलकैन-

“गोड़ लगै छी काका, तिल-चाउर खाइले एलौं हेन।”

जीवानन्दक बोली सुनि भैयाकाका आँखि खोलि असिरवाद दैत बजला- “बहुत दिन जीवह जीवानन्द। हम तँ लटैक गेलियह। देहसँ कम्मो लटकलौं मुदा मनसँ बेसी लटैक गेलौं। बुझि पड़ैए जे लहास ढोइ छी।

अनेरे अनकर हिस्सा अन-पानि दुइर करै छिऐ। मुदा तरे-तर गणेशजी जकाँ पेट फुलल जाइए। भने तूँ आबिए गेलह। होइए जे टन-दे परान तियागि दी। मुदा पेटक जे औंकरी सभ अछि ओ जाधैर नै निकलत ताधैर परानो केना छुटत?”

हँसैत जीवानन्द कहलकैन- “औंकरी तँ लोक छठिमे घाटपर खाइए। अहाँ आइयो खुआएब तँ खुआ दिअ।”

भैयाकाका-

“जहिना जनमौटी बच्चाक मल मृत्युकाल निकलैए तहिना छोटका बाबाक खुऔल औंकरी तोरा दऽ दइ छिअ। अपन गामक चारिम बसान छी। शुरूमे दू परिवार धारक मुँह बदलने आबि कऽ बसल। खेती शुरू भेल। जानवरक उपद्रवक संग-संग मनुक्खोक उपद्रव शुरू भेल। अपन रच्छा-ले उपजौनिहार तैयार भेल। मुदा सोलहन्नी रच्छा तैयो नै भऽ सकल। पानिक सुविधा दुआरे गाम धुधुआ कऽ बढ़ल। जानवरो आ मनुक्खोक उपद्रवसँ बँचैले बलक जरूरत भेल। गाम-गाममे अखड़ाहा बनए लगल। लोक कुश्ती लड़ि अपन शक्तिक परिचय दिअ लगल। गामे-गाम डंको पड़ए लगलै। तहिये-सँ तिलासंक्रान्तिक दिन अपनो गाममे डंका शुरू भेल।”

भैयाकाका बजिते रहैथ कि जीवानन्दक मुहसँ निकलल-

“काका, अपन बात कनी रोकि कऽ राखू। हम बिसैर जाएब।”

मुस्की दैत भैयाकाका कहलखिन-

“बाजह?”

जीवानन्द बाजल-

“पाबैनक दिन रहने मन छनगल रहए। तमोरियामे इलाज शुरू होइते रतुपारवाली भौजीकेँ खलास भऽ किछु सुढ़ियाएल देखि ड्योढ़वाली-काकीकेँ गाम पठा देलिऐन। मन खुशी रहबे करैन। होइन जे के पहिने भेँट हएत जेकरा सोझहामे पेटक गुदगुदी बोकैर दिऐ। संयोगो नीक रहलैन। मदनावालीकेँ आँगनसँ मुड़ियारी दैत देखलखिन। छुतका दुआरे हाँइ-हाँइ अँगनेक चूल्हिपर लोहियामे तरकारी तड़ै छेली। सोझहामे

देखि ड्योढ़वाली-काकी ससैर कऽ आँगन बढ़ली।

नजैर पड़िते मदनावाली भौजी आग्रह करैत कहलकैन- 'एत्तै आबथु काकी।' बिना पएर-हाथ धोनहि चूल्हिक पाछूमे बैस गेली। तीनसल्ला अरूआक तरुआ बढ़बैत कहलकैन- 'काकी कनी नून देखि लेथुन।' दुनू गोरे चूल्हिए लग बैस खाए लगली।"

जीवानन्दक बात सुनि ठहाका दैत भैयाकाका बजला-

"अच्छा, तोहर बात भऽ गेलह। आगूक सुनह। केवल अपने गामटा मे नहि, आनो-आनो गाममे डंका होइ छेलइ। तीन बजे भोरेसँ ढोलिया गाछपर चढ़ि वा बड़की पोखैरक महारपर सँ ढोल बजबए लगइ। बेरुका समयमे डंका होइ छेलइ। किछु दिनक पछाइत रुपैआक प्रवेश भेने डंका दंगलमे बदैल गेल।"

बिच्चेमे जीवानन्द बाजल-

"दू साल पहिने तक तँ होइ छेलैए।"

जीवानन्दक बात सुनि कनीकाल गुम्म रहि भैयाकाका कहए लगलखिन-

"जाधैर मालिककेँ मालगुजारीए धरि होइ ताधैर गाम शान्त छेलइ। मुदा जखन मालगुजारी तरे लोकक खेत निलाम हुअ लगलै तखन ओ पएर पसारए लगल। महाजनी सेहो करए लगल। छपरिया सिपाहीक आगमन गाममे भेल। पहिने तँ ओ कचहरियेक हातामे अखड़ाहा खुनि लड़इ। मुदा किछु दिनक पछाइत गामक डंका अपना अखड़ाहापर लऽ गेल। साले-साल डंका करबए लगल। एकाएकी परोपट्टाक खलीफा पीठ देखबए लगल। अपन इज्जत बँचा हम मकरक रविकेँ डंका करबैत रहलौं। मुदा ओ सभ डंकामे बलउमकी करए लगल। साले-साल झंझट हुअ लगलै।"

भैया-कक्काक बात सुनि जीवानन्दक आँखि भरि गेल। जीवानन्दक भरल आँखि देखि भैयाकाका आगू बजला-

"जाधैर छोटका बाबा छला ताधैर कोनो गम नै छेलए। ओना समैयो करोट लेलक। समयकेँ दहिन होइते शक्ति बढ़ए लगल। तिला-संक्रान्तिसँ अढ़ाइ मास पहिने मन बेकाबू भऽ गेल। पुरने अखड़ाहाकेँ छील-छालि

खुनलौं। लपटनिहार सभ संग दिअ लगल। मालिकक खलीफाकेँ माटि पठा कहलिऐ जे जँ एक माइक दूध पीने हुअए तँ कचहरीक हातासँ बाहर आबि जेतए ओकरा फरियबैक होइ, फरिया लइत। देशक हवा देखि बुझि पड़ल जे सभ जागल अछि, केवल हमहींटा मुरदा भेल छी।"

जीवानन्द बिच्चेमे टोकलकैन- "तखन की भेल?"

भैयाकाका कहए लगलखिन- "ओहो लक्ष्मण रेखा माने सरकारी हाता छोड़ि बाहर अबैक मानि लेलक। डंका भेल मुदा बाह रे संतोष ढोलिया। ओइ दिनक ओकरो हाथकेँ धैनवाद दी जे जहिना कुरुक्षेत्रमे कृष्णक शंखक आवाज रहैन तइसँ मिसियो भरि कम ढोलकक आवाज नहि। कहैले तँ अधिक गामेक देखनिहार रहैथ, कुश्ती देखनिहार, रहैथ मुदा संख्या कम रहइ। तहूमे ओहन देखनिहार बेसी रहए जे ओइ खलीफाक पीठि ठोकैत। मुदा नजैर पड़िते देखि लेलिऐ जे मुँहक ठोर कारी सियाह छइ। मुदा जहिना आगिमे घी देलासँ आगि उठैत तहिना मनमे उत्साह उठल। लंगोटो नै पहिरए लगलौं, धोतीए-क ढट्ठाकेँ बरहा जकाँ बाँटि कसि कऽ बान्हि लेलौं। एमहर ढोलपर संतोष आवाज दिअ लगल- 'चट-धा, गिड़-धा, चट्-धा गिर-धा...।"

'आवाज सुनि कुदि कऽ अखड़ाहापर गेलौं। मनमे उठल जे अनेरे हाथ की मिलाएब। बाँहि पकैड़ लेलिऐ!"

ढोलिया हाथ बदललक- 'ढाक्-ढिना, ढाक-ढिना, ढाक-ढिना..।' बजबए लगल। ढोलक आवाज तँ दहिन रहए मुदा देखनिहारक आवाज वाम भऽ गेल। फेर ढोलिया हाथ बदललक-

'चट्-गिड़-धा, चट-गिड़ धा, चट-गिर धा..!" हमरो साहस बढ़ल। भय मनसँ निकैल गेल। मुदा माटिपर चलि गेलौं। माटिपर जाइते संतोष फेर हाथ बदललक, मेही आवाजमे बजबए लगल-

'धाक्-धिना, तिरकट-तिना...। धाक्-धिना, तिरकट-तिना...।' माटि परहक दाउसँ ऊपर भेलौं। उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। देखनिहारक आँखि सेहो बदलल। ऊपर होइते ढोलिया मोट आवाज आ भौड़ी आवाजमे बजबए लगल- 'चटाक-चट-धा, चटाक-चट-धाऽ ऽ।'

आवाजेक संग ओकरा उठा कऽ पटैक देलिऐ। मुदा पीठ गरे खसल। माटिपर खसिते ताल बदललक-

‘धिक-धिना, धिक-धिनाऽ ऽ ऽ।’

आवाज सुनि धाँइ-दे चित केलौं। चित्त करिते ढोलसँ आवाज निकलए लगल-

‘धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़..!’

भैया-कक्काक बात सुनि बिच्चेमे जीवानन्द बाजल-

“काका, अहाँ एहेन चैनक समुद्रमे पहुँच गेल छी जे मगन भऽ जीबैत हएब?”

‘मगन’ सुनि भैया-कक्काक हृदय बाढ़िसँ उमड़ल गंगा जकाँ जे अपन घर छोड़ि गाछी-बिरछी, खेत-पथारमे पहुँच पवित्र करए लगैत, तहिना भऽ गेलैन। विह्वल होइत भैयाकाका बजला-

“बौआ, तोरा देखि हृदय शान्तसँ प्रशान्त भऽ जाइत अछि आब तँ तोरे सभपर छहरो-महर हएत आ दारो-मदार अछि। मुदा हवाक गन्दगी तेना ने बिहाड़िमे पसैर गेल जे एक्को क्षण जीबैक मन नै होइए। लीला सभ जे देखै छी तँ शूल जकाँ सदिखन हृदयकेँ बेधैत रहैए। आजुक पीढ़ी जीवनक रस्तासँ एते दूर हटि रहल अछि जे मनुक्खक औरुदा साए बर्खसँ घटि कुत्ताक औरुदा–बारह बर्ख–मे बदलल जा रहल अछि! दुख एतबे नइ होइए, जे औरुदेटा घटि रहल छै, मनुक्खक वृत्तियो टुटि-टुटि ओम्हरे जा रहल छइ। जइ रूपक बेवहार भऽ रहल छै ओइ सभसँ आगम बुझि पड़ैए जे माए-बाप, भाए- बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार ऐ रूपेँ नष्ट भऽ रहल अछि जे साधना-भूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य...।”



शब्द संख्या: 2401

संगी

बालिग-नबालिगक सीमापर पहुँचल सुशील सतरह बर्ख सात मास पार कऽ चुकल। पाँच मासक उपरान्त बालिग भऽ जाएत। शुक्र दिन रहने चारि किलासक आशासँ समैपर कौलेज विदा भेल। संयोगो नीक, कौलेजक हातामे पहुँचते घन्टी बजल। वर्गमे बैसल बहुतो संगीक बीच सुशीलो। पहिल घन्टी फोंक गेल। दोसरो-तेसरो-चारिमो तहिना। एक्को घन्टी पढ़ाइ नै देखि कियो खुशीसँ समय बितबैत तँ कियो बन्न कोठरीमे जेठक दुपहरिया बिनु पंखे बितबैत रहए। ओइमे सँ एक सुशीलो।

कनैत मने सुशील किलासक कोठरीसँ निकैल डेरा दिस विदा भेल। मनमे एलै, की हमरा सबहक जिनगी पोखैरक पानि जकाँ चारूभरसँ घेराएल अछि वा पहाड़सँ निकलैत नदी जकाँ समुद्र दिस बढ़ैए?

डेरा एलाक उपरान्तो सुशीलक मनमे बेचैनी बढ़िते गेल। उन्मत्त सुशील किताब-कॉपी रैकपर फेकैत बिनु देहक कपड़ा आ पैरक चप्पल खोलनहि चौकीपर ओंघरा गेल। जेना मन काबुए-मे ने होइ तहिना बेसुधि। पहिल घन्टीक पढ़ाइ किए ने भेल? नजैर दौड़ौलक तँ देखलक जे ओइ विषयक तँ शिक्षके नइ छैथ तँ पढ़ैबतैथ के? मनमे हँसी उपकलै, मुदा फेर मन घुमलै। बिनु शिक्षकक शिक्षण-संस्था केना चलि सकैए। की एकरा प्राइवेट संस्थाक बाट खोलब नै कहबै? की सार्वजनिक शिक्षण संस्था बाघक खाल ओढ़ल संस्था तँ ने छी! मन घुसैक दोसर घन्टीक विषयपर पहुँचलै। एगारह साए विद्यार्थीक बीच एकटा प्रोफेसर छैथ। तहूमे जहियासँ इन्चार्ज ओ भेला तहियासँ किलासक कोन बात जे विभागक स्टाफो रूम छोड़ि प्रिंसिपलेक कुरसीपर बैसए लगला। जहिना ईंटाक देवाल लेटरीन आ कीचेनक दूरी बनबैत तहिना छात्रक पढ़ाइ आ नव वेतनक हिसाब दूरी बनौने। अधखिलल फूल जकाँ, जेकरा ने कोंढ़ी कहबै आ ने फूल तहिना सुशीलक मन बीचमे पड़ल। मनमे उठलै मधु दइबला

माछीकेँ विधाता ओहन डंक किए देलखिन? मुदा मन तेसर घन्टीक विषयपर गेलइ। तीन शिक्षक, तखन किए ने पढ़ाइ भेल। ई तँ ओहन विषय छी जे बिनु पढ़ौने विद्यार्थीकेँ बहुत अधिक कठिनाइ हेतइ। प्रोफेसरपर नजैर पड़िते देखलक जे के एहेन वेपारी हएत जे समय पाबि अपन सौदाकेँ महग करि कऽ नै बेचत। एहेन काज तँ वएह वेपारी कऽ सकैए जेकर मन वैरागी होइ। मुदा मन ठमकलै। ने आगू बढ़ै आ ने पाछू हटैले तैयार होइ।

..जहिना जीरो डिग्री अक्षांससँ सुरूज मकर रेखा दिस बढ़ैत तँ कर्क रेखा दिस विपरीत समय हुअ लगैत, तहिना तँ ने भऽ रहल छइ? एक दिस घर-घर शिक्षा आ दोसर दिस सोनो-चानीसँ महग! जहिना गरीबक घरसँ सोनाकेँ दुश्मनी छै तहिना की शिक्षोक भेल जा रहल छइ? मन आगू बढ़ि चारिम घन्टीपर पहुँचलै। तीन शिक्षक तँ ओहू विषयक छैथ। तखन किएक ने पढ़ाइ भेल? एक गोरे सीनेटक चुनावक तिकड़ममे लगल छैथ मुदा तैयो तँ दू गोरे छैथे। एक गोरे तेरहम दिन रिटायर करता! मनमे खुशी उपकलै। जहिना मरै समय किछु दिन लोक दुनियासँ कारोबार समेट घरक ओछाइन धड़ैए तहिना तँ हुनको धड़क चाहिऐन। सोगेसँ ने रोग होइए। तेरहे दिनक उत्तर दरमाहा अदहा भऽ जेतैन। समय तँ अहिना जहिना बिनु पढ़ौने, कौलेज नै एने बितलैन, रहतैन। तँए सोग होएब अनिवार्य आ काज नै करब आवश्यक छैन्हे। मुदा तेसर तँ ऐ सभसँ अलग छैथ। ओ किए ने एला?

..नजैर दौगैबते सुशील देखलक जे ओ तँ सप्ताहमे एक दिन आबि छबो दिनक हाजरी बनबै छैथ। शनि तँ काल्हि छिऐ आइ केना अबितैथ? एते मनमे अबिते सुशीलक आँखि झलफलाए लगल। मन खलियाएल बुझि पड़लै। उठि कऽ चप्पलो आ पेंटो-शर्ट खोललक। लूँगी बदैलते पानि पीऐक मन भेलइ। कोठरीसँ निकैल कलपर हाथ-पएर-मुँह धोइले गेल। पानि पीबते मन हल्लुक बुझि पड़लै। मुदा जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बुझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक वोनाएल रूप देखलक। कौलेजकेँ बीचमे देखि नजैर सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तँ दोसर गामक टटघरबला

स्कूलपर। जहिना पहाड़सँ निकैल अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जा मिलैए तहिना ने टटघरोक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत। एते विचार अबिते गाछसँ गाछ टकराइत आगिक लुत्तीकेँ छिटकैत देखलक। ई लुत्तीक आगि तँ कोसक-कोस सुखल लकड़ीक संग-संग लहलहाइत फूलल-फड़ल गाछकेँ सेहो जरा दैत अछि..!

जहिना सघन वोनमे रस्ताक ठेकान नइ रहैत तहिना सुशील कोनो रस्ते ने देखए। मन अपन उमेरपर गेलइ। सतरह बर्खसँ ऊपर, अठारहमक बीच। अठारह बर्ख पुरलापर चेतन भऽ जाएब। मुदा हमर चेतना कहिया जागत जे बाहरी दुनियाँकेँ अंगीकार करब, आकि देखि कऽ छोड़ि देब? स्कूल-कौलेजक पढ़ाइक तँ यएह गति अछि।

..जहिना एक-एक ईंटा जोड़ि विशाल अट्टालिका बनैए तहिना ने कनी-कनी सीख बाल चेतनाकेँ पैघ बना सकै छी। ई के करत? ई तँ अपने केने हएत। मन शान्त भेलइ। नजैर देलक गामक ओइ बच्चापर जे माइक मुहसँ ‘लुक्खी’ सीखैए आ स्कूलमे प्रवेश करिते ‘गिलहरी’सँ भेँट भऽ जाइ छइ! की हमर मातृभाषा गामो धरि नै अछि? की हिमालय पहाड़सँ गंगा कुदि-कुदि रस्ता टपि समुद्रमे पहुँचैए आकि नीच-ऊँचक रस्ता टपैत समुद्रमे पहुँचैए। ज्ञान-कर्मक बीच भक्ति होएत। की बच्चाकेँ कर्मरूपी माएसँ सीख ज्ञान रूपी गुरुसँ मिलि पबैए। जँ से नहि, तँ माए-बाप गुरु केना..?

गामक स्कूलसँ सुशीलक नजैर हटि मिडिल स्कूल आ हाइ-स्कूलपर पहुँचलै। केतौ हाइ-स्कूलसँ किलास काटि मिडिल स्कूलमे जोड़ाइत अछि तँ केतौ कौलेजक किलास हाइ-स्कूलमे। मनमे उठलै- जहिना किलास तँ कटि कऽ चलि अबैत तहिना शिक्षको अबैत अछि? पढ़निहार तँ विद्यालय पैदा कऽ दैत अछि मुदा पढ़ौनिहार केना...।

आगू बढ़ैत सुशीलक मन कौलेजमे नै अँटैक विश्वविद्यालय पहुँच गेल। मनमे उठलै जिनगीक पाँचम (भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्साक उपरान्त) आवश्यकता शिक्षा छी। ओना शिक्षण संस्था अनन्त अछि। मुदा एक सीमाक भीतर सेहो अछि। कियो अपना डेरापर पोथी उलटा प्रश्नक जवाब अपन परीक्षाक काँपीमे लिखैए तँ कियो पढ़ाइक अभावमे प्रश्नपत्रो

ठीकसँ नइ बुझि पबैए। की ऐ दौड़मे के आगू बढ़त? कियो मार्कसीटे कीनि लैत अछि। की शिक्षा सन समस्याकेँ बेदरा-बुदरीक खेतमे बनौल गरदा-गुरदीक घर-आँगन छी? चिन्तासँ चिन्तित सुशील निराश भऽ ओछाइनपर ओंघराएले रहल। चिन्ताक वनमे चिन्तनक गाछ केतौ देखबे ने करए जइसँ आशाक फल देखैत। सुतल शरीर आरो सुति रहल।

कौलेजसँ आबि वसन्ती कोठरीमे किताब-कॉपी रखि सोझे माए लग पहुँचल। जलखैक छिपली वसन्तीक आगूमे बढ़बैत माए पुछलखिन-

“बुच्ची, उदास किए छह?”

अपनाकेँ छिपबैत वसन्ती बाजल-

“नहि, उदास कहाँ छी।”

वसन्ती अपन वसन्ती-बहारकेँ छिपबैक कोशिश करैत मुदा जहिना शरीरक रोग तरे-तर बिसबिसाइत रहैए तहिना मनक रोग वसन्तीकेँ बिसबिसाइत रहइ। मनमे नचैत रहै कौलेजक पढ़ाइ आ अपन जिनगी...।

सुशील आ वसन्ती संगे पढ़ैत। पढ़ाइ नै हेबाक सोगसँ सोगाएल वसन्ती माएसँ आगू गप्प नै बढ़ा बिस्कुट खा चाह पीब चुपचाप अपन कोठरीमे आबि उतान भऽ ओंघरा गेल। सिरमापर माथ देने दुनू बाँहि समेट कऽ मोड़ि छातीपर रखि अपन जिनगी दिस देखए लगल। आजुक शिक्षा लऽ कऽ की करब? माए-बापक संग जे अन्याय भऽ रहल अछि, की ओ एक इमानदार बेटीक दायित्व नै बनैए जे आगूमे आबि ठाढ़ हुअए? आजुक शिक्षाक रूप एहेन बनि गेल अछि जे सरकारी स्कूल-कौलेजमे पढ़ाइ नै भऽ रहल अछि। तैपर एते महग शिक्षा भऽ गेल अछि जे अपन बेटा-बेटीक शिक्षा-ले बाप-माए अपन जिनगी तोड़ि, खूनक घोँट पीब कऽ जीवन-बसर करै छैथ। जेकर परिणाम की भेटै छैन तँ जेहो अपन बनौल आकि पूर्वजक देल सम्पैत रहै छैन, बेटीक बिआह करबैमे देमए पड़ै छैन! बीस लाख रुपैआ खर्च कऽ डॉक्टरीक शिक्षा बेटीकेँ दियाउ आ तैपर सँ बीस लाख बिआहोमे चाही। ओइ डॉक्टर सभसँ पुछै छिऐन जे देशक प्रथम श्रेणीक नागरिक होइतो अपन अन्याय नै रोकि सकै छी तँ की आशा अहाँसँ कएल जा सकैए जे माघक शीतलहरीमे जाड़-भूखसँ ठिठुरल

बच्चाकेँ जीबैक उपए अहाँ कऽ सकबै?

वसन्तीक मन आगू बढ़ि अपनापर एलइ। बी.ए. पास कऽ शिक्षिका बनब। पति या तँ किसान, वेपारी आकि नोकरिहरे किएक ने होथि महिलाक संग जे असुरक्षा बढ़ि रहल अछि, ओइमे केते गोरे अपनाकेँ सुरक्षित बुझि रहल छैथ। की कौलेज-हाइ-स्कूलक विद्यार्थी अपन अध्यापिकाकेँ ओहने नजैरसँ देखैए जइ नजैरसँ अध्यापककेँ। की अदौसँ अबैत हमर संयुक्त परिवारक सामाजिक ढाँचा रूपी धरोहर, गाछसँ खसल पाकल कटहर जकाँ–आँठी उड़ि केतौ, कोह उड़ि केतौ, कमड़ी खोइचा थौआ भेल एकठाम आ नेरहा ओंघराइत केतौ–आँखिक सोझहामे नष्ट भऽ जाए! ऐ दुखद घटनाक जवाबदेह के? गामक बच्चाकेँ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरि एते तरहक गाड़ीक आवाजसँ लऽ कऽ लॉडस्पीकरक आवाज धरि कानमे पड़ैए। जैठाम गप-सप्प करब कठिन भऽ जाइत अछि तैठाम पढ़ाइक की दशा होएत!

एते बात मनमे उठैत-उठैत परा-अपराक क्षितिजपर वसन्ती अँटैक गेल। जहिना शिशिर-ग्रीष्मक बीच वसन्तक स्वागत गाछपर बैस कोइली अपन जुआनीक अगराइत राग-तानसँ करैए तहिना वसन्तीक स्वागत-ले होरी खेलाइत राधा-कृष्ण सेहो वृन्दावनमे प्रतीक्षा कऽ रहल छैन। अबीर उड़बैत राधा अपन पौरुख देखबैत अखाड़ाक माटि लऽ हाथ मिलबए चाहै छैथ तँ कृष्ण पाछू घुसकैत पिचकारीक निशान साधि कखनो गुलाबी रंग फेकए चाहै छैथ तँ कखनो हरिअरका। आँखिपर नजैर पड़िते कारी रंग तँ मनमे अबैन मुदा निशाने साधैक बीच राधा सतरंगा अबीर मुँहपर फेक देलकैन। मुँहपर अबीर पड़िते दुनू हाथे कृष्ण मुँह-कान पोछए लगला, आकि हाथसँ पिचकारी खसि पड़लैन। खसिते राधा आगू बढ़ि दुनू बाँहि पसाइर हृदयसँ लगबैत विह्वल भऽ निराकार-साकारक बीच दुनू हँसए लगला। ..नमहर साँस छोड़ैत वसन्तीक मनमे उठल- ऐ धरतीपर किछु करए लेल संगीक जरूरत अछि। जाधैर पुरुख-नारी मिलि अपन समस्या-ले अपन पौरुखकेँ नै जगौत ताधैर सपना साकार केना भऽ पौत..?

ओछाइनसँ उठिते सुशील सुरूजक किरिणकेँ देखए लगल। देवालक भुरकी-देने रोशनी कोठरीमे प्रवेश करै छल। सुरूजक ओ रूप

नहि, जैठाम आँखि नै टिकैत। मुदा कोठरीक रोशनी ओहन नहि, पातर-कोमल। ..बिजलौका जकाँ सुशीलक मनमे उठल पुरुख-नारीक बीच सृष्टि निर्माण करैक शक्ति अछि तखन जँ ओ नान्हि-नान्हिटा समस्यामे ओझरा जाए, केतेक लाजिमी..! कोठरीसँ निकैल सुशील वसन्तीसँ भेँट करैक विचार केलक।

प्राते भने सुशील किलासक संगी–वसन्ती–ऐठाम पहुँचल। टेबुलक एक कोणपर पोथी गैँटल। एकटा किताब आ कॉपी आगूमे पसरल आ पेन सेहो खोइल कऽ राखल, मुदा कुरसीपर ओंगैठ आँखि बन्न केने वसन्ती अपन वसन्ती-वहारपर नजैर अँटकौने। जहिना वसन्त साले-साल अबैए आ जाइए तहिना की मनुक्खोक जिनगीमे वसन्त अबैत आ जाइत अछि? कथमपि नहि। मनुक्खक जिनगी तँ ओहन होइए जइमे वसन्त एलापर जाइ नै छइ। दिनानुदिन बढ़ैत-बढ़ैत समुद्र जकाँ 'महा-वसन्त' बनि जाइत अछि। ..एते बात मनमे अबिते देह चौंक गेलइ। हृदय सिहरए लगलै। मुदा अपनाकेँ संयत करैत धियान वसन्त ॠृतुपर देलक। ॠृतुपर नजैर पड़िते देखलक जे एकठाम फसिल लागल चौरस खेत, सुन्दर-सुन्दर गाछसँ सजल बगीचा, जैपर खोंता लगा रंग-बिरंगक चिड़ै अपन मधुर स्वरसँ वसन्तक स्वागत करैए, तँ दोसर कोसीक बाढ़िसँ नष्ट भेल ओ इलाका जइमे बाउलसँ भरल ढिमका-ढिमकी बनल खेत, गाछ बिरीछक अभाव देखि कनैत चिड़ै रहैक ठौरक दुआरे छोड़ि पड़ा गेल। की ओइठाम चैत-बैशाखकेँ वसन्त ॠृतु नै कहल जाइत अछि? ..अथाह समुद्रमे वसन्ती कखनो उगए तँ कखनो डूमए। अनासुरती नोरसँ आँखि ढबढबाए गेलइ। ओढ़नीसँ वसन्ती नोर पोछिते छल कि सुशील कोठरीक दरबज्जापर सँ बाजल- "वसन्ती।"

'वसन्ती' कानमे पड़िते औगता कऽ कुरसीसँ उठि दुनू हाथ आगू बढ़बैत वसन्ती बाजल-

"सुशील।"

कुरसीपर सुशीलकेँ बैसा, अपने बगलक कुरसीपर बैसैत वसन्ती पुछलक- "पढ़ाइ-लिखाइक की हाल-चाल?"

सुशील- "कौलेज छोड़ैक विचार भऽ रहल अछि।"

सुशीलक बात सुनि अकचकाइत वसन्ती पुछलकै-

“किए?”

“कौलेज सहित शिक्षाक जे दुरगति देखि रहल छी ओइसँ मन दुखी भऽ रहल अछि। ऊपरी ढाँचा किछु देखि रहल छी आ भीतरी किछु आर छइ।”

सुशीलक बात सुनि वसन्ती बाजल-

“सिरिफ अहींटा दुखी छी कि आरो कियो?”

वसन्तीक बात सुनि सुशीलक विचार ठमैक गेल। कनी रहि कऽ बाजल-

“अखन धरि जे देखलौं ओइमे नगण्य दुखी भेटला आ अधिकांशकेँ कोनो गम नहि।”

“किछु तँ भेटला?”

“मुदा ओ कहिया तक संग रहता तेकर कोन ठीक। जँ रस्तेसँ घुमि जाथि आकि हलुआइक कुकुर जकाँ रसगुल्ला-जिलेबीक रस चाटए लगैथ।”

“अहाँ जे कहलौं ओकरो हम नै कटै छी मुदा एकर अतिरिक्तो किछु छइ?”

“से की?”

“जँ पुरुख-नारी मिलि सृष्टिक निर्माण कऽ सकैए तँ की कोनो बेवस्थाकेँ नै बदैल सकैए?”

“बदैल सकैए मुदा ओकरा-ले...।”

“हँ। ओकरामे पौरुख चाही। पौरुख सिरिफ पुरुखेक धरोहर नहि, मनुक्ख मात्रक छी। गललसँ गलल आ सड़लसँ सड़ल बेवस्थाकेँ हमहीं-अहाँ ने संग मिलि बदैल सकै छी।”

वसन्तीक बात सुनि, नमहर साँस छोड़ैत सुशील बाजल-

“ओहन संगी केतए भेटत?’’

“संकल्प स्थलपर।”

“ओ स्थल केतए अछि?”

“दुनियाँक एक-एक इंच जमीनपर।”

“संकल्पक विधान की?”

“आत्माक मिलन।”

कहि दुनू गोरे दहिना हाथ मिला संग-संग जीवन जीबाक वचन एक-दोसरकेँ देलक।



शब्द संख्या: 1849

ठकहरबा

भोरहरबेमे दादीक नीन उचैट गेलैन। लाख कोशिश केली मुदा दोहरा कऽ नीन नै घुमलैन। ओना, भोरुका समय वसन्ते जकाँ मधुआएल रहै छै मुदा ओहो की सबहक-ले एक्के रंग रहैए, दिन-राति काजक पाछू नचनिहारकेँ थोड़े वसन्त आ ग्रीष्मक भेद बुझि पड़ै छइ। दादीक मनमे एलैन जे अखने ललितक ऐठाम जा कऽ कहिऐ जे अखुनके माने भिनसुरके उखड़ाहामे चिमनीपर सँ पजेबा आ बेरुका उखड़ाहामे बाजारसँ एस्वेस्टस आनि दिहह।

मुदा भोरुका अन्हारक दुआरे दादीकेँ रतिगर बुझि पड़लैन। तैसंग मनमे ईहो एलैन जे जँ कहीं बिछानपर जाइ आ निन्न आबि जाए तखन तँ पहपैट हएत। मुदा एत्ती रातिकेँ जेबो केतए करब?

गुन-धुन करैत दादी निर्णय केली जे से नहि, तँ घरसँ ओछाइन निकालि अँगनेमे बिछा कऽ पड़ब नहि, बैस कऽ काजक गर लगाएब। सएह केली। काजपर नजैर दैते पजेबापर मन गेलैन। एक नम्मर रौंट ईंटा तँ तेते महग अछि जे कीनब थोड़े पार लागत। मन मन्हुआ गेलैन। जहिना दू-बट्टी, तीन-बट्टीपर पहुँचते बटोही अपन ऐगला बाट हियाबए लगैए तहिना दादियो हियाबए लगली। केते दिन जीबे करब जे एक नम्मर ईंटाक जरूरत पड़त? लऽ दऽ कऽ बीस-पच्चीस बर्ख आरो जीब। तइले तँ तीनियोँ नम्मर ईंटा नीके हएत। फेर मनमे एलैन जे कियो कि अपनेटा-ले घर बनबैए आकि बालो-बच्चा-ले बनबैए? मन ठमैक गेलैन। किछु फुरबे ने करैन। फेर मनमे उठलैन जे लोक काँच-ईंटाक घर केना बनबैए। ओहो तँ तीस-चालीस बर्ख चलिए जाइ छइ। ओइसँ नीक ने तीन नम्मर। कम-सँ-कम अध-पकुओ तँ रहैए। जेतबे नुआ रहए तेतबे टाँग पसारी। तीनियोँ नम्मर तँ ईंटे छी किने? हँ, हँ, तीने नम्मर ईंटा लेब।

दादीक मन आगू बढ़ि चदरापर माने एस्वेस्टसपर गेलैन। चदरापर

नजैर पड़िते मन झुझुआ गेलैन। सिमटीक तेहेन चदरा बनए लगल अछि जे सालो भरि चलत कि नइ चलत? जँ कहीं गोलगर पाथर खसल तँ चूरम-चूर भऽ जाएत। पहिने केहेन बढ़ियाँ टीनक चदरा अबै छेलै जे एक बेर घरपर दऽ देलासँ केते दिन ओहिना रहइ। मुदा ओहो बैशाख-जेठक रौदमे रहै-बला नै होइए। ओना जँ गतगर कऽ खरहीक छाड़ तरमे दऽ दियौ तँ कोठे जकाँ भऽ जाएत। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा बनियाँ सभ भऽ गेल अछि जे लेबालकेँ जे होउ अपन धरि तिजोरी भरल ताकी। खाएर जे हौउ, जे सबहक गति हेतै से हमरो हएत, तइले केते मगज चटाएब। पोह फटिते सुरूजक लाली देखि दादी ओछाइन समेट घरमे रखि ललितक ऐठाम विदा भेली। मोन पड़लैन, आठमे दिन अदरा नक्षत्र चढ़त। आठे दिनक पेसतर घर बनबैक अछि। जँ से नइ भेल तँ गिलेबापर जोड़ल देवाल ढहत-ढनमनाएत..! जे घर अखन अछि ओहो उजड़िए जाएत। तैबीच जँ बर्खा झहड़ल तँ जानो बँचब कठिन भऽ जाएत। ललितकेँ दरबज्जा नहि। भनसे घरमे सुतबो करैत। ठोकले दादी आँगन पहुँच ओलती लगसँ कहलखिन-

"गोसाँइ उगैपर भेलखिन आ तों सुतले छह?"

दादीक आवाज सुनि ललितक पत्नी–सुपती–उठि केबाड़क अदहा पट्टा खोलि चुपचाप बाड़ी दिस विदा भेली। ओसार टपि केबाड़क दुनू पट्टा खोलि ललितक देह डोलबैत दादी कहलखिन-

"ललित, ललित! उठह, केते सुतै छह!"

पड़ले-पड़ल आँखि मुननहि ललित बाजल-

"की कहै छी?"

"अखन धरि सुतले किए छह?"

ओछाइनपर सँ उठि दादीकेँ बैसबैत ललित अपनो बैसल आ बाजल-

"बड़ी रातिमे पुलिसक गाड़ी खोइर-बन्हामे लसैक गेलइ। भरि गाड़ी पुलिस रहए। केतबो बाप-बाप केलक मुदा गाड़ी नै निकललै। जेना जानि कऽ अनठा देलकै।"

बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, गालक मसुहैरपर दूटा इंच-इंच भरिक

पाकल केश, सोन सन उज्जर धप-धप केश, गरदैनक चमड़ा घोकैच कऽ लटकल दादीक। ठहाका मारि बजली-

“तोरा सन-सन लोकसँ की बेसी बुत्ता ओकरा सभकेँ होइ छइ। गाँजा पीब-पीब छाती फोंक कऽ नेने रहैए।”

मुँह चटपटबैत ललित बाजल-

“बड़ मोटगर-सोटगर सभ रहए?”

“धु: बतहा कहीं के, एतबो नइ बुझै छहक जे तखन थालमे सँ गाड़ी किए ने उखड़लै।”

मुँह डेढ़बरा कऽ ललित बाजल-

“उ सभ हाकिम रहै किने।”

“अच्छा, ई सभ छोड़ह। पाइ केते देलकह?”

“पहिने वएह पुछलक जे केते दिअ, ओना हमहूँ सभ सात-आठ गोरे रही मुदा हमरा छोड़ि सभकेँ होइ जे कहुना जान छोड़ए। सभकेँ सुक-पाक करैत देखिऐ। एक गोरे बाजि देलकै जे हुजूर सरकारीए पाइ छिऐ किने। एतबे सुनैत-मातर तरैंग कऽ एक गोरे बाजल- ‘रौ, बहिं, तुम पहचानता नहीं है।’ कहि पाइ आगूमे फेक विदा भऽ गेल।”

“सुआइत तोरा ओंघी दबने छह। हमहूँ काजे एलौं हेन। अखन तँ तूँ भकुआएल छह। पहिने मुँह-हाथ धुअ। काजक गप छी, तँए कनी असथिरसँ विचार करब। ओना अपनो मुँह-कानमे पानि नहियेँ नेने छी।”

“एह, तँ की हेतै दादी। एक दिन टुटलहो-फटलाहा घरक चाह पीब कऽ देखियौ।”

सुपतीकेँ कानमे फुसफुसा दादी चौमास दिस विदा भेली। जाबे दादी मुँह-कान धोइ कऽ तैयार होथि तइसँ पहिने ललित सुपतीकेँ चाह बनबैले कहि ओसारक बिचला खुट्टा लग पिढ़ी रखि दादीक बाट देखए लगल। अबिते दादी बजली-

“कलक पानि बड़ सुन्नर छह।”

कहि खुट्टामे ओंगैठ पिढ़ीपर बैस गेली। सुपती चाह नेने आबि

आगूमे रखि देलकैन। चाहक रंग देखि दादीक मन खुशी भऽ गेलैन। एक घोंट पीब बजली-

"तेहेन चाह छह जे एक्के उपे जलखै बेर तक रहब।"

ललित-

"आइ काज अनठा दियौ दादी।"

मुस्की दैत दादी-

"किए, घरमे सिदहाक ओरियान छेबे करह...। (मुदा लगले बात बदैल) कोन एहेन हलतलबी काज आगूमे छह जे आइ मनाही करै छह?"

मुँह दाबि सुपती बाजल-

"हिनका नै बुझल छैन जे आइ अलेक्शन छिऐ।"

सुपतीक बात जेना दादीक अँतरीमे छुबि देलकैन। जहिना आम तोड़निहार सरंगोलिया गोला आमपर फेकैत तहिना दादी फेकब शुरू केली-

"कोन फेरमे पड़ए चाहै छह, अपन दुख धन्धामे लगल रहह। सभटा ठकहरबा छी। एते दिन अपनो सएह बुझै छेलौं, मुदा आब बुझै छी जे ठकाइत-ठकाइत जिनगीए ठका गेल। (मुड़ी निच्चाँ कऽ) जहिया समाज खादी-साड़ी पहिरा 'माए जी' कहलक तहिया बुझि पड़ल जे समाज की छी। स्वर्गोसँ ऊपर। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा सभ भऽ गेल अछि जे बाजत ढेरी, करत किछु ने!"

ललित-

"अहाँकेँ किए समाज खादी पहिरौलैन?"

ललितक प्रश्न सुनि दादी विस्मित भऽ गेली। जहिना वोनमे जानवरक छोट-छोट बच्चा बौआ कऽ हरा जाइत तहिना आजादी समयक वोनमे दादी हरा गेली।

दादीकेँ विस्मित देखि ललितकेँ बुझि पड़लै जे दादी फेर केतौ औना गेली। तँए दोहरा कऽ नै पुछि जवाबक प्रतीक्षा ओइ रूपेँ करए लगल जइ रूपेँ माए बच्चाकेँ विद्यालयसँ अबैक आशा-वाटी करैत रहै छैथ।

..चौअन्निया मुस्की दैत दादी बजली- "दुरागमन करि कऽ आएले रही। बुड़हा-बुड़ही माने सासु-ससुर जीविते रहैथ। बेटा मात्रिक गेलैन। ओइठीनक लोक सभ झण्डा उठा खूब हुर-बड़ेरा करैत रहए। अपनौं हुनके सभ संगे वौर गेला। तीन मास बिता कऽ गाम एला।"

ललित- "बाबा बिगड़बो केलखिन?"

अपसोच करैत दादी बजली- "ओ सभ स्वर्ग गेला, हम नर्कमे छी। आगि नै उठेबैन। हँ, ई भेलै जे बुड़हो जोगारी छला। तरे-तर सरहोजिसँ सभ भाँज लगा लेने छला। जाबे गाम घुमि कऽ एला ताबे तँ एम्हरो लोक झण्डा उठा हरबिर्ड़ो करए लगल छल। आजादीक दस-बारह बर्खक पछाइत गाममे मलेरिया आएल। चारि अन्नासँ बेसीए लोक मरल। अपनो घर धंस भऽ गेल। तीनू गोरे–सासु-ससुर आ पति– मरि गेला। मात्र अपने आ छह मासक बच्चा-टा बँचलौं। ओही बेटाकेँ पोसि-पालि जुआन बनाएब अपन देशसेवा बुझलिऐ। खादी साड़ी पहिरैक यएह कारण रहए।"

मुस्की दैत सुपती पुछलकैन-

"नेता सभ जकाँ भाषणो करथिन?"

"बेसी तँ नै बाजल हुअए मुदा मंचपर दुनू हाथ जोड़ि एते जरूर कहिऐ जे 'हे बरहमबाबा गामक रच्छा करिहह।' मुदा सभ झूठ भऽ गेल! ने बरहमबाबा सुनलैन आ ने केकरो रच्छा भेलै!"

सुपती-

"खादीबला सभ भरि दिन झूठे बजैए?"

सुपतीक बातसँ दादीकेँ दुख नइ भेलैन। मुस्की दैत बजली-

"ओहिना कनी कऽ मन अछि। शुरूक तीन भोँटमे बहरबैया नेता सभ संग करि कऽ गाम घुमलैथ। जेतेकाल संगमे रहिऐन तेतेकाल गामेक गप-सप्प करैथ। गाममे ने नीक सड़क अछि आ ने बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूल। ने पानि पीऐक समुचित बेवस्था अछि आ ने दबाइ-दारूक। गाड़ी-सवारीक नाओंपर बैलगाड़ी अछि। एहेन समस्या सिरिफ अपने गामक नहि, इलाकेक अछि। सरकारक अपने बेवस्था लटपटाएल अछि। हरितक्रान्तिक पूर्व धरि पेटक दुआरे आन-आन देशसँ जनेर-गहुम मंगबए

पड़ै छेलइ।"

कनी चुप भऽ मन पाड़ि फेर- "तही बीच भूदानी आन्दोलन जागल। नारा देलक- 'जमीनक छबम हिस्सा दान दिअ' जइसँ गरीब लोककेँ बासक संग जोतो जमीन भेटतै। गामक-गाम दान हुअ लगल। मुदा अखन की देखै छहक जे जोतक कोन बात जे घराड़ियो सभकेँ नै छइ। (ठहाका मारि) सभटा मदारी नाच केलक।"

पटरीपर सँ दादीक बातकेँ उतरैत देखि ललित पत्नीकेँ कहलक-

"दादी बुढ़ छथिन, थकबो करै छथिन किने। शिखरक पुड़िया खोलियापर सँ नेने आउ?"

शिखरक नाओं सुनि दादीक मनमे उठलैन जे शिखर केहेन होइ छइ। आइ धरि नामो ने सुनने छेलिऐ। मुदा बजली नहि। चकोना होइत देखि ललित बुझि गेल जे भरिसक दादी 'शिखर' नै खेने छैथ। मुस्कियाइत बाजल-

"जहिना चाह पीलापर देहमे फुनफुनी आबि जाइ छै तहिना शिखरो खेने होइ छइ। इस्कुलिया विद्यार्थी सभ तँ भरि-भरि जेबी रखने रहैए।"

सुपतीक हाथसँ एकटा पुड़िया लऽ ललित दादी दिस बढ़ौलक। जहिना खच्चा-खुच्चीमे पानि देखि बकरी पाछू हटैत रहैए, तहिना शिखरक पुड़िया देखि दादीक मन पाछू हटलैन। मुदा नव चीज रहने सेहन्तो भेलैन। एक चुटकी मुँहमे दैते बुझि पड़लैन जे सरसरा कऽ कण्ठसँ निच्चाँ उतरल जाइए। तखने ललित पुछलकैन-

"अपनो गामक लोक जमीन दान केलक?"

ललितक बात सुनि खौंझा कऽ दादी बजली-

"कहबे तँ केलियह जे सभटा बानरक नाच केलक। एक गोरे समस्तीपुर दिसुका भूदानी नेता खोज करैत अपने ऐठाम एला। की कहिय हुनकर हाल। साँझू पहर जखन गप-सप्प करए लगैथ तँ बुझि पड़ए जे जहिना त्रेता युगमे रामराज रहै तहिना फेर कलयुगोमे भऽ जाएत। ने केकरो पेटक चिन्ता रहतै आ ने रोग-बियाधिक। मुदा ले सुथनी! भिनसरसँ दुपहर धरि ओकरा साबुन रगैड़-रगैड़ नहाइए आ कपड़े साफ करैमे लगि

जाइ। बेरू-पहर सभ कपड़ा सुखा, पहिर कऽ दिन लहसैत निकलै आ खाइ-पीऐ राति धरि भाषण करइ। एक पनरहियासँ बेसीए रहल। तैबीच अकच्छ-अकच्छ भऽ गेलौं। खादी भण्डारक मंगनी कपड़ा पबइ, सदिकाल बगुला जकाँ उज्जर धप-धप चेहरा बनौने रहए।”

ललित- “खादी भण्डारमे मंगनीए कपड़ा बँटबारा होइ छेलइ?”

“मंगनी केतौ होइ। गाम-गामक उद्योगकेँ उला-पका कऽ खा-पी कऽ चौपट कऽ देलक। गामक गाम लोकक रोजगार मरि गेल। एक तँ कोसी-कमलाक उपद्रव तैपर सँ जेहो छोट-छीन रोजगार गाममे चलै छल सभ चलि गेल। जखन लोककेँ गाममे पेटे ने भरत तखन केते दिन पेटमे जुन्ना बान्हि कऽ रहत। गामक-गामकेँ पड़ाइन लगि गेलइ। ने बच्चा सभकेँ पढ़ैक स्कूल अछि आ ने रोग-बियाधि-ले डखाना ।”

बजैत-बजैत दादी विस्मित भऽ गेली। आँखि बन्न भऽ गेलैन।

गुम-सुम देखि ललित टोकलकैन- “पहिलुका बात तँ छुटिये गेल, दादी?”

ललितक प्रश्न सुनि दादी मन पाड़ैत बजली-

“चारिम भोँट अबैसँ किछु पहिने मारिते-रास पाटी फड़ि गेल। कखनो कोनो रंगक झण्डा लऽ कऽ जुलुशो निकले आ सभो होइ तँ कखनो कोनो रंगक। जहिना आखिरी लगनमे छुटल-बढ़ल, बुढ़-पुरान, लुल्ह-नाँगर सभ पालकीपर चढ़ि लइए, तहिना भदबरिया बेंग जकाँ गामे-गाम नेता फड़ि गेल। ओना हम लिखा-पढ़ी करि कऽ कोनो पाटीक मेम्बर नइ भेल रही मुदा लोको बुझै आ अपनो मानैत रही। तँए मनमे अरोपने रही जे जेकरा जे मन फुरह से करह मुदा जहिना शुरूसँ रहलौं तहिना रहब। भोँट होइसँ पहिने केतेको गाममे मारि भेल। अपना गाममे भोँट दिनसँ पहिने तक तँ मारि नइ भेल मुदा भोँट दिन तेहेन मारि भेल जे लोककेँ पड़ाइन लगि गेलइ।”

बिच्चेमे सुपती पुछलकैन-

“हिनको कियो मारलकैन?”

“नै कनियाँ, हाथ तँ नै उठौलक, मुदा भोँट खसबै नै दिअए। हमर

भोँट केदैन खसा नेने रहइ। केते कहा-सुनी भेलापर अनके नाओंपर भोँट खसेलौं। भोँट खसा कऽ जखन घुमलौं तँ मनमे आएल जे आब भोँट खसबैले नै जाएब।”

अकचकाइत ललित कहलकैन-

“पाटीबला सभकेँ नै कहलिऐ?”

दादी बजली- “की कहितिऐ। संयोगो नीके बुझहक। ऐगला भोँटमे पार्टीक उम्मीदवारे ने ठाढ़ भेल। जान हल्लुक भेल। आन पाटी तँ मारिते रहै मुदा केकरा भोँट दितिऐ आ केकरा नै दितिऐ। तइसँ नीक जे बूथपर जाएबे छोड़ देलिऐ।”

हँ-मे-हँ मिलबैत ललित बाजल- “केकरो नफ्फा-नोकसान होउ, अहाँ तँ बँचलौं किने?”

ललितक बात सुनि दादीक आँखि नोरा गेलैन। मुहसँ बकारे ने फुटैत रहैन। कनीकाल चुप रहि बजली- “बौआ, पटना दिल्ली तँ कहियो मनोमे ने आएल मुदा गामोमे जहुना छेलौं तहुना नइ रहलौं। जइ समाजक लोक ‘माए जी’ कहै छेलए ओइ समाजमे लोक ‘राँड़ी’ कहए लगल। ऐ बातक दुख सदिखन मनकेँ बेथित केने रहैए!”

आँखि बन्न कऽ सोचमे डुबि गेली। किछु समय गुम्म रहि पुन: बजली- “गामे-गाम तेहेन अगराही लगि गेल छै जे शान्त हएब कठिन अछि। पुबारि गाममे खेतक झगड़ामे मारि भेल। से खूब मारि भेल। दुनू दिस केते गोरेकेँ कान-कपार झड़लै। एकटा खूनो भेलइ। मुदा अचरज ई भेल जे एहेन सना-सनी रहितो गौंआँमे सुबुधि जगलै। कियो कोट-कचहरी नै गेल। गामेमे फरिया गेल। अखन जँ ओना होइत तँ गाम उजैर जाइत। तेहेन-तेहेन मनुक्ख सभ बनि गेल अछि। जे सदिछन फोंसरीए तकने घुरैए।”

मुड़ी डोलबैत ललित बाजल-

“भोँटक दिन छी दादी। भोँटो खसबैक अछि। मुदा जखन अहाँ आबि गेलौं तखन पहिने अहाँक काज सम्हारि देब।”

दादी- “भोँट खसबैले थोड़े मनाही करबह। भिनसरसँ साँझ धरि

भोँट खसैए। पाँच बजेमे भोँट खसा लिहह।"

"ताबे तक भोँट बँचले रहत?"

"जे लड़ैए, ओकरा एतबो बुत्ता नै छै जे बूथ सम्हारि कऽ राखत। ओना भोँटे खसेने की हेतह। देखिते छहक जे कियो बक्से हेरा-फेरी कऽ लइए तँ कियो रिजल्टे बदैल लइए।"

"बेस कहलौं दादी। काका (दादीक बेटा) केतए रहै छैथ?"

बेटा-दे सुनिते दादीक मनमे खुशी एलैन। मुस्की दैत बजली-

"बौआ, पनरह-बीस बर्खसँ वौआइते-ढहनाइते छेलए। पहिने दिल्ली गेल। ओइठीन काज नइ भेलै तब बम्मै गेल। ओतौ नोकरी नइ भेलइ। तखन हारि-थाकि कऽ पाँच बर्ख पहिने कलकत्ता गेल। मुदा जहिना बम्मै पाइबलाक छी तहिना कलकत्ता गरीब लोकक छी। ओइठीन एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकानमे नोकरी भऽ गेलइ। दरमाहा तँ बेसी नै दइ छै मुदा साइकिल बनबैक सभ लूरि भऽ गेलइ। अपने दिगारक मिस्त्री छी। अपने बहिनसँ बिआहो कऽ देलकै। सुनै छी जे पुतोहुओ मिस्त्रियाइए करैए। दुनू बेकती एते कमा लइए जे अपनो गुजर करैए आ घर बनबैले रुपैओ पठा देलक हेन। सएह रुपैआ छी।"

"असकर-ले तँ अहाँकेँ एक्कोटा घरसँ काज चलि जाएत?"

"हँ, से तँ चलि जाएत। मुदा पुरजीमे लिखने अछि जे आब गामेमे रहब। पुरना जेते मिस्त्री अछि ओ सभ मोटर साइकिलक मिस्त्री भऽ गेल। जखन कि गामे-गाम साइकिलक पथार लगि गेल हेन। तहूमे तेहेन साइकिल अछि जे छह मासक उपरान्ते मिस्त्रीक काज पड़तै।"

ललित पत्नीकेँ कहलक-

"एकबेर आरो चाह बनाउ, दादीक संगे जाएब।"

सुपती- "घरमे दूध कहाँ अछि। नेवौओ सभटा चोराइए कऽ तोड़ि लइ गेल।"

दादी- "कनियाँ अहाँकेँ नै बुझल हएत। नइ नेबो अछि तँ नेबोक दूटा पाते दऽ दियौ।"

चाह बनल। एक घोंट चाह पीब ललित दादीकेँ पुछलक- “दादी केहेन घर बनेबै?”

“बौआ, गिलेबापर जोड़ि तीन नम्मर ईंटाक देवालपर सँ एसबेस्टसक छत देबइ। कहुना-कहुना तँ बीस-पच्चीस बर्ख चलबे करत।”

“से तँ बेसियो चलि सकैए आ सालो भरि नै चलि सकैए।”

“से की?”

“तेहेन सिमटीक घटिया एसबेस्टस बनैए जे पाथरक चोट बरदाश करत।”

मुड़ी डोलबैत दादी- “हँ, से तँ ठीके कहलह।”

कहि गुम्म भऽ गेली। दादीकेँ गुम्म देखि ललित बाजल-

“दादी, जँए अस्सी तँए निनानबे। चदरा तरमे खूब गतगर-के खरहीक छाड़ दऽ देबइ। जँ पथरो खसत तँ चदरे ने फुटत, जान तँ बँचत किने। बेसीसँ बेसी देहपर पानि चुअत, सएह ने।”



शब्द संख्या: 2349

अतहतह

तीन बजे भोरे झामलाल बैग नेने गरजैत चौकपर पहुँचल। ओना एकादशीक चान डुबि गेल रहै मुदा सुरूजक लालीसँ दिशा फरिच हुअ लगल रहइ। झामलालकेँ चौकपर अबैसँ पहिने भुटकीलाल डिबिया बारि चाहक चूल्हि पजारि नेने रहए। पाँच बजे चूल्हिमे आगि पजारैबला अढ़ाइए बजे पजारैक सुरसार करए लगल रहए। तेकर कारण भेल रहै जे पनरह दिनसँ राहैड़क दालिमे रोटी गुड़ि कऽ नै खेने रहए, तइ खातिर रातिमे खाइए-काल दुनू परानीक बीच झगड़ा भऽ गेलइ। बिनु खेनहि पिढ़ीपर सँ खिसिया कऽ भुटकीलाल उठि गेल। माटिये-सँ चारि घुस्सा दाँतमे लगा, कुड़ुड़ कऽ दोकानपर आबि गेल।

दोकान लग पहुँच झामलाल बाजल-

“भुटकी भाय, रौतुका सोठियाएल छिअ। खाइक किछु नइ रखने छह?”

“अच्छा पहिने अदहा-अदहा कप चाह पीब लिअ। जहिना अहाँ सोठियाएल छी तहिना हमहूँ छी। आन चीज की भेटत। बिस्कुट सभमे कोनो लज्जैत रहै छै मुदा छाल्ही अछि।”

“चलह हुन्डे दाम कहि दहक।”

“सभटा अहीं लऽ लेबै आ अपने?”

“पाइ हम्मर आ खाइमे दुनू गोरे अदहा-अदही।”

‘अदहा-अदही’ सुनि भुटकीलाल उछैल कऽ बाजल-

“अदहा किलोसँ बेसीए हएत मुदा अहाँ एक्के पौआक पाइ दिअ।”

“एहनो बुड़िबक जकाँ कियो बजैए। बैग खोलि कऽ देखि लहक। एक किलोक पाइ आ सवा सौ रुपैआ ऊपरसँ देबह। खाली भरि दिन संग पूरह।”

“हम तँ पेटबोनियाँ आदमी छी भाय। जेतए पेट भरत तेतए रहब।”

“चौकक खर्च हम देलियह आ मालिक तूँ भेलह। मुदा पहिने खा लएह किएक तँ भरि दिन बहह पड़तह।”

अदहा-अदहा छाल्हीमे सँ उठा-उठा दुनू गोरे मुहोँमे दैत आ गप्पो करैत झामलाल बाजल-

“टटके छाल्ही बुझि पड़ै छह?”

“हँ। कौल्हुके छी।”

“हँ, छाल्हीक रस तँ तेसर दिनसँ बनब शुरू होइ छइ। मुदा टटकोक अपन रस छइ। आइ गामक झण्डा गाड़ि देलियह।”

“से की, से की?”

-बगुला जकाँ मुँह उठा-उठा भुटकीलाल झामलालसँ पुछलक।

पानि पीब झामलाल बाजल-

“हमरा तँ बुझिते छह जे बैग आ मोटरेसाइकिलमे कारोबार अछि। मुदा कहुना-कहुना सालमे पाँच लाख पीटिये दैत हेबइ। बान्हल तँ अछि नहि। दसटा कम्पनीक एजेंसी रखने छी, जेकर जाल सगरे देशमे छइ। एते पहूँच सेहो बनौने छी। जहिना आइ खच्चरपुरबलाक खचरपनी झाँड़ि, मुता-मुता भरेलौं तहिना ओकर आगि-पानि, कथा-कुटुमैती सेहो ढाठि देबइ। तइले नअ पड़ै आकि छह।”

“ठीके कहै छी भाय, एहेन-एहेन अगिलह सभकेँ अहिना हुअए।”

भुटकीलाल मुड़ी डोलबैत पुष्टि केलक।

चाह पीब झामलाल बाजल-

“भाय, ऐपर सँ जे पान-साए नम्मर पत्ती देल पान खइतौं तँ आरो बुलन्दी आबि जइतए।”

“भाय, पान तँ तेहेन खुआ दैतौं जे जेहेन बुलन्दी चाही तहूसँ सातबर बेसी आबि जाइत। मुदा पानबला छौड़बा अछि मौगियाह। वसन्ती नीन छोड़ि कऽ औत। सात बजेसँ पहिने नइ अबैए। ताबे सुपारी आ तमाकुलक पत्ती दऽ काज चला लिअ।”

“तोहूँ भारी इस्की छह। आइ तोरे दरबारमे आसन जमेबह। जेना-जेना तूँ कहबह तेना-तेना करब। मुदा एकटा बात अखने ऐ दुआरे कहि दइ छिअ जे बिर्ड़ोमे झण्डा उड़िया देलिऐ मुदा ओकरा तँ बाँसमे लगा जमीनमे गाड़ए पड़त किने।”

बिच्चेमे भुटकीलाल बाजल-

“अहाँ खाली बैगक ताला खोलि कऽ रखने रहू, एक्के घन्टामे चौकक चकचकी देखा दइ छी।”

भुटकीलालक जोश देखि उत्साहित भऽ झामलाल बाजल-

“भाय, तोरे सबहक असिरवादसँ दूटा पाइयो देखै छी आ दूटा लोको लगमे रहै छी। मुदा कमेनाइए-खेनाइए-टा तँ जिनगी नै ने छिऐ। फेर दोहरा कऽ सुन्दरपुरमे जन्म लेब। तँए जहिना गामक झण्डा अकासमे उड़ियाएल तहिना बँचबैले जे करए पड़त से करब।”

“अच्छा छोड़ू ऐगला बात, अखन की करब से विचारू।”

“तोहीं बाजह?”

“दूटा चाहबला छी। दूटा पानबला अछि। तीनटा मेजरौटी अछि। भरि दिनक खर्च उठा लिअ।”

“की कहलहक?”

“मेजरौटी, एक मैजरौटी गाँजा पिआकक अछि। दोसर ताड़ी-पोलिथीनबलाक अछि आ तेसर इंग्लिस पिआकक अछि।”

“तीनूमे केते खर्च हेतह?”

“अहाँ खाली बैगक मुँहमे हाथ देने ने रहियौ। सभ गप ने कऽ लेब।”

“सभ तँ फुट-फुट बैसत तखन रौतुका बात कहबै केना?”

“मामूली लोक सबहक मेजरौटी छिऐ। कलाकार सबहक छिऐ। जखने चाहक दोकानपर औत आ भरि दिनक मौज-मस्ती गछि लेबह तखने चौकक ताल देखि लिहक।”

“किछु कहबहक नहि?”

“कहबै आकि मंत्र देबइ। दुइए-टा मंत्र दइक काज छइ। अकासमे झण्डा उड़ि गेल आ खच्चरपुरबलाक सभ खचड़पनी घोंसारि देलिऐ। माटि दइ छिऐ जे जेतए फरियबैक मन होइ फरिया लिअ हमरा समाजसँ..!”

घन्टे भरिक पछाइत चौकक जुआनी आबि गेल। गाँजाक मंचसँ फगुआ शुरू भेल-

“एक दिस खेले कृष्ण कन्हैया, एक दिस राधा जोड़ी होऽऽऽ!”

तँ ताड़ीक मंचसँ महराइक धून निकलल-

“किसकी मैया बाघिन जनमे जो रूदल पर फेरे हाथ..!”

तेसर मंचसँ अंगरेजी डान्स शुरू भेल।

सात बजैत-बजैत चौकपर गदमिशान हुअ लगल। रविशंकर चाह पीऐले अबैत रहैथ, दस लग्गी पाछूए-सँ चौकक मस्ती देखलैन। गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ हियासए लगला तँ देखलैन जे सौंसे गामक लोक नाचि-गाबि रहल अछि। मुदा लगले जेना पवनसुत किछु कहि देलकैन। मुस्की दैत भुटकीलालक चाहक दोकानक सोझहे पहुँच भुटकीलालकेँ पुछलखिन-

“भुटकी भाय, बड़ चहल-पहल देखै छिऐ की बात छिऐ?”

“पहिने चाह पीबू ने। गप केतौ पड़ाएल जाइ छइ। निचेनसँ चाहो पीबू आ गप्पो सुनू।”

“कनियोँ तँ इशारोमे कहह।”

“एतबे बुझि लिअ जे खच्चरपुर बलाकेँ मुता-मुता भरेलौं।”

भुटकीलालक बात सुनि रविशंकर अचम्भित भऽ गेला जे आखिर बात की छिऐ! तैबीच झामलाल कहए लगलैन-

“भाय, मास दिनक कमाइक फल छी। जड़िए-सँ कहि दइ छी। तैंतीसम दिनक गप छी। एक लाख रुपैआक पार्टीक काज करि कऽ आएले रही। बारहसँ ऊपर दिन चढ़ि गेल रहइ। कपड़ा खोलि कलपर बाल्टीन-लोटा रखि लताम गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ ऊपर हियासैत रही। तखने हिरदेकाका दछिनबरिया बाधसँ अबैत रहैथ। नजैर पड़िते कहलयैन-

‘काका, गोड़ लगै छी। बड़ रौद छै, कनी ठंढा लिअ।’ जहिना कहलयैन तहिना ओहो लतामेक गाछ लग आबि गेला।

लताम देखलाहा आँखि हिरदे-कक्काक रहबे करैन, मुँहक सुरखी देखि कहलयैन-

‘काका, एना हकोपरास किए छी।’

सुखल मुँहकेँ मुस्कियबैत बजला-

‘नै बौआ, नै कोनो। रौदमे सँ एलौंहेँ ने।’

कहलयैन- ‘पहिने दूटा लताम खाउ?’

तैपर कहलैन- ‘नै बौआ, नै खाएब।’

कहलयैन- ‘नइ खाएब तँ दूटा अँगने नेने जाउ।’

अँगनाक नाओं सुनि औटोमेटिक बम जकाँ कखन छाती फटि गेलैन, से नइ बुझलौं। मुदा आँखिसँ टघरैत नोर गालपर चमकए लगलैन। मन गरमाएले रहए। पुछलयैन- ‘काका, जहिना परिवारमे भैया, काका, बाबा, होइए तहिना ने समाजोमे होइए। बीरान किए बुझै छी। अहाँ सबहक असिरवादसँ कमाइयोक आ दस गोरेकेँ चिन्हैयोक लूरि भऽ गेल अछि। बाजू अहाँ किए एते पीड़ित छी, जँ उठैबला हएत तँ जरूर...।’

नोर पोछैत काका बजला- ‘बौआ, देखैए-टा ले बुझि पड़ै छिअ जे मनुक्ख छी। मुदा से नहि, मुइल मनुक्ख छी। अपनो परिवारक रच्छा करै-जोकर नइ छी । तखन तँ देखा-देखी आँखि तकै छी।’

पुछलयैन-

‘खुलि कऽ बाजू, काका?’

तब कहए लगला-

‘बौआ, ऐ जुगमे हम सभ महापापी छी, किएक तँ भगवान पाँचटा बेटी दऽ देलैन। चारिटाक तँ कोनो धरानी खेत बेच-बेच पार लगेलौं। सात बीघाक किसान मात्र पनरह कट्ठापर आबि गेल छी। तेहेन हवा-पानि देखै छी जे ओहूसँ पाँचमक पार लगत कि नहि।’

हिरदे-कक्काक बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। जेना बकारे बन्न भऽ

गेल। छाती असथिर करैत पुछलयैन- 'काका, केते खर्च हएत?'

कहला-

'बौआ, गरथाह बात केना बाजब।' आँखिक नोर पौछैत पुन: बजला, 'बौआ, ई पाँचम बेटी तेते दुलारू अछि जे हृदयमे सटल अछि। एक तँ कोरि-पच्छू बेटी, तैपर सँ माइक तेते सिनेही जे सुग्गा जकाँ किछु बाजत। जेठकीकेँ दादीए पोसलकै। कहियो ओकरा कोरा कऽ नै लेलिऐ। जखन टेल्हुक भेल तखनसँ संगे मेला-तेला लऽ जाए लगलिऐ। छोटकी माइक तेहेन दुलारू बेटी अछि जे सैयोसँ ऊपरे नाओं रखने छथिन।'

बातकेँ बुझैत कहलयैन- 'काका, छोड़ू ई सभ। अपन बहिन बुझि बिआह पार लगा देब। जेहने जेठकी बेटीक परिवार अछि तेहने परिवार भँजियाउ। खर्चक चिन्ता अहाँ जुनि करब। ई पहिल दिनक गप छी...।'

ओना, तँ गामे-गाम अतहतह होइते अछि मुदा खच्चरपुर बलाकेँ तँ कोनो सीमे-नाँगैर नै छइ। ऐ साल पाँचटा बिआहमे अभरल। तेते दोस-महीम भऽ गेल अछि जे एकटा बिआहक खर्च नोत पुराइमे होइए। तइले नै कोनो। दस सेरे नै नितराइ दस सगे नितराइ। पाँचो बिआहमे ओकरा सबहक खच्चरपनी देखिलऐ से एड़ीसँ टिकासन तक नेस देने अछि। मुदा कोनो बिआहमे कोनो समाज (बरियाती-घरवारी) तँ नै छेलौं तँए आँत-मसोसि कऽ रहि गेलौं। गर चढ़ा खच्चरपुरेमे कथा ठीक केलौं। कक्कोकेँ पसिन भेलैन। लेन-देन तँए भऽ गेल। समय बना ओहू गामक समाज आ अपनो समाजक बैसार केलौं। बैसारेमे बजलौं, 'अखन धरिक काज दुनू घरवारीक छेलैन मुदा आब समाजक भऽ गेल। चाहै छी जे आन गाम जकाँ थूका-थुकी बिआहमे नै हुअए। तँए किछु समस्या अछि जैपर अखने विचार विमर्श भऽ जाए-

(1) बिआह पद्धतिक अनुकूल हुअए आकि जयमाला करि कऽ हुअए?

(2) पलाउक चलैन भऽ गेल, से मखानक खीर खाएब आकि पलाउ?

(3) खेला-पीला उत्तर लगले विदा भऽ जाएब कि अरामक

पछाइत?”

प्रश्न सुनि चुप्पी पसरल। जहिना चूल्हिमे खोरनासँ जारैन घुसकौल जाइ छै तहिना घुसकेलौं- ‘कन्यागत समाजक कन्हापर भार देने छथिन तँए समाज चाहै छैथ जे आन-आन गाम जकाँ बरियाती-घरवारीक बीच कोनो तरहक राग-द्वेष नै हुअए। किएक तँ बरियाती घरवारीकेँ निच्चाँ देखबए चाहै छैथ आ घरवारी बरियातीकेँ। जइसँ जहिना खेतमे कोनो चीजक बीआ छीटल जाइत अछि, तहिना हम सभ झगड़ाक बीआ समाजमे छीट देने छी जे दुखद अछि। नै चाहब जे समाजमे एना हुअए। बिआह सृष्टिक सिरजनक प्रक्रियाक अंग छी तँए ऐ संग छेड़-छाड़ अनुचित। अपने लोकैन जे कहि देब ओइ अनुकूल बिआह हएत।’

घमरथन शुरू भेल। घमरथनक कारण भेल किछु देखौआ काज आ किछु चोरौआ। मुदा सुमति एलैन, बजला- ‘लड़का-लड़कीक बिआह सामाजिक पद्धतिक अनुकूल हुअए। ई भार अहाँपर रहल। जहिना कोनो काजक प्रक्रिया होइ छै तहिना भोजनक प्रक्रियाक अंग अरामो छी। जानल बात अछि जे नियमित भोजनसँ भिन्न भोजन बरियातीमे होइ छै, तँए अराम आरो जरूरी अछि। प्रात:काल नअ बजेमे चाह-पान खा असिरवाद दैत आपस हएब। पलाउ आ खीर खेनिहार दुनू रहता। बाजा-बूजीक बेवस्था घरवारीक। नै चाहब जे रस्ता-बाटमे अनगौंआँ सभसँ झंझट हुअए। मोटा-मोटी यएह बुझू जे साएक धतपत बरियाती रहता, जिनका-ले अहाँ दू-ठाम बेवस्था करब। अहूँ सभ बुझिते छिऐ आ हमहूँ सभ बुझिते छिऐ। एक भागक जे बरियाती रहता हुनका-ले जहिना भोजनक वृहत् बेवस्था रहतैन तहिना अरामोक हेबा चाही। ई नै जे मधमन्नी जहल जकाँ मुड़ी-पएर दुनूक पतियानी लगि जाए।’

पुछलयैन- ‘जखन दरबज्जापर पहुँचबै तखन कोन रूपेँ शुरू करबै?’

कहलैन- ‘जे सभ भाँग खेनिहार छैथ ओ सभ घरेपर भाँग खेता आ रस्ते-बाटमे केतौ झाड़ा-झपटा करता। पएर धोबसँ शुरू करब। एमहर बरियातीक सनोमान शुरू हएत आ ओमहर आँगनमे बिआहक प्रक्रिया शुरू हएत। आठ बजे दरबज्जापर पहुँच जाएब। दस बजेमे खुआ-पिआ

कऽ अराम करए छोड़ि देबइ।'

हँसैत सभ निर्णय कऽ लेलैन। विदा भेलौं...।'

रस्तामे झगड़ाक जड़ि ताकए लगलौं। एते तँ बिसवास रहबे करए जे जहिना चोर फँसबैले सिपाही घेराबन्दी करैए तहिना जाल तँ लगबै पड़त। मोन पड़ल दोसक गप। दोस कहने रहैथ जे अपना सभ कारोबारी छी, तँए कोट-कचहरीसँ सदिकाल बँचैत रहक चाही। नइ तँ अनेरे ओझरा जाएब। कारोबार कारोबारे रहि जाएत। मुदा उक्खैरमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर केने काज चलत। तखन तँ जहाँ धरि संभव हएत तहाँ धरि बँचब। अखनो समाजमे कहाँ कियो खुलि कऽ ताड़ी-दारू करै छैथ। चोरनुकबा जरूर करै छैथ। मुदा की हुनका सभकेँ अपना आँखिमे लाज नै छैन? जरूर छैन। खाएर जे हौउ, जिनगी भरि जहलेमे किए नइ रहह पड़ए मुदा खच्चरपुरबला सभकेँ सिखाएब जरूर। तेहेन कऽ नाँगैर सुरड़बै जे इलाकामे मुँह उठाएब मोसकिल भऽ जेतैन। बेसीसँ बेसी दसटा बदमास गाममे हएत, पचासटा आनि कऽ रखि देबइ। मुदा सिखेबै जरूर...।'

आठ बजे गामक सीमामे बरियाती प्रवेश कऽ गेल। हमहूँ सभ साकांच रही। दरबज्जापर पहुँचते स्वागतक संग बैसारक कार्यक्रम शुरू भेल। दाइ-माइ बरकेँ अरियाति आँगन लऽ गेली। बरियातीक बीच प्लेटमे फ्राइ कएल मखान पहुँच गेलैन। दुनू समाजक बीच मखानक मिठासक संग गप-सप्प शुरू भेल। गाममे केते सार्वजनिक स्थल.., कोन-कोन शिक्षण-संस्थान.., अस्पतालक की स्थिति.., गाममे केते किसान परिवार.., केते नोकरिहारा.., जोतसीम जमीन केते.., बोरिंगक संख्या केते.., खेतीसँ अलग कारोबारी परिवार केते.., केते परिवार गामसँ पड़ाइन कऽ रहला अछि आ केते दोखतरीपर आबि-आबि बैस रहला अछि...। बड़ी जुमा कऽ महावीरजी लंकासँ आम फेकने रहैथ से ने तँ खास भेल अछि। मुदा किछु गोरेकेँ भाँगक मातल मनमे उठए लगलैन जे मखानक लाबा आ पानिए पीब भेल! ओ तँ अपने जिनगी भरि पानिए-मे रहल अछि तँ तइमे नीक जे दू घोंट बेसीए कऽ पानि पीब लेब। बिना मुंगबे मन थोड़े मानत। पेटेटा भरने नइ ने होइ छै, मनो ने भरक चाही। मुदा फेर मनमे उठैन जे अखन कोनो उसैर गेल...।'

अँगनाक ओसारपर बैस हिरदेकाका आँखि खिरा-खिरा तकैत तँ देखथिन पाँचो बेटीक सिनेह। जेठकी बहिन माइक पीठपर अँगनाक चीज-वौसकेँ उठा-उठा घरमे रखैत, तँ घरसँ निकालि आँगनमे रखैत। मझिली तँ चारू बहिनक लेधे-गोधक आइ-पाइमे भिनसरसँ अखन धरि लागल अछि। सझिलीए-केँ की कहबै, वेचारीकेँ लगले हाथमे नीपौन देखै छी तँ लगले सिनुर-पिठार। चारिमकेँ तँ गीतिहारियेक आगू-पाछू करैत-करैत नाको-दम भेल छइ। घुमैत नजैर हिरदे-कक्काक बेटी-जमाएपर गेलैन। ओना देखिए कऽ केने रहैथ। तँए देखैक ओ रूप नहि। देखैक रूप रहैन मौलाएल गाछक पोनगल सराइरमे खिलैत फूलकेँ। हारल मनुक्खक जीत। जे कहियो कन्यादानकेँ उच्च कोटिक श्रेणीमे गनल जाइ छल ओ आइ समाजमे बेटियाह वंश बुझि बिआहसँ वंचित भऽ रहला अछि। वाह रे हमर समाज...।'

हम अपना काजक पाछू तबाह। पच्चीसो काजकर्त्तापर मलेटरीक नजैर। तीन कदम आगू तँ एक कदम पाछू भऽ सावधान। ओना अगुआएल-पछुआएल बरियाती समैपर गाममे प्रवेश कऽ गेल छला मुदा समाज दरबज्जापर जहाँ-तहाँ छिड़ियाएल। दू-चारि मिलि-मिलि अड्डा जमौने। जइ पाछू एक-एक काजकर्त्ता लगल रहए। ताड़ी जकाँ तँ इग्लिशक गोष्ठी नमहर नै ने होइए। रंग-बिरंगक पीनिहार रंग-बिरंगक वस्तु।

साढ़े नअ बजे बरियाती भोजन कऽ ओछाइन पकैड़ लेखा-जोखा करए लगला। हराएल-बरियातीक खोज शुरू भेल। साढ़े दस बजे घरवारी बरियातीक बीच समझौता भेल जे जेते समय आगू बढ़ि गेल ओइसँ पैछलाकेँ छोड़ि भोजने हुअए। सएह भेल। मुदा कमाल भऽ गेल। भोजन शुरू भेल, पेशाब करैले उठब शुरू भेल। पेशाब खोलैबला दबाइ पानिमे मिला टीपि-टापि कऽ दस गोरेकेँ पिआ देल गेल। एक गोरेकेँ देखि छोड़ि देलौं, दोसरोकेँ छोड़ि देलौं। मुदा जहिना चुट्टीक धाड़ी चलैत तहिना चलए लगल। जखन शुरू भेल आकि बुढ़हा सबहक बीच जा कहलयैन- 'अखन धरि घरबैया समाजसँ कोनो तिरोट भेल हुअए से कहू?

एक्के-दुइए पान-सात गोरे उपदेश दैत बजला- 'अखन जे हवा-

बिहाड़ि उठि गेल अछि तइमे अहाँ लोकैनकेँ धैनवाद दइ छी। हमहूँ सभ यएह गप करै छेलौं जे गणेशजीक भक्त सभ ने छेनाक मिठाइ खाइ छैथ मुदा ओ तँ अखन धरि लड्डुए खाइ छैथ। जुग बढ़ि गेने लोको उधिया जाएत। जे सुआद खाजा-मुंगबाक अछि ओ डिब्बाबला रसगुल्लाक हएत। ओ तँ भाँज पुराएब छी।'

कहलयैन-

'जाधैर अपने लोकैन ऐठाम छी ताधैरक नीक-अधलाक जवाबदेह घरवारी हेता मुदा अहाँ सभ जे उकठ करब, तखन..?'

पुछै गेला-

'की भेल, की भेल?'

कहलयैन-

'दोसर बरियाती सबहक छिछा-बीछा चलि कऽ देखयौन? बामा करे पड़ि जे जाँघ कुड़ियबैत रहैथ से उठले ने होइन। मुदा कासपरक दहीक ढेकार फुर्ती आनि देलकैन। सभ कियो उठि दोसर पण्डालमे पहुँचला तँ देखलैन जे एना किए रेलबे स्टेशनक टिकट-खिड़की जकाँ दुनू दिस पाँति लगल अछि! मुदा से दसे-बारहे गोरेकेँ देखै छी। खाइ-पीबैक वस्तुमे जँ किछु गड़वड़ी रहितए तँ सहरगंजा होइतै। सेहो ने देखै छइ। ..एक-दोसरासँ आँखि मिला प्रश्न पुछैत तँ मुड़ी डोला जवाब भेटैन। मुदा किछुओ दोख जाबे केकरो नै अछि ताबे एना भऽ किए रहल अछि। आनठाम कहाँ भेल? मुदा बिना आधारे कोनो बात मानियोँ लेब से उचित नहि। आमपर फेकल गोला जकाँ जे लगियो सकैए आ हुसियो सकैए। एमहर अराम करैले सेहो मन कछमछाइन। दोहरौलिऐन-

'जँ अपने लोकैन समाजक सीमा रेखा तोड़ि घिनबए चाहब तँ समाजोकेँ ई अधिकार बनै छै जे सीमाक सिपाही जकाँ अपन मातृभूमिक रच्छा करए।'

कबछुआ जकाँ भकभका कऽ तँ लगलैन मुदा घिनबैक कारण बुझबे ने करैथ। खिसिया कऽ एक गोरे बजला-

'कोन-कहाँ बोतल पीब-पीब बरियाती औता आ सभ किछुकेँ खेने-

पीने चलि जेता! एक्को क्षण ई सभ जीबए नै देत।’

कहि छोटका भाएकेँ कहलखिन-

‘बौआ, जिनका जे मन फुरतैन से करता। अपन इज्जत-आबरू अपना हाथमे लऽ चलह।”

तेकर बाद की भेलै से बुझबै केलिऐ, बस..!’

एक्के-दुइए ससैर-ससैर घरमुहाँ हुअ लगला।”



शब्द संख्या: 2486

अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आँगन बहाड़ि बाढ़ैनकेँ कलपर धोइ पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलैन। हाथ-पएर धोअल बुझि नजैर फूल तोड़ैपर गेलैन। ओना, लालकाकी एहेन नियमित छैथ जे जहिना खढ़ लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छैथ तहिना दिन भरिक काजोक छैन। मुदा मन पाड़ैक जरूरत अइले रहि जाइ छैन जे पति गाममे छैथ कि नहि। गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइ छैन आ नइ रहने कमि जाइ छैन। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलैन। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उतारि कल दिस बढ़ली। कलक बगलेमे रंजनी-गन्धापर हाथ दइते छेली आकि नजैर अपराजितपर पड़लैन। मेल-पाँच करैक विचार मनमे अबिते लालकाकी रजनी-गन्धासँ अपराजित दिस बढ़ली। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलैन। आँखि पड़लैन फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देखि विचारली जे पाँचटा बेलीमे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेली कि नजैर पतिपर गेलैन। पतिपर नजैर पड़िते मन दुखाए लगलैन। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कण्डीशन गाड़ीमे बैस सराफा बाजार जा हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गाड़ामे लटकैबतौं। मुदा तेहेन भेला जे जखन सरकारी दरमाहा भेटए लगलैन आ कहलयैन जे साइकिल कीनि लिअ सुभितगर हएत, तँ कहलैन जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जँ खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलश्तर करब, तैयो ने जुटत। तइसँ नीक पएरे। कहलैन एक मानेमे नीक...।

मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ उतरलैन नहि। मन गेलैन दोसर दिस। सभटा पोथी बर्खामे भीज-भीज सड़ि गेलैन, जखन घरे चुबै छेलैन तखन जँ सड़िए गेलैन तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखन घर बनौलैन तखन किए ने फेर किनलैन। जइ घरमे पोथी नइ रहत ओ घर केहेन हएत? लालकाकीक क्रोध कमलैन। क्रोध कमैक कारण भेलैन

अपन काज मोन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ बेर धरि केकरा-ले करै छी, परिवारे-ले ने। फेर तामस मुड़ि गेलैन, कहैले आठ घन्टा ड्यूटी करै छैथ, चारि घन्टा बाटेमे लगै छैन। अदहा काज जँ सम्हारि कऽ नइ रखबैन तँ पारो ने लगतैन। एहेन पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैथ? फुलडाली रखिते लालकाकीक मनमे एलैन, एक विहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बैसैमे अखनो बहुत बाँकी अछि। हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा-ठाँउ कऽ चूल्हि-चिनमार दिस बढ़ली। घर-निप्पा रखि अर्घासरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि घड़ी दिस देखली। अखन तक समय आ काजमे तल-बितल नइ देखि मनमे खुशी भेलैन। फेर नजैर पतिपर गेलैन। किड़ी आँखिमे पड़ने जहिना करुआ जाइ छै तहिना लालकाकीक मन करुआ गेलैन। बुदबुदेली-

“एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू-मुहेँ ससरत?”

बुदबुदाइते लालकाकीक मनमे उठलैन आन दिन जकाँ जारैन सुखाएल नइ अछि। भानसमे देरी लागत, से नइ तँ पानि चढ़ा पहिने चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजरल रहत तँ कनी देरियो लगने समैपर भऽ जाएत।

बाड़ी पहुँच पतरका जारैन सभ बीछ कऽ चूल्हि लग आनि कऽ रखली। चूल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे राखए लगली। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लैन। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बुझि पड़लैन। मनमे एलैन, ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छइ। फेर मन पतिपर गेलैन। उमैक कऽ मन कहलकैन, आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलैन। हृदय बिहुँसि गेलैन। ‘जइ मर्दकेँ आनि नहि आ जइ बरदकेँ पानि नहि, ओ अनेरे गाम घिनबैले किए जीबैए? मोन पड़लैन दुरगमनियाँ पिढ़ी। जहिना बाबू सतपुड़ैन खोधाएल कटहरक पिढ़ी देलैन आइ तहिना धरि ओइपर बैस भोजन करै छैथ...।

थारी साँठि लालकाकी पंखा नेने छोटकी पिढ़ीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैले पढ़ुआकाका दिस देखए लगली। मगन भऽ

पढ़ुआकाका भोजन करए लगला। देहांगक सिरखार देखि लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन-काल जे बजबे ने करता हुनका कहले की जाए। तँए लालकाकी चुप्पे रहली।

कपड़ा पहिर पढ़ुआकाका घरसँ निकैलते रहैथ कि आँगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलैन। पत्नीक काज देखि मन मानि गेलैन जे सिपाही जकाँ छैथ। मनमे खुशी उपकलैन। पान खा आगू-आगू पढ़ुआकाका आ पाछू-पाछू लालकाकी आँगनसँ निकैल डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआकाका पुछलकैन- “किछु कहबोक अछि?”

लालकाकी कहली- “अपन तनदेही राखू।”

दुनू गोरे दुनू दिस विदा भेलैथ। मुस्कियाइत पढ़ुआकाका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घुमि कऽ देखि डेग तेज करैत आगू बढ़ला। नाकमे सुरसुरी लगलैन। भेलैन जे छिक्का हएत। बामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगला। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नहि। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द ‘तनदेही’पर गेलैन। पत्नीक मुहसँ निकलल शब्द, विशारद पास पढ़ुआकाकाकेँ ओझरा देलकैन। पाछू घुमि पत्नी दिस तकलैन तँ देखलैन जे सड़कसँ अँगनाक घुमौनक भौकपर पहुँच गेल छेली। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेली। कोकिलक कण्ठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआकाकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलैन। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चन्दन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलैन केतए-सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नइ केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलिऐन कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किए ने बजनिहारिए-सँ पुछि लिऐन। ओहो तँ आन नहि, अर्द्धांगिनीए छैथ। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैले दुनूक सहयोग तँ बरबैरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ आ एक सीमाक भीतर अपने छी। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रुपैआ हाथमे दऽ दइ छिऐन। मुदा ओइ रुपैआकेँ नचबै तँ वएह छैथ। तैसंग पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छैथ...।

पढ़ुआकाका जेते दुनू गोरेक भीतर झाँकै छला तेते हटल-हटल बुझि पड़ैन। मन वौआ गेलैन जे पति-पत्नीक, पुरुख-नारी आ स्त्री-

स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबा चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलैन। किए ने दुनू गोरे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलैन। गामक सीमो टपि गेला। विद्यालयक मुरेड़पर नजैर गेलैन, सवुर भेलैन जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंतीस सालक अभ्यास तँए थकान नइ बुझि पड़ैन मुदा...।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जैठाम ओसारपर चपरासी बैसैत तइ सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआकाका रहैथ कि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखलैन। सीढ़ी लग पहुँच पढ़ुआकाका आगू तकला जे चपरासी घुमि कऽ अबैए आकि नहि। मुदा नै देखि काकामे पौरुख जगलैन। मनमे उठलैन अखन तँ सेवानिवृत्तो नहियेँ भेलौं हेन, तखन किए अनकर सेवा लइले मुँह ताकब! सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेला मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छेलैन आगूसँ घेर लेलकैन। जे चपरासी 'बाबा' कहैए, ऑफिसोक सभ 'भैये-काका' कहै छैथ मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए? जँ से नहि, तँ परिवारमे किए कहल जाइए? नजैर ठनकलैन, अगर बीस बर्खक अधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उम्रे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए..! पढ़ुआ-कक्काक मन हल्लुक भेलैन। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलैन...।

हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़ुआकाकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतैन। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसैर गेल छल।

स्टाफ-रूम पहुँचते पढ़ुआकाकाकेँ एक नहि अनेक तरहक खटका खटकए लगलैन। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहैन। मुदा कुरसीपर बैसते तह दैत मनसँ हटौलैन। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़ैन। किछु व्यंग्य-वाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहैथ तँ ओहन बेवहारे नै छेलैन। चालिसँ थाकल रहबे करैथ, आँखि झल-फलाए लगलैन। गमे-गम नीनो आबए लगलैन। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलैन। पढ़ुआकाकाकेँ आँखि मूनल देखि इशारामे उतरीक चर्चा हुअ लगल। मुदा पढ़ुआ-कक्काक आँखि बन्न, तँए किछु बुझबे ने करैथ।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजेमे ट्रेन अछि तँए स्टाफ सबहक बीच चिलमिलक कुचकुची जकाँ पसैर गेल, सबहक देह-हाथ चुलचुलाए लगलैन। कुरसीक पौआ सबहक आवाजसँ पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगला, ऑफिसक बड़ाबाबू आबि पढ़ुआकाकाकेँ कहलकैन-

"अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?"

कहि बड़ाबाबू ऑफिस दिस बढ़ि गेला। ठाढ़े प्रणाम करि कऽ संगियो सभ निकैल गेलैन। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआकाका असकरे कोठरीमे बैसल रहला। बड़ाबाबूक भाषापर नजैर गेलैन। आन दिनक जे बोली रहै छेलैन, तइ हिसावे औझुकामे किछु करुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। काल्हि धरि सहयोगी सभ अरियाति कऽ पहिने विदा कऽ दइ छला तेकर बादे कियो जाइ छला..! पढ़ुआ-कक्काकेँ नौकरीक एहसास भेलैन। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा सभसँ की सम्बन्ध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइ छेलए आ बजै छेलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइ छल। जे पहिने लोटा पकैड़ पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझै छल। मुदा आइ की देखै छी? शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैए! केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहिये-सँ विद्यालयक सरकारीकरण भेल तहिये-सँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहिन भऽ गेल। ओना महिनवारी वेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। मासे-मास नइ भेट सालक चुकती सालमे हुअ लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नहि, अपन काज बुझै छेलौं। मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे केतौ बन्हनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआकाका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बोही आगूमे बढ़ा देलकैन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पैत टुटैए तहिना पढ़ुआकाकाकेँ नौकरी टुटि रहलैन हेन। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआकाका

हतास भऽ गेला। मनमे उठलैन सभ किछु हरा गेल। जेते पढ़ने छेलौं तइमे-सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नइ भेल आ जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल! की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि..?

आगूमे प्रश्न ठाढ़ होइते पढ़ुआ-कक्काक मोन पड़लैन, अपना संग किनको हाथो पकड़ने छिऐन किने? दू परानीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै, ओ हमरा बुते कएल हएत? अखन धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छला ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छेलिऐन। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत? की जिनगीक एक्कोटा व्रत निमाहै-जोकर हम नइ छी..?

द्वन्द्वमे पड़ल पढ़ुआ-कक्काक छाती दलकए लगलैन। तैबीच चपरासी आबि टोकलकैन- "कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौ।"

अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआकाका कोठरीसँ निकैल पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठैन। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओंगैठ कऽ बैस गेला। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलैन। जेबीसँ निकालि पढ़ए लगला। सूचना देल जाइत अछि, तेसर मासक अन्तिम तिथिसँ सेवा-मुक्त होएब।..निचला पाँती पढ़ौ ने लगला, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेला। मुदा जहिना नदीक किनछैरक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत तहिना पढ़ुओ-कक्काक पएर आगू-पाछू हुअ लगलैन। मनक लहैरसँ पएर तनेलैन। आगू बढ़ए लगला। विद्यालयक फाटक लग पहुँच पाछू घुमि तकला तँ बुझि पड़लैन जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहैन। फुरलैन, जखन जीबैक सभ रस्ता बन्न भऽ रहल अछि तखन मरैयोक तँ ढेरी उपए अछिए। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत! जीबैले अपराध करि कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैए मुदा मृत्यु-ले अपराध...।

बीच रस्तापर आबि पढ़ुआकाका क्रोधक लहैरमे आरो ओझरा गेला। मुदा मनमे हूबा जगलैन। हूबा जगिते फुरलैन, जखन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइए देलक तखन एक्केटा उपए अछि जे

जिनकर हाथ पकैड़ भार नेने छिऐन तिनका लग पहुँच कहिऐन जे अखने दुनू परानी हरिद्वारक रस्ता धरू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मन्दिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सूनब आ अपनो नचारी कहबैन। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब...। तखने एकटा छुछुनैर दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआइत टपैत रहए, कि पढ़ुआ-कक्काक भक्क टुटलैन। ताबे छुछुनैर ससैर कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलैन जे छुछुनैर पैरमे काटि लेलक। झूकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगला। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलैन। मन मानि गेलैन जे छुछुनैर काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलैन। काजक बेर रहने सभ छिड़ियाएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलैन। सभ चलि गेल छला। मनमे एलैन छुछुनैरक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलैन। मुदा लगले मन बदैल गेलैन। अपन बीख अपना बुते कहाँ झड़ै छै, तँ की ऐठाम पएर पटैक कऽ मरि जाएब आकि जेतए मनतरिया भेटत ओतए जाँच करा लेब। मुदा असगरे पढ़ुआकाका, तँए मनमे उठलैन- ताधैर अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे... दु... एक...।

मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुहसँ फुकि दैथ। अबैत-अबैत गामक सीमापर आबि गेला।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढ़ुआकाका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लालकाकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहैन। किसाने परिवार देखि लालकाकीक पिता कुटुमैती केलैन। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू परानीक हृदय जुड़ा गेल रहैन जे लक्ष्मीक संग सरस्वतियो छैन।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढ़ुआकाकाकेँ सीमापर अबिते बुझि पड़लैन। सौनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकैन। पानि जकाँ बुधि पसैर गेलैन। जीवित छी आकि मुइल से होशे ने रहलैन। थुस-दे बैस रहला। मोन पड़लैन अकाजक हएब। दुनियाँ तँ काज करैबलाक छी। की मृत्युक शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक अछि, सेहो नहियेँ हएत। जिनगीमे कहियो

जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा व्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि..! पढ़ुआ-कक्काक मन राँइ-बाँइ भऽ फटि गेलैन। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदय दिस बहए लगलैन। हृदय पसीज गेलैन। मोन पड़लैन अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि ओइसँ हटल रखैमे केकर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छेलिऐन। जँ से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलिऐन। अपनो एते होश नै केलौं जे साए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत! आब शेष जिनगी केना चलत? अपनो ने छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं! निराश मनमे सासुर मोन पड़लैन। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा-ले रूसैए! मुदा सासु मोन पड़िते पढ़ुआकाका मधुआए लगला। जँ लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ केतए करत? मन आरो पघिल गेलैन। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छैथ। मुदा फेर मनमे उठलैन जे रूसबो तँ केतेको रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलैन जे सियानी रूसबसँ शुरू करब आ जेते निच्चाँ सुतैर जाएत तेते निच्चाँ धरि आबि अँटैक जाएब। फुरफुरा कऽ उठि पढ़ुआकाका घर दिस विदा भेला। चारूभर चकोना होइ छला जे कियो देखए नहि। मुदा से सुतरलैन। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हरि कऽ बजला-

"ई घर मनुक्खक रहैबला छी! एमहर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओमहर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि..!"

कहि, रूसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि पड़ि रहला। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देखि नेने रहैन। हँसुआ-खुरपी बाड़ीए-मे छोड़ि लालकाकी आँगन दिस बढ़ली तँ किछु आवाज सुनि पड़लैन, मुदा नीक नहाँति नइ बुझि सकली। ओना, लोकक दुआरे पढ़ुओकाका मुँह दाबिए कऽ बाजल छला। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजला-

"एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाइर

करैबला...।"

पढ़ुआ-कक्काक बात लालकाकी बुझि गेलखिन जे केतौ किछु भेलैन हेन। दू बीघा हटल आवाजमे लालकाकी बजली-

"एलौं।"

'एलौं' सुनि पढ़ुआकाकार्कें सवुर भेलैन आ लालकाकी मने-मन सोचै छेली जे पुरुखक लटारम्भ की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी वौस कऽ शान्त कऽ देबैन। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलैन।

पत्नीक आवाज सुनि पढ़ुआ-कक्काक छाती दहैल गेलैन। नाँगैर सुरैर कऽ विद्यालय घर धरौलक! केतौ-के ने रहलौं। मन गरमेलैन। बमैक कऽ बजला-

"काल्हिए विद्यालय जा लिखि कऽ दऽ देबै जे आइए-सँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हेतै तँ मनिआर्डर कऽ रुपैआ पठा देत, नइ तँ नै पठबऽ।"

जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत तहिना पढ़ुआ-कक्काक लगले मन थलथला गेलैन। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल अछि..? विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बुझि रहलौं हेन? आकि अर्थशास्त्र पढ़ैक अभाव रहल?

पढ़ुआ-कक्काक लग आबि लालकाकी पुछलकैन-

"चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला रखने छी, नेने आएब?"

पत्नीक बात सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन मचकी जकाँ झूलए लगलैन। मुदा आस लगिते मन दोसर दिस भऽ गेलैन। खिसिया कऽ बजला-

"हूँह! चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा!"

मुस्की दैत लालकाकी पुछलखिन-

"हमरे छी, अहाँक नइ छी?"

पत्नीक बात सुनि मन सिहैर उठलैन। बेरुका सुरूजक रौद जकाँ पढ़ुआ-कक्काक गरमी कमलैन। बजला- "एकटा गप कहए चाहै छी?"

“भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धूराएल अछि, पहिने हाथ-पएर धोने अबै छी तखन अन्डी-तेलसँ घुट्ठियो ससाइर देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदिकाल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सूनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहैरक गप छी।”

लालकाकीक गप सुनि पढ़ुआ-कक्काक मन आगिमे पकैत भँट्टा जकाँ असुआ गेलैन। असुआइते लजबिजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलैन। कल पड़ल रोगी जकाँ पतिकेँ देखि लालकाकी सहैट कऽ निकैल, ठोकले बाड़ी पहुँच गेली।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआकाका बिसैर गेला। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलैन। किसानक बेटी लालकाकीकेँ खेतीक सोल्होअना लूरि छैन, ओना, अन्नक खेती तँ बटाइ लगा नेने छैथ, मुदा पाँच कट्ठा चौमास आ गाछी-बिरछीक सेवा टहल अपने करै छैथ। दूटा गाइयो पोसियाँ लगौने छैथ, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइ छैन। पक्का घर बना सभ बेवस्थो केने छैथ।

लालकाकी हँसुआ, खुरपी आ कोदारिकेँ आँगनमे रखि, झाड़ू लऽ कऽ अँगना बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पीबते रहैथ आकि मोन पड़लैन पतिक रूसब। फेर मोन पड़लैन अपन जिनगी। जाधैर माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोरेक इच्छा सदिकाल यएह रहैन जे धिया-पुता कखनो कानए नहि। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बुढ़ी–सासु–सदिकाल कहैत रहै छेली जे कनियाँ अँगनाक मालिक स्त्रीगणे होइ छैथ। तँए आँगनमे सदिछन बिआहक मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नहि जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बुझि सती-धर्मक पालन करैत एली। मोन पड़लैन सावित्री, दमयन्ती...। करुआ कऽ किछु बाजब उचित नहि। तैबीच दरबज्जा परहक आवाज सुनलैन। “हे भगवान, जानह तूँ।”

मने-मन पढ़ुआकाका अपने सम्बन्धमे सोचैत रहैथ। आमोक गाछी तेहेन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल

मोजरबे ने करैए, तँ गोटे साल बिजलोके-मे जरि जाइए। गोटे साल बिहाड़िए-मे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहेन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे केते जीब सकै छी..?

दरबज्जापर लालकाकीकेँ अबिते पढ़ुआ-कक्काक टुटल मन कलैप उठलैन। गोरथारीमे बैस लालकाकी कहलखिन-

"पएर सोझ करू।"

लालकाकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पढ़ुआ-कक्काक बोल निकललैन-

"पएर नै टटाइए, हृदयक बेथा छी।"

पतिक बात सुनि फरैक कऽ चौकीपर सँ उठि लालकाकी मधुआएल स्वरमे बजली-

"साँचे स्त्रीगण सबहक-मुहेँ सुनै छी जे पुरुख नँगरकट होइ छैथ! कुत्ता जकाँ सदिकाल नाँगैर टेँढ़े रहै छैन।"

"जे बुझी।"

"तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुर जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक औत।"

"चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझहे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोरेक एक्के वृत्त करैए, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।"

पढ़ुआ-कक्काक बेथा सुनि लालकाकीक मन कानि उठलैन। जाधैर ओछाइनोपर पड़ल रहता ताधैर सत्ती साध्वी तँ...।

लालकाकीकेँ चौकीपर बैसते पढ़ुआकाका आँखि-मे-आँखि मिला बजला-

"सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।"

'अहाँ छी' बजिते पढ़ुआकाकाकेँ मोन पड़लैन छठियारीक बात।

आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन-

"भारी भूल भेल जे अहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित अहाँ-मुहेँ सूनब।"

अवसर पाबि लालकाकी पुछि देलखिन-

"अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी केते दिन जीब? जेते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब? राजा-दैवक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब। अखन दुनू परानी जीबै छी, मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछैल कऽ चौकीपर ठाढ़ होइत पढ़ुआकाका बजला-

"नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जखन अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तखन तँ...।"



शब्द संख्या: 3057

ऑपरेशन

पत्नीक बढ़ैत बेमारी देखि चेतानन्द डॉक्टर ऐठाम जाइले रुपैआक ओरियान करए लगला। अपना हाथमे तीनेटा पचसटकही रहैन। कम-सँ-कम तँ पाँचो हजार चाही। जहिना गारामे उतरी नेने लोक घराड़ी लिखैले रजिष्ट्री ऑफिस जाइत तहिना चेतानन्द चौमासपर रुपैआ उठा पत्नीकेँ संग नेने डॉक्टर ऐठाम पहुँचला। ओना सुनियाकेँ गैस्टिकक शिकाइत चारि-पाँच बर्खसँ छैन मुदा आने-सभ जकाँ एकटा-दूटा गोटी खा-खा रोगकेँ दबने रहैथ।

जाँच-पड़ताल केलापर डॉक्टर बुझि गेलखिन जे सात दिनक अभ्यन्तरे दुनियाँ छोड़ि देती। मुदा जखन कियो मृत्युक बाट पकड़ैए तखने डॉक्टर ऐठाम जाइत अछि। बोल-भरोस दैत चेतानन्दकेँ डॉक्टर कहलकैन-

“हिनका आँतमे पत्थल-गोला भऽ गेल छैन, ऑपरेशन करए पड़त। मुदा शरीर तेते अब्बल भऽ गेल छैन जे ऑपरेशन करैसँ पहिने पाँच-छह दिन दबाइ खाए पड़तैन। देहमे खून बनतैन तखन ऑपरेशन असान हएत।”

कहि दबाइक पुरजी बना देलखिन। भाड़ाक कोठलीमे पहुँच पत्नीकेँ चौकीपर सुता, दुनू बच्चा–मांगैन आ बिलटी–केँ पत्नीक लगमे बैसा चेतानन्द बाजार विदा भेला। पहिने दबाइक दोकानपर पहुँच दबाइ कीनि, फूट-पाथेक दोकानमे रोटी-तरकारी कीनि डेरा एला। डेरा आबि समान रखि कलपर सँ पानि अनलैन। दबाइ खुआ दुनू बच्चाक संग अपनो खाए लगला। ओना, चेतानन्दकेँ खाइक मन नै होइन, कण्ठसँ निच्चाँ धँसबे ने करैन। मुदा पानि पीब-पीब खाए लगला। मन कहैन जँ अदहो पेट खाएब नहि, तँ दिन-राति दौड़-बरहा केना कएल हएत! जी-जाँति कऽ चेतानन्द तरकारीक संग तीनटा रोटी खाए दू गिलास पानि पीलैन। पानि पीब चेतानन्द बिलटीकेँ पानि पिआ पानिक हाथे मुँह पोछि देलखिन।

मांगैन अपने हाथे मुँह धोइ उठि कऽ ठाढ़ भेल आ थारी उठा अचोनामे धोइ कोणमे रखलैन।

पड़ल-पड़ल सुनिया सभ किछु देखै छेली। पतिक मनमे सटि थारी धोइत अपन रूप देखली। जहिना ऐनामे अपन चेहरा लोक देखैए तहिना सुनिया देखए लगली। दुनू भाए-बहिनकेँ पाँजर लगा सुतबैत सुनिया पतिकेँ कहलैन- “अहूँक देह-हाथ बथैत हएत, पड़ि रहू।”

बात बदलैत चेतानन्द बजला-

“मन केहेन बुझि पड़ैए?”

“अखन की कहब।”

बिनु बात दोहरौने चेतानन्द जाजीम बिछा निच्चेमे पड़ि रहला। बिलटीक देहपर हाथ सहलबैत सुनिया बजली-

“डॉक्टरे साहैब जकाँ बुच्चीकेँ डाँक्टरी पढ़ाएब। जखन बुच्ची डॉक्टरी पढ़ि लेत तँ अहिना कुरसी-टेबुल लगा कऽ काज करत, किने बुच्ची?”

तीन बर्खक बिलटी बाजल-

“नहि। खजुरिया दीदी जहाइन हमरो बिआह कऽ दे?”

बेटीक-मुहेँ बिआहक बात सुनि सुनिया हरा गेली। मनमे उठलैन घुमि कऽ घर जाएब तखन ने। बेमारी छुटत की नहि से के कहलक। दिन-राति तँ निच्चे-मुहेँ भेल जाइ छी। खेनाइयो-पीनाइ छुटले जाइए! विचार बदललैन- जँ मरि जाएब तँ बेटीक बिआह केना हएत? की बिलटी बिलैटिये जाएत? जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरो बिआह हएब भारी भऽ गेल छइ। ई तँ सहजे मइटुग्गर भऽ जाएत। मइटुग्गर बेटीकेँ कियो अपना घर लैयो जाइले तैयार हएत कि नहि। हे भगवान! एहेन युगमे बेटी किए देलह? जँ देबे केलह तँ ऐ बेटीक कोन दोख भेल जे मइटुग्गर भऽ दुनियाँक नजैरमे खसल रहत? यएह ने भानस-भात करैक लूरि नै हेतइ। की मनुक्ख माटि सदृश छी जे एकबेर आगिमे पकलापर अपन स्वरूप बदैल दइत। मनुक्ख तँ ओहन होइए जे अनाड़ी-सँ-जीवनी, भोगी-सँ-जोगी आ डाकू-सँ-साधू बनि जाइत अछि। की विधाता हमरा कपारमे यएह लिखलैन जे

संगीक संग छोड़ि असकरे वोनमे वौआइले छोड़ि दिऐन। जँ सएह लिखैक छेलैन तँ एक उमरिया देखि किए ने जोड़ा लगौलैन! तैबीच आँतमे दरद उठलैन। चिचियाइत कऽ बजली-

"हौ बाप, आब नै बँचब!"

खालीए सिमटीपर जाजीम बिछा, कपड़ाक मोटरी मुड़ीतर रखि उतान करे, बन्न दुनू आँखिकेँ बामा बाहिसँ झाँपि चेतानन्द पड़ल छला। मनमे उठलैन। अखन सीमाक सिपाही जकाँ ड्यूटीमे छी। ड्यूटीमे अराम कहाँ होइ छइ? अरामो तँ केते रंगक होइए। ओहनो अराम होइए जे निन्नसँ प्रेम करैए आ एहनो होइए जे अपन दुख निवारणक बाट जोहैए। फेर भेलैन भरिसक पत्नी नै बँचती! दुनू गोरेक बीचक अन्तिम समय गुजैर रहल अछि। अन्तिम समैपर नजैर पड़िते चेतानन्दकेँ मनमे उठलैन- लड़का-लड़कीक माने कोनो बर-कन्याक बिआह स्थापित करैमे उमेरक मानदंड किएक बनौल जाइत? जँ सन्ताने-ले होइए तँ तइमे उम्रक लगीचक कोन प्रयोजन? पनरह बर्खसँ पचास बर्खक सुविधा अछि। उम्रक बरबैर तँ अइले मानल गेल अछि किने जे दीर्घ जिनगी संग-संग चलैत रहए। तखन एना किए भेल? विद्यार्थी जीवनमे सपना देखै छेलौं जे मातृभूमिक सेवा करब। तँए नोकरी नै केलौं। ओना, नोकरी केतए करितौं? जैठाम जन्म भेल अछि ओइठाम ने शिक्षण संस्थान अछि आ ने कल-कारखाना, ने सरकारी कार्यालय अछि आ ने अस्पताल। की ऐठाम ऐ सबहक जरूरत नै छइ? की हमसभ सप्पत खेने छी जे अपना माटि-पानि परहक कारखानाक वस्तुक उपयोग नै करब, आकि शासनमे सहयोग नै करबै, आकि शिक्षा-स्वास्थक लाभ नै लेब? मुदा अखन धरि ऐसँ आगू बुझैक ने अवसर भेटल आ ने करैक जमीन। देश-सेवा की? यएह ने जे अपनो देशकेँ एक्कैसम शताब्दीक दुनियाँक कतारमे ठाढ़ करी। मुदा कतार तँ एकसँ लऽ कऽ साए तकक होइए। तइमे केते? एक दिस दुनियाँक गनल-चुनल धनवान, तँ दोसर दिस सड़कपर भीख मंगनिहारक संख्या ओते अछि जेते कताक देशक जनसंख्या नै छइ। तैकाल पत्नी मोन पड़लैन। जहिना अन्हार रातिमे माइक पाँजर लग सुतल बच्चा निन्न टुटिते उठि कऽ माइक सुतल मुँह देखि पुन: गर लगा कऽ सुति रहैत तहिना

चेतानन्द पत्नीक मूनल आँखि देखि पुन: ओछाइनपर आबि पड़ि रहला।

ओछाइनपर पड़िते चेतानन्दकेँ मोन पड़लैन कौलेजक ओ दिन जइ दिन सरस्वती पूजा स्थलपर सुनियासँ पहिल भेँट भेलैन। मुदा लगले मनमे आबि गेलैन कौलेजक डिग्री आ पी.एच-डी.क रजिष्ट्रेशन। पाँच बर्ख भऽ गेल मुदा एक्को अक्षर अखन धरि लिखि नै पेलौं। लिखियो केना पबितौं? अखन धरि तँ यएह ने बुझि पेलौं जे देश सेवा की? मुदा आब तँ सहजे पत्नीक भार कपारपर पड़ने बच्चाक माइयो हुअ पड़त। दोबर भार पड़त। बच्चाकेँ पढ़ाएब आकि अपने पढ़ब। कौलेज छोड़ला पछाइतसँ अखन धरि 'गृहसूत्रो' धुरझाड़ पढ़ल आ ने सीखल भेल। 'धर्मसूत्र' तँ पछुआएले अछि! खाली मंगलाचरण रटि नेने नै ने हएत। विधातोक अजीब खेल छैन। जहिना गणेशजी मुसो आ बाघोकेँ नाँगैर पकैड़ लड़बै छैथ तहिना विधातो रंग-बिरंगक जगहपर रंग-बिरंगक बानरक नाच, मदारी जकाँ ठाढ़ केने छैथ। एक दिस हार-पाँजर टुटल मनुक्खकेँ अपन देहक सोनित दऽ कियो देशसेवा करैत तँ दोसर दिस एक लबनी ताड़ी पिआ देशभक्त बनैत। कियो असमसानमे अपन बेटाक लहास जरबैत जिनगी देखैत तँ दोसर सजल-धजल विशाल भवनमे बैस मस्तीक जिनगीमे पलड़ैए! तैबीच सुनियाक बाजब सुनलैन-

"हौ बाप, आब नै बँचब!"

सुनिते हृदय चहैक गेलैन। मनकेँ थीर करैत आगूक बात सुनैले कान ठाढ़ केलैन। मुदा आगूक बात नै सुनि चेतानन्छक मनमे उठलैन- जहिना मिझेबैकाल डिबिया भुक-दे जोरसँ बरि जाइए, तहिना तँ ने भऽ गेल! मन गुन-धुनमे पड़ि गेलैन। एक मन कहैन जे जँ पत्नीक परान छुटि गेल होनि तखन की करब? आ दोसर मन कहैन जे परान नै छुटल हेतैन तखन की करब? ऐठाम तँ चारिए गोरे छी। तहूमे दूटा बच्चे अछि। जँ एक्कोरत्ती आँखिसँ नोर बहत तँ बच्चा सभ अनेरे चिचियाए लगत। गाममे तँ नइ छी जे समाजक लोक आबि कऽ मदैतो करता। मुदा ई जानि लेब तँ जरूरी अछि किने जे परान छुटि गेलैन आकि बँचल छैन। ओछाइनेपर सँ चेतानन्द पुछलखिन- "एना किए बजलौं?"

पतिक बात सुनि सुनिया बजली- "दर्दक धक्का लगि गेल छेलए, मुदा अखन असथिर भऽ गेल।"

साँझक आठ बजे डॉक्टर साहैब क्लिनिकसँ आबि सोझे वाथरूम विदा भेला। साँझू पहर टहलए नै जाइथ। स्पष्ट विचार रहैन जे टहलब तँ हुनकर छिऐन जे अपना पएरे चलै छैथ, गाड़ी-सवारीमे बैस टहलब मन बहलाएब छी। जाधैर वाथ रूमसँ निकलला ताधैर पत्नी टेबुल सजा, चौकीदार जकाँ केवाड़क परदा लग ठाढ़ छेलखिन। कुरसीपर बैस डॉक्टर साहैब रस-पानि कऽ अराम कुरसीपर बैस गेला। मन फुहराम हुअ लगलैन। टेबुल सम्हारि पत्नी चलि गेलखिन। भरि दिनक हिसाब जोड़ए लगला। नापल रोगी, नापल फीस तँए जोड़ैमे देरी नै लगलैन। आमदनीक हिसाब जोड़ि काजपर नजैर दौड़ौलैन। काजक ऊपर होइत मन छिछलैत सुनियापर आबि अँटैक गेलैन। मुदा लगले काज हरा गेलैन। मन उड़ि कऽ अपनेपर चलि एलैन। अपनापर अबिते खुशीसँ मन ठहाका मारलकैन। अँइ, कहू जे आठ घन्टा ड्यूटीक नियम अछि, तैठाम बारह घन्टा खटै छी तखन किए लोक बजैए जे 'फल्लाँ डॉक्टर दरमहे उठबैटा-ले अस्पताल जाइ छैथ!' यएह ने जे खानगी रोगी देखै छी! मुदा जाधैर अस्पतालक समुचित बेवस्था नै हएत ताधैर डॉक्टरे की करता? जैठाम अखन धरि रोगोक गिनती–पहचान–सेरिया कऽ नइ भेल अछि तैठाम रोगीक हिसाब जोड़ब औगताइमे बाजब हएत। फेर मन घुमि सुनियापर पहुँच गेलैन। आइ धरि एक्कोटा रोगी इलाजक बीच मरल नहि, मुदा...।

..आखिर कमी की अछि? जे दोख लगत? डॉक्टर साहैबक मन नचलैन। गंजीए-लूंगी पहिरने चेतानन्दक कोठरी दिस विदा भेला। सोगमे डुमल चेतानन्दकेँ पुछलखिन-

"कहाली जगले छैथ आकि सुतल?"

डॉक्टर साहैबक बात सुनि देह-हाथ समेट सुनिया बजली-

"जगले छी डॉक्टर साहैब।"

सुनियेँक चौकीपर बैस डॉक्टर साहैब पुछलखिन-

"केते दिनसँ दुखित छी?"

“ठीक-ठीक तँ नै कहि सकै छी मुदा पान-छह बर्खसँ पेटमे गैस बनए लगल। गामेमे बहुतो गोरेकेँ ई रोग छैन। वएह सभ दबाइ बता देलैन। एकटा-दूटा गोटी सभ दिन खाइ छेलौं, नीके रहै छेलौं।”

नजैर दौगबैत डॉक्टर साहैब पुछलखिन-

“उपासो करै छी?”

“केना नै करब! अहीपर तँ आंग-समांग, बाड़ी-फुलवारी लहराइए।”

“मासमे केतेक दिन सहै छी?”

“सात दिनमे रवि, मंगलवारी, शुक्रवारी तँ करिते छी। एकर बादो पाबैनक उपास सेहो करिते छी।”

“देहक काट-खोंट करए पड़त, ऑपरेशन हएत।”

“दोसर उपाय नै छइ। अपरेशनक कोनो ठेकान नै छै, बाल-बच्चा बिलैट जाएत।”

“हँ, उपाय छइ। दबाइ लिखि दइ छी। साँझ-परात खाइत रहलासँ नीके रहब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

चौकीपर सँ डॉक्टर उठि चेतानन्दकेँ बाँहि पकैड़ कोठरीसँ बाहर लऽ जा कहलखिन-

“आँतमे एहेन गोला बनि गेल छैन जे बिना काटने नै हेतैन। तहूमे रोग बढ़ैत-बढ़ैत एते जुआ गेलैन जे देहक कोनो लज्जैते नइ रहलैन। अंग-अंग बैस गेलैन। तीनसँ चारि दिनक जिनगी बँचल छैन। नीक हएत अहाँ भोरे गाम चलि जाउ। ऐठाम पहपैटमे पड़ि जाएब। बाजारमे सभ सुविधा रहितो कियो केकरो बेरपर ठाढ़ नै होइ छइ।”

कहि डॉक्टर साहैब घरमुहाँ भेला। कोठरी आबि चेतानन्द पत्नीकेँ कहलखिन-

“डॉक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलैन।”

“बड़बढ़ियाँ। भोरे विदा भऽ जाएब।”

चेतानन्दक नजैर सुनियाक परोछ भेलापर गेलैन। मनमे उठलैन माइक मृत्यु बेटा-बेटीकेँ कलंकक मोटरी कपारपर देने जाइ छइ। जँ से नहि, तँ मइटुग्गरकेँ ओछ-आँखिए किए देखल जाइए। पत्नीक मृत्युपरान्त जँ परिवार ठाढ़ करैले दोसर बिआह करब तँ आरो पहपैट बढ़त। कियो एहेन नइ हएत जे भूखल बच्चाकेँ खाइले कहत आकि पुछबै करत जे बच्चा भूखल अछि कि खेने अछि। मुदा ई जरूर पुछतै जे सतमाए खाइले दइ छथुन कि नहि। रंग-बिरंगक अबलट जोड़ब शुरू कऽ देत..!



शब्द संख्या: 1616

धर्मनाथ

प्रशासनिक सेवाक पच्चीस सालक पछाइत धर्मनाथ एहेन दलदलमे फँसि गेला जइसँ निकलब कठिन भऽ गेलैन। सुसम्पन्न परिवारमे जन्म भेने जिनगीमे कहियो दुखक अनुभव नइ भेल छेलैन। परिवारमे सरबे-सरबा पिता रहथिन तँए कोनो पैघ-सँ-पैघ काज उपस्थित भेने निपैट जाइन। लोप होइत जमीन्दारी बेवस्था, ढेरो सम्पैत गाम-सँ-बाहर धरि रहैन। चारि भाँइक भैयारी रघुनाथकेँ। चारू भाँइक बीच बँटवारा भऽ गेलैन। मन्दिर, स्कूल, खेत, पोखैर सभ बँटा गेलैन। भैयारीमे जेठ रहने रघुनाथकेँ पाँच बीघा जमीन जेठौंस तरे भेटलैन। रघुनाथकेँ चारि कन्या तीन पुत्र। दू कन्याक बिआह साझीए-मे भेल छेलैन। बाँकी दुनू कन्याक बिआहमे आठ बीघा खेत बिकलैन। घरक बरतन-बासन आ गहना-जेबर सेहो बन्हकी लगि गेलैन। तैयो पहिलुका अपेक्षा कुटुमैती हल्लुके भेलैन।

बच्चेसँ घर्मनाथ सुशील, सौम्य आ कर्मठ, जइसँ आइ.ए.एस. परीक्षा नीक-नहाँति पास केलैन। आइ.ए.एस. अफसर बनिते खानदान रूपी वृक्षमे फूल खिलल। अखन धरि परिवारमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक सेवा अधिक होइत, जे आब बदलल। खानगी शिक्षा सार्वजनिक रूपमे बढ़ए लगल। घरक चिन्तासँ मुक्त धर्मनाथ, तँए परिवारक भविस मात्र अनुमानसँ करैथ। अखन धरिक सेवा (नोकरी) धर्मनाथक इमानदारीक गंगामे बीतल। जहिना गंगामे सुरूजक प्रकाश पड़लासँ चमकैए तहिना धर्मनाथक जिनगीमे इमान स्पष्ट झलकैत रहैन।

आरम्भमे कम वेतन आ छोट परिवारो धर्मनाथकेँ रहैन। जे आस्ते-आस्ते परिवारो बढ़लैन आ वेतनो। पाछू-पाछू महगियो पछुऔलकैन। बासी बँचए ने कुत्ता खाए। मासक कमाइ मासेमे सठि जाइन।

परिवारक बजट, धर्मनाथ एहेन बनौने छला जे वेतनक भीतरे चलि जाइन। मुदा संगी-साथीक बीच पैंच-पालट सेहो चलैत रहैन। कर्ज लेब आ

सूदिपर कर्ज देब, दुनूकेँ धर्मनाथ पाप बुझैथ। सदिखन परियास रहैन जे परिवार मेहनती बनए। पत्नी समैयक उपयोग नियमबद्ध भऽ करैन। खाइ-पीबैक वस्तुसँ लऽ कऽ नुआ-बस्तरपर विशेष धियान राखैथ। कपड़ा साफ करब, आइरन करब, सुइया-डोराक छोट-छीन काज इत्यादि अपने कऽ लइ छेली। पढ़ै-लिखैक वातावरण धर्मनाथक क्रिया-कलापसँ प्रभावित छल। सालक मास भरिक छुट्टी धर्मनाथ गामेमे सपरिवार बितबै छला। छुट्टीए मासक वेतनसँ गाड़ीक मासूलक संग सनेस तक पुरबै छला।

रघुनाथ मने-मन सोचै छला जे गामक अज-गज देखि धर्मनाथकेँ होइत हेतैन जे कोनो वस्तुक कमी नहि, मुदा बिना खेत बेचने परिवारक गाड़ी ससरब कठिन अछि। जेते खेत बिकाइ छेलैन ओते उपजो कमिते जाइ छेलैन।

नमहर-नमहर घर। जेकर मरम्मत आ रंग-टीप करैमे सेहो अधिक खर्च होइ छेलैन। ढहल-ढनमनाएल हथिसार। घोड़ाक घर ओहिना पड़ल जइमे बिढ़नी, मधुमाछी, बादुर खोंता लगौने। कटैया काँट आ अन्डीक गाछ सौंसे घरमे जन्मल। जँ टुटलाहा घरक पजेबो रघुनाथ बेच लितैथ तैयो केते काज ससैर जैतैन मुदा जँ घरक पजेबा बिकाएत तँ बाँकीए की रहत! घरक आगू झील जकाँ पोखैर। पोखैरक चारू महारमे चारिटा ईंटा-सीमटीक घाट बनौल। पुरान भेने चारू घाट टुटि गेल छल, जइसँ नहाइयो-जोकर आब नइ रहल। पजेबा गुड़ैक-गुड़ैक निच्चाँ-पानिमे छिड़िया गेल। पैरमे चोट लगै दुआरे लोक नहेनाइए छोड़ि देलक। सौंसे पोखैर समाढ़ आ कुम्ही तेना वोन जकाँ भेल जे पैसब मोसकिल। बीघा भरिक फुलवारी, जइमे सैयो रंगक फूल लगौल छल। चारिटा नोकर सभ दिन फूलेक देखभाल करै छल जे अखन गाए-महींसक चारागाह बनि गेल।

एक मास अधिक छुट्टी लऽ धर्मनाथ गाम एला। मनमे विचारि आएल छला जे जेठ बेटीक बिआह करब। आशा बी.ए. आनर्सक परीक्षा देने छल। कन्यादान माए-बाप-ले ओहने होइत जेहने बेटा-ले वृद्ध माए-बापक सेवा। उन्नैसम बर्ख आशा टपि गेल, तँए बिआह करब आवश्यक छेलैन। मने-मन धर्मनाथ सोचै छला जे ओहन कार्य उपस्थिति भऽ गेल अछि जइ सम्बन्धमे किछु ने बुझै छी। केना हएत? की करब? किनका

कहबैन? विचित्र उलझनमे धर्मनाथक मन उलझल रहैन। हमहूँ तँ समाजमे केकरो कोनो उपकार नै केलिऐ तँए कियो हमरे किए करत? गुनधुन करैत कोठरीसँ निकैल, असकरे टहलबो करैथ आ सोचबो करैथ।

गामक बेरोजगार युवक सभ, धर्मनाथकेँ बाहर बुलैत देखि कियो साइकिलपर चढ़ि तँ, कियो मोटर साइकिलपर छींटबला शर्ट-पेंट पहिर केश फहरबैत, बामा हाथे रुमाल आदहिना होथे साइकिलक हेण्डिलपर पकड़ने, मुँहमे सिगरेट लगौने धर्मनाथक आगूमे अँठि-अँठि कऽ धुँओ उड़बैत आ चक्करो कटैत। ओना धर्मनाथ मुड़ी निच्चाँ केने चलैथ मुदा अफसरक आँखि बिना देखने केना रहत। इमानक आँखि रहने धर्मनाथमे कोनो करुआहट नहि, जे प्रतिष्ठाकेँ मिसियो भरि डगमगैबतैन। मने-मन यएह सोचैथ जे प्रतिष्ठा ओहन वस्तु छी जे ने केकरो देने होइ छै आ ने केकरो लेने जाइते छइ। ओ अपने केने होइ छै आ अपने केने जाइ छइ।

गाम एला धर्मनाथकेँ सात दिन भऽ गेलैन। मुदा अखन धरि बिआहक कोनो चरचो नइ भेल।

आठम दिन धर्मनाथ आशाक बिआहक चर्चा पिता लग केलखिन। पिता असमंजसमे पड़ि मने-मन सोचए लगला जे अखन धरि जेहेन खानदानी आ सम्पन्न परिवारमे कुटुमैटी करैत एलौं, ओहन घरमे एते पढ़ल-लिखल बर भेटब मोसकिल अछि। जँ भेटबो करत तँ खर्चाक इत्ता नइ रहत। धर्मनाथ केते खर्च करता से कहबे ने केलैन। पुछबैन केना? हमरो तँ पोतीए छी। खाएर.., बोल-भरोस दइक खियालसँ रघुनाथ फोन उठा कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महिम धरिकेँ जानकारी दैत भँजियबैले कहलखिन।

जिनगीक चढ़ा-उतरी रघुनाथक विचारकेँ बदैल देलकैन। जखन पहिलुका सुख-भोग मोन पड़ै छेलैन तँ आँखिसँ नोर टघड़ए लगैन। मुदा आब पछतेनहि की, चिड़िया तँ चुकि गेल! जेतबो दिन मृत्युक शेष छैन ओहो केते निच्चाँ ढड़कतैन सेहो ठीक नहि। सिरिफ एक्केठामसँ एम.ए. पास लड़का भाँजपर चढ़लैन मुदा कुल-मूल दब।

जमा केलहा सहित बिआहक खर्च लेल धर्मनाथ एक लाख रुपैआ लऽ कऽ आएल छला। दरमाहापर जिनिहारकेँ परिवारक खर्च पुरौलापर

जेतेक बँचैत ओ जँ जिनगियो भरि जमा तरता तैयो आइक युगमे एकटा बेटीक बिआह पार लगब कठिन अछि।

प्रशासनिक काजमे धर्मनाथ दक्ष बुझल जाइत तँए विशेष इज्जत रहैन। इमान आ चरित्रकेँ बँचबैत धर्मनाथ ऊपर-निच्चाँक बीच ताल-मेल बैसा आसानीसँ ऑफिसक काज निपटा लइ छला। मुदा परिवारक काजसँ अनभिज्ञ रहने किछु फुरबे ने करैन। गाम एलापर मने-मन अन्दाजैथ जे कियो मदैत करैबला छैथ कि नहि! एकाएक धर्मनाथकेँ पच्चीस-तीस साल पहिलुका बात मोन पड़लैन। प्रोफेसर रामरतन, जे विचारवान आ सामाजिक लोक सेहो छैथ, गुरुओ छैथ, दू साल पढ़ेनौं छैथ, हुनका जा कऽ कहिऐन। हमरासँ तँ कहियो हुनका मुहाँ-ठुट्ठी नइ भेलैन मुदा पिताजीसँ बक्क-झक्क होइते रहै छैन। सायंकाल धर्मनाथ राधाकेँ कहलखिन-

“काकीजी, ऐठाम जा रहल छी। जँ काकाजी भेँट भऽ जेता तँ बात-विचार करैमे अबेरो भऽ सकैए। तँए अनदेशा नै करब।”

एक टकसँ राधा पति दिस देखैत रहली। चिन्ता आ परेशानी धर्मनाथक चेहरासँ स्पष्ट झलकैत रहैन, पछाइत राधाक नजैर चन्द्रमुखी आशापर पड़लैन, जे अखन धरि दुलार आ सिनेहक मूर्ति छल। अनासुरती कमी बुझि पड़ए लगलैन। थलकमल जकाँ। जे सूर्योदयसँ पहिने उज्जर रहैए आ रसे-रसे लाल होइत गाढ़ भऽ जाइए, तहिना आशाक प्रति बदलैत सिनेह राधाकेँ बुझि पड़ए लगलैन। मने-मन सोचए लगली। यएह छी आजुक समाज। जे बेटी समाजक बुझल जाइए वएह अगम पानिमे गड़गोटियो दइए। ..गुम-सुम राधा ओसारपर बैस रहली।

माइक खसल मन देखि आशा पुछलकैन-

“माए, मन किए एते खसल छौ?”

अपनाकेँ छिपबैत राधा बजली-

“नइ- नइ, कहाँ! क...।”

राधा अपन बेथाकेँ छिपबए लगली, मुदा मलिन मुँह आ बोलक ध्वनि बेथाकेँ अढ़े-अढ़ निकालैत रहैन।

प्रोफेसर रामरतनक दरबज्जा सुन्न देखि धर्मनाथ ठाढ़ भऽ सोचए लगला जे भरिसक नै छैथ। मुदा बिना भाँज लगौने घुमबो उचित नहि। असगरे धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनक दुआरपर ठाढ़ रहला। थोड़े-कालक पछाइत तीन-चारि गोरेकेँ अबैत देखि बोली अकानैत धर्मनाथक हृदयमे आशा जगलैन। एक गोरेक हाथमे दूधक लोटा। प्रोफेसर रामरतनकेँ देखिते जेना भादवक दुपहरियामे कारी मेघसँ झाँपल सुरूज हवाक सिहकीसँ छँटि जाइए आ भुक-दे सुरूज देखि पड़ैत तहिना धर्मनाथकेँ भेलैन। लग अबिते धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनकेँ गोड़ लगलैन।

धर्मनाथकेँ असीरवाद दैत बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसबैत प्रोफेसर रामरतन अपने हाथ-पएर धोइले कलपर गेला। पत्नी चित्रलेखा लालटेन नेस आँगनसँ नेने एली। चित्रलेखोकेँ देखिते धर्मनाथ गोड़ लगलैन।

असिरवाद दैत चित्रलेखा बजली-

“भगवान, एक-सँ-एक्कैस करैथ। बौआ, अखन केतए छी?”

“चाची, छी तँ बड़ दूर, जनिते हेबै केरल।”

“परिवार आनन्दसँ रहै छैथ किने?”

“हँ, अपने सबहक दयासँ सभ आनन्द अछि।”

“बच्चा?”

“तीन भाए-बहिन। जेठ बेटी, छोट दुनू बेटा। आशा बी.ए.मे परीक्षा देलक। जेठ बेटा आइ.ए.मे आ छोट मैट्रिकमे पढ़ैए।”

“आशा बिआह करै जोग तँ भऽ गेल हएत। काज केनहि बढ़ियाँ।”

“अपनो सएह विचार अछि। तखन तँ...।”

“भगवान थोड़े अधला करता। जे मनमे अछि से हेबे करत। अहाँ सन बेटा भगवान सभकेँ देथुन।”

चित्रलेखाक बात सुनि धर्मनाथक आँखि सिमसिमा गेलैन जे नोरक बून बनि निकलए चाहै छल, जेकरा अपन बामा हाथसँ धर्मनाथ पोछि लेलैन। मुदा बोली फुटिते धर्मनाथक हृदयक बेथा निकलए लगलैन। एकाएक धर्मनाथक मनमे एलैन जे एते पैघ पदपर रहनिहारकेँ जँ आँखिसँ

नोर खसैन जे देशक सभसँ पैघ बुझल जाइए! तखन खुशीसँ के रहैत हएत। ताबे प्रोफेसर रामरतन चापाकलपर सँ हाथ-पएर धोइ खराम पटपटबैत दरबज्जापर एला।

चाहो बनल। लोटामे पानि नेने चित्रलेखा एली। गिलासमे लोटासँ पानि ढारि धर्मनाथकेँ देलखिन। एक गिलास पानि पीब धर्मनाथ चाह पीबए लगला। प्रोफेसर रामरतन चाहक चुस्की लैत धर्मनाथकेँ कुशल पुछलखिन। कुशलक क्रममे धर्मनाथ आशा बिआहक चर्च केलैन।

प्रोफेसर रामरतन कहलखिन- "केकर बाँकी रहलैए जे अहाँक नै हएत।"

"चाचाजी, समाजसँ तँ सभ दिन हटल रहलौं। जिनगीक पहिल काज छी तँए अगम-अथाह बुझि पड़ैए।"

मुड़ी डोलबैत रामरतन बजला- "हँ, ठीके कहलौं। अहाँ हमर समाजे नहि, छात्रो छी तँए अहाँक बेटी की हमर बेटी नहि?"

प्रोफेसर रामरतनक विचार सुनि धर्मनाथक हृदयमे आशाक अँकुर उदित हुअ लगलैन। जहिना धारामे भँसैतकेँ किछु सहारा भेटलापर खुशी होइ छै तहिना धर्मनाथोकेँ भेलैन।

पच्चीस-तीस बर्ख पहिलुका प्रोफेसर रामरतनक रूप धर्मनाथक हृदयमे नाचए लगलैन। धर्मनाथ जिनगीक ओइ चौबट्टीपर आबि ठाढ़ भेल छला, जैठामसँ आगूक रस्ता की हएत से बुझबे ने करैथ। अपन बेथा व्यक्त करैत धर्मनाथ बजला-

"दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं जे बेटी बिआहक प्रक्रिया पूरा कऽ घूमब। मुदा आठ दिन ओहिना बीति गेल।"

"सभ काज हँसी-खुशीसँ सम्पन्न भऽ जाएत आ समैपर चलियो जाएब। बीचमे किछु प्रश्न अछि। अखन धरि जमीनदार खनदानमे रहलौं, जेकर पतन भऽ गेल। सिरिफ ओकर ढाँचा ठाढ़ छइ। जे उदीयमान अछि ओइ दिशामे बढ़ब बुधियारी होएत।"

"अपनेक ऊपर बिआहक भार दऽ रहल छी तँए कोनो तरहक मान-अपमानक प्रश्न मनमे नै अछि।"

“दहेज विरोधी हम सभ दिन रहलौं जेकरे चलैत अहाँक पिताजीक संग मतभेद रहल। मतभेदोक उपरान्त कहियो कोनो अधला केलौं से अखनो मन नइ अछि। आशा हमर बेटी छी। कन्यादान हम करब!”

जोशमे बजैत प्रोफेसर रामरतन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेला। ..अन्हरिया रातिक दुआरे राधा बेटा-बेटीक संगे प्रोफेसर रामरतन ऐठाम एली। दरबज्जासँ थोड़े फरिक्के रहैथ कि प्रोफेसर रामरतनकेँ जोरसँ बजैत सुनि ठाढ़ भऽ अकानए लगली। मुदा कोनो अनर्गल बात नै सुनि सभ दरबज्जाक आगू एली। दरबज्जा लग चारू गोरेकेँ देखि प्रोफेसर रामरतन पुछलखिन। धर्मनाथक परिवार सुनिते उठि कऽ चारू गोरेकेँ आँगन लऽ जा पत्नीकेँ कहलखिन-

“जल्दी हिनका सभकेँ खुआउ। बिना खेने केना जाए देबैन?”

चारू गोरेकेँ चित्रलेखा रोटी-तरकारी खुऔलैन।

प्रोफेसर रामरतनक ऐठामसँ घुमैकाल धर्मनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“जहिना आशाक बिआहक चिन्तासँ हृदय थरथराइ छल तहिना चाचाजीक आश्वासनसँ मन हल्लुक भऽ गेल। ओ सभ भार लऽ लेलैन।”

हँसैत राधा बजली- “निर्बलकेँ बल राम होइ छइ। नीकक फल कखनो अधला नै होइ छइ। थोड़े-काल-ले सामाजिक परिवेशमे भाइयो जाइ छै मुदा ओकर परवाह मनुक्खकेँ नै करैक चाही।”

प्रोफेसर रामरतन दीनानाथसँ बिआहक सम्बन्धमे सभ बात केलैन। दीनानाथक बेटा एम.ए. कऽ पेट्रोल पम्प चलबैत। एकटा मैक्सी, भाड़ामे सेहो चलबैत। खेत तँ बहुत नहि, मुदा पाँच कोठरीक पक्का मकान आ घराड़ियो नमगर-चौड़गर। दीनानाथ हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी कलकत्तासँ रिटायर भऽ गामेमे लेथ मशीन चलबैत। अपने पुरान मकेनिक। आशा आ श्यामक बीच बिना दहेजक बिआह पक्का भऽ गेल।

बिआहसँ पहिने समाचार पसैर गेल। रघुनाथक कानमे समाचार पहुँचल। समाचार सुनि एहेन चोट लगलैन जे एकाएक अचेत भऽ गेला। होश होइते सोचए लगला। एक दिस प्रोफेसर रामरतनक अगुआइमे बिआह होएत जे पुश्तैनी दुश्मन। दोसर जमीन्दारीक ठाठ-बाठकेँ पानिमे

धर्मनाथ फेक रहल अछि! ओछाइनपर पड़ल रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“जइ आशासँ धर्मनाथकेँ पढ़ेलौं ओ सभ पानिमे चलि गेल!”

पत्नी पुछलकैन- “किए एते करुआएल छी?”

“बोलीए-टा करुआएल अछि, होइए जे लोढ़ीसँ कपार फोड़ि मरि जाइ!”

“एना बताह जकाँ किए बजै छी?”

“हम बताह नइ छी, करेजमे चोट लगल अछि। एक क्षण ऐठाम रहब पहाड़ बुझि पड़ैए। जाबे धर्मनाथ रहत, हम ऐ घरमे नइ रहब। चलू, कल्हिए दुनू परानी काशी। ओत्तै रहब। जखन बाप-दादाक प्रतिष्ठाकेँ पानिमे फेक देलक, तखन जीविए कऽ...।”

“बड़ीटा दुनियाँ छै, नै हरिअर गाछ भेटत तँ सुखलो गाछ तँ भेटबे करत। ओतै रहब।”

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे एलैन, बीचमे हम की कऽ सकै छी। माथपर दुनू हाथ दऽ ओसारपर बैस गेली। दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैन। असकरे रघुनाथ ओछाइनपर पड़ल बड़बड़ाइत रहला। बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत बोम फाड़ि कानए लगला। रघुनाथक कानब सुनि चारूकातसँ लोक दौगल आएल। डॉक्टर बजौल गेल। जाँचि कऽ डॉक्टर कहलकैन- “दिमागक नस फटि गेलैन। अखने लहेरियासरए लऽ जैयौन।”

गाममे हल्ला भऽ गेल जे रघुनाथ बाबा मरि गेला।

जनिजाति सभ अपनामे गप्प करैत जे रघुनाथ बाबाकेँ भूत लगि गेलैन..! नवकी कन्या सभ बाजए लगली-

“बाबाकेँ चुड़ीन लगि गेलैन..!”

धिया-पुता सभ थपड़ी बाजा-बजा नचबो करैत आ बजबो करैत-

“बाबा मुइला पुड़ी-जिलेबीक भोज खाएब।”

❑ शब्द संख्या: 1968

सरोजनी

मझोलका किसान भेलोपर जमीन्दारीक ठाठ-बाठ आ रूआब अखनो हरदेवकेँ छैन्हे। वएह हथिसार सन-सन घर, बीघा भरिक फुलवारी, घरक आगूमे झील सन पोखैर, जेकरा चारू महारमे मेड़हौल घाट। कलम-गाछीक कमी नहि, सभ रंगक आम फुटा-फुटा लगौने। सरही फुटे, कलमी फुटे। एक भागमे सभ रंगक इलची पाँच कट्ठामे। आसामक वोन जकाँ बँसबाड़ि जइमे हजारो बाँस सुखल। शीशोक गाछक डारि सभ मोटा-मोटा गाछे जकाँ भऽ गेल। लताम, बेल, धात्री, सपाटू, शरीफा, आँता, कटहर, बरहर इत्यादिक बगीचा सेहो छैन्हे। सालो भरि कोनो-ने-कोनो फल गाछमे लुबधले रहै छैन। अनेको रंगक देशी-विदेशी केराक करजान। बनसी खेलै दुआरे पोखैरक बीचो-बीचो पुल जकाँ सेहो बनौने। दोसराक खेतमे पएर नै देब, एहेन रूआब हरदेवक बाबाक अमलदारीमे रहैन।

जमीन्दारी टुटलोपर बाहरसँ तँ नइ बुझि पड़ैत मुदा भीतरे-भीतर फोंक भऽ गेल छैन। महाजनी चलि गेलैन। बखारी टुटि गेलैन, नोकर-चाकर नइ रहलैन, मुदा मनमे अखनो ओ टेंरही छैन्हे। पाँच भाँइक भैयारीमे सभ किछु बँटा गेलैन। अपन समांग सभ तँ अधिक पढ़ल-लिखल नहि, मुदा पढ़ल-लिखल नोकर रखि सभ कारोबार चलबै छैथ। एते दिन झाँपि-तोपि निमहलैन। मुदा आब ने दोसर रूआब मानैले तैयार आ ने अपना दम, जे दोसरपर रूआब करब।

हरदेव बच्चेसँ बाबाक संग कोट-कचहरी अबैत-जाइत रहला। तइ क्रममे कानून-कायदा, लड़ाइ-झगड़ाक भाँज बुझने छला। घरोपर हरदेव नियमित क्रिया-कलाप बनौने छला। भोरे उठि दतमैन आ कुर्रा-आचमैन कऽ भरि छाँक पानि पीब, पान खा, लोटा लऽ मैदान दिस जाइ जाइथ। घन्टो भरि सिनुरिया आमक गाछक निच्चाँमे लोटा रखि सौंसे गाछी टहैल-बुलि देखै छला। पाकल फल तोड़ि-तोड़ि गमछामे बान्हि घुमै-काल घरपर

नेने अबै छला। सभ दिन टटका फल खेने दुनू परानीक शरीर बुलन्द रहलैन। चारिटा गाए पोसने छला। गाए तँ देहातीए मुदा नमहर कदक। एकवर्णा कारी। डेढ़ियापर बाहैत-बिआइत तँए सभ दिन दूधक लाट रहबे करैन। सभ दिन बेरू-पहरमे असेरी गिलाससँ दू गिलास दूधमे भाँग घोड़ि पीब हरदेव बनसी खेलए जाइथ। बीच पोखैरमे चौखुट बनसी खेलैले जे बनौने छला ओइपर जा कुरता निकालि कऽ रखि, पान खा बनसी खेलै छला।

एयर कण्डीशन जकाँ जलहवा तहूमे झूलैत झिझड़ीदार परदा जकाँ भाँगक निशाँ, हरदेवक हृदयकेँ झूलबैत रहै छल। हरिअर-हरिअर कुमही हवाक सिहकीक संग जलक सवारीपर सपरिवार सवार भऽ रसे-रसे पोखैरमे टहलै छल। बहुत पहिने हरदेवक पिता पोखैरभिंडासँ ललका कमल आ बेरमाक बड़की पोखैरसँ उजरा कमलक गाछ आनि लगौने रहैथ। दुनू रंगक कमलक शोभा देखैमे अद्भुत लगै छल। आनन्दक समुद्रमे असकरे हरदेव सभ दिन मगन भऽ झूमैत रहै छला। छोटकी माछ सभ बनसी बोर निचेनसँ खा लइत। लूक-झूक गोसाँइ होइते हरदेव बनसी समेट घुमि कऽ घर अबै छला। घरपर आबि चाह पीब टहलैले निकलैथ।

बच्चेसँ घुरन हरदेव ऐठाम नोकरी करैत। साते-आठ सालक जखन रहए, बाप मरि गेलइ। बपटुग्गर घुरन माइक संग नमहर जिनगी जीबैले दुखक पहाड़सँ संघर्ष करए लगल। जखन घुरन छँटगर भेल, बिआह-दुरागमन भेलै, तखन पाँच रुपैआ मासक नोकरी छोड़ि बोनियाती काज हरदेव ऐठाम करए लगल।

घुरन आ हरदेव एकतुरिया। हरदेव सुखक बीच आ घुरन दुखक बीच जिनगी जिबैत। एकतुरिया रहने दुनूमे घनिष्ठ प्रेम। एकठाम रहने घुरनपर हरदेवक असीम बिसवास। जँ कहियो हरदेव केतौ बाहर जाइ छला तँ घुरनेपर खेती-बाड़ीक भार दऽ जाइ छला। घुरनक पत्नी–सोमनी–हरदेवक अँगनाक सभ काज जेना बरतन-बासन धोनाइसँ लऽ कऽ पानि भरनाइ, चूल्हि-चिनमार निपनाइ इत्यादि करै छेली, जइसँ खेनाइ-पीनाइ चलि जाइ छेलैन। बेटा–रमेश– माइक संग हरदेवक आँगनमे खाइत-खेलाइत। सरोजनी–हरदेवक बेटी–आ रमेश कहियो अटकन-मटकन

खेलए तँ कहियो चोरा-नुक्की।

गामेमे स्कूल रहने रमेशक नाओं घुरन लिखा देलक। सरोजनी सेहो स्कूल जाए लगल। पढ़ैमे रमेश चन्सगर। हरदेवक परिवारसँ लाट रहने रमेशक गरीबी छिपल। रमेश दू बर्ख सरोजनीसँ जेठ। बच्चेसँ रमेश रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। कियो बाल-ग्रह कहै छेलै तँ कियो पछुआ लागब। घुरन आ सोमनी केते गहवर रमेशकेँ लऽ लऽ गेल मुदा रोग नइ छुटलै। दिनानुदिन रोग बढ़िते गेलइ। अन्तमे निराश भऽ घुरन सोने वैदसँ बेटाक इलाज करौलक। साते दिनमे बेमारी छुटि गेलइ। मुदा रमेशक शरीर खिदखिदाहे रहल।

परसूए माघक पूर्णिमा। गंगा नहाइले गामक मरद-स्त्रीगण उमड़ल। सुशीला सेहो पति–हरदेव–केँ चलैले कहलकैन। दुनू परानी हरदेव गंगा-नहाइले रौतुके गाड़ीसँ सिमरिया विदा भेला। हरदेव अँगनाक भार सोमनीकेँ आ माल-जालक भार घुरनकेँ दऽ गेला। सिरिफ सरोजनीए-टा रहल। सोमनीकेँ सरोजनी चाची कहैत।

चारि साल पहिने गामक स्कूलसँ निकैल सरोजनी आ रमेश हाइ-स्कूलमे पढ़ैत। संगे दुनू गोरे स्कूल अबैत-जाइत।

रमेश आ सरोजनी ओसारक चौकीपर बैस पढ़ै-लिखैक गप-सप्प करैत छल। सोमनी आँगन बहारि बाढ़ैन रखिते छेली कि सरोजनी पुछलकैन-

“चाची, ऐगला मासमे मैट्रिकक परीक्षा हएत। मैट्रिक पछाइत रमेशकेँ पढ़ेबै की नहि?”

सोमनीक मनक आशापर गरीबीक चद्दैर झँपने। ठाढ़ भऽ एकटक सरोजनीकेँ देख, बजली-

“बुच्ची कहलौं तँ बड़ नीक बात। कोन माए-बापकेँ बेटा-बेटीक पढ़बैक मनोरथ नइ होइ छै, मुदा खरचा जुमतै? गरीब लोक कोनो लोक होइए। सभ मनोरथ संगे जाइ छइ।”

सोमनीक बात सुनि सरोजनीक मुँहक हँसी बिला गेल। कनीकाल चुप भऽ बाजल- “कहलौं तँ ठीके चाची। हमहीं अखन बाप-माइक ऐठाम

छी, सुख करै छी। जँ हमरे गरीब घरमे बिआह हुअए तँ अखुनका सुख रहत।”

“जेकरा जे भाग-तकदीरमे लिखल रहै छै से होइते छइ। रमेशक भागे खराप छै तँ सुख केतए-सँ औत।”

“चाची, गाममे तँ नोकरी नहियेँ हेतै, तब तँ बाहरे जाए पड़तै?”

“कियो चिन्हारक संग लगा दिल्ली पठा देबइ। कोठीमे कोनो काज भइये जेतइ।”

“रमेश दिल्लीमे नोकरी करत आ अहाँ दुनू परानी ऐठाम रहब। तखन बर-बेमारीमे केकरा के देखबै?”

“जेकरा जे दुख आकि सुख लिखल रहै छै से आन थोड़े बाँटि लइ छइ।”

सरोजनीक नजैरमे आशाक किरिण चमकैत रहइ। जखन कि सोमनी निराशाक पहाड़ तर दबाएल छेली। बच्चेसँ जुड़ल सिनेहकेँ जेना वीणाक ध्वनिकेँ हथौरीक चोट भग्न कऽ दइ छै तहिना सरोजनीक स्वरकेँ सोमनीक आवाज ध्वस्त कऽ देलक।

पाँचतारा होटलमे डेरा। जहाजसँ देश-विदेशक एनाइ-गेनाइ। नीक नोकरीक संग नीक दरमहो, तैपर सँ चोरा-नुका कऽ दोहरी धंधो। ऐश-मौजक जिनगी जीबैत, पुष्ट गोर शरीर हृदयनारायणक। ने घरक चिन्ता आ ने परिवारक बोझ। होटलक मालिक अंगरेज, जिनका दुइ गोट कन्या। दुनूकेँ एक-एक होटल दऽ अपन भार हटौने। अपने–अंगरेज साहैब–दुनू बापूत लोहाक कारखाना चलबैत रहैथ। होटल चलौनिहारि रोजी। जखन हृदयनारायणकेँ होटलमे अबैत रोजी देखै तँ आँखि गड़ा एकटकसँ निच्चाँ-ऊपर निहारए लगइ। कोठरीमे अबिते, रोजी अनेरे लगमे जा-जा हृदयनारायणकेँ पुछैत- “कोनो वस्तुक दिक्कत ने तँ अछि?”

बी.ए.पास रोजी। बीस बर्खसँ ऊपरे उमेर। सोनहुल केश, भुल्ल गोर। छरहरा शरीर, फुर्तीसँ छट-छट करैत।

हृदयनारायण क्लबक सदस्य सेहो छला। मन-माफित मनोरंजन करैथ। वसन्तक बहार छोड़ि पतझड़क अनुभूतिसँ अनभुआर रहैथ। देहाती

जिनगीसँ गुजरल हृदयनारायण, छल-प्रपंचसँ कोसो दूर छला। ड्यूटीसँ आबि कपड़ा बदैल स्नान-जलखै कऽ, सोफापर लेटि ऐगला जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। बिआह करब.., परिवार बनाएब...।

हृदयनारायणक कोठरीमे प्रवेश कऽ रोजी कुरसीपर बैसैत बाजल-

“चिन्ताक पहाड़क तरमे किए दबल छी?”

सुखल मुस्की दैत हृदयनारायण बजला-

“थाकल छी।”

रोजीक मुस्की भरल मधुर स्वर हृदयनारायणक हृदयमे चुभए लगलैन। प्रेमक अँकुर अँकुरित हुअ लगलैन। हृदयनारायण मुस्कियाए लगला। रिंग बजा रोजी नोकरकेँ कौफी आनैक आदेश देलक। नोकर कौफी-सिगरेट-सलाइ नेने आएल।

जखने हृदयनारायणक आगू कौफीक कप रखलक कि रोजी कप-सँ-कप भिरा कौफीक चुस्की लिअ लागल। दू-चारि चुरूकी लऽ, कप रखि रोजी दूटा सिगरेट सुनगौलक। एकटा हृदयनारायणक हाथमे आ दोसर अपने कौफीक संगे पीबए लगल।

पाँच साल पहिने रोजी बी.ए. पास केने छल। पसिनगर संगी नइ भेटने अखन धरि अविवाहिते। बिना हिचक केने हृदयनारायणसँ पुछलक-

“बिआह भऽ गेल अछि?”

“नहि। परिवारमे माता-पिता छैथ।”

“अखन धरि बिआह किएक ने केलौं?”

“नोकरीसँ पहिने सोचैत रही जे जाधैर अपना पैरपर ठाढ़ नै भऽ जाएब ताधैर बिआह नइ करब।”

“तीन सालसँ तँ नोकरियो करै छी?”

“वएह सोचि रहल छी।”

हृदयनारायणक हृदयक आँखि रोजीकेँ देखए लगल। धड़फड़ा कऽ उठि रोजी हँसैत चलि गेल। हृदयनारायणकेँ आरो गप्प करैक इच्छा छल जे अखन नइ भऽ सकलैन। गामक पछुआएल जिनगीकेँ शहरक

अगुआएल जिनगीमे बदलैक विचार हृदयनारायणक मनमे एलैन। मुदा गंगाजल ताबे धरि गंगेजल रहैए जाबे धरि गंगा नदीक बीच रहैए मुदा वएह अथाह समुद्रमे मिललापर बदैल जाइ छइ। ऐ द्वन्द्वमे हृदयनारायण पड़ल-पड़ल सिरमापर माथ दऽ कछमछ करए लगला। दस बजे रातिक घन्टी घड़ीमे टनटनाएल। बाहरक गँहिकीक आएब बन्न भऽ गेल। मुख्य दरवाजामे ताला लगि गेल। रोजी सिगरेटक डिब्बा, सलाइ आ ह्विस्कीक बोतल नेने हृदयनारायणक कोठरीमे पहुँच गेल। दूटा गिलासमे ह्विस्कीक बोतलक मुन्ना खोलि ढारलक। एकटा गिलास हृदयनारायणक आगूमे बढ़ा देलक आ दोसरमे अपने पीबए लगल। दू-दू गिलास दुनू गोरे पीब सिगरेट पीबए लगला। सिगरेटक धुआँ रोजी दिस उड़बैत हृदयनारायण पुछलखिन-

"हमर परिचय तँ बुझलौं, अपन कहू?"

मुस्कियाइत रोजी बाजल-

"दू गोट होटल दुनू बहिनकेँ पिताजी देने छैथ। पिताजी अपने दुनू भाँइ लोहाक मिल चलबै छैथ।"

"अखन धरि अहाँ बिआह किए ने केलौं?"

"मनगर जोड़ीक अभावमे।"

"केते दिन प्रतीक्षा करब?"

"बरिसो-बरिस, अखनो।"

"की मतलब?"

"जँ अहाँ 'हँ' कहि दी तँ लगले भऽ जाएत।"

"पितासँ बिना पुछने?"

"अपन पसिनक उपरान्त हुनका कहि देबैन।"

"जाउ हम तैयार छी, हुनकासँ पुछि लियौन।"

दोसर श्रेणीमे सरोजनी आ रमेश मैट्रिक पास भेल। नीक विद्यार्थी रहितो रमेश कम अंक पौलक। उत्साह आ लगने एहेन जे रमेश पढ़ि सकल। सरोजनी वय:सन्धिक सीमा पार करैत किशोरीक सीमामे प्रवेश

करैत रहए। लज्जाक आगमन भऽ गेल रहइ। किशोरीक विशेषता अंग-प्रत्यंगसँ हुलकी देमए लगलै।

अपन रिजल्टक जानकारी रमेश पिताकेँ देमए पहुँचल। ओना सरोजनी पिताकेँ पहिने कहि देने छल।

हरदेव दलानक कुरसीपर ओंगैठ कऽ बैस सरोजनीक बिआहक सम्बन्धमे आँखि मूनि सोचैत रहैथ। मैट्रिक पास बेटीले बी.ए. पास बर चाही। घरो अपनासँ दब नइ हुअए...। समय एहेन भऽ गेल जे खर्चक कोनो हिसाब नइ रहत। जमीन्दारी चलि गेल मुदा ठाठ-बाठ तँ वएह अछि।

बेटाक रिजल्ट सुनि घुरन हँसैत आबि हरदेवकेँ पुछलकैन- “मालिक, एना मन्हुआएल किए छी?”

आँखि खोलैत हरदेव बजला- “नइ-नइ, मन्हुआएल कहाँ छी। सरोजनीक सम्बन्धमे सोचै छेलौं। तोरो रमेश तँ बिआह करै-जोकर भऽ गेलह।”

“मालिक बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बाप-ले करजे छी। ऐ देहक कोन ठेकान, तँए जँ भऽ जाएत तँ अहीबेर कऽ लेब।”

दछिनबरिया घरमे पलंगपर पड़ल सरोजनी अपन भविस दिस तकै छल। भैया कलकत्तासँ गाम नहियेँ औता। माए-बाबू रसे-रसे बुढ़े होइत जेता। दुनू गोरेकेँ बुढ़ाड़ीमे के सेवा करतैन? अछैते बेटा-बेटी दुख हेतैन! रमेश गुरु जकाँ पढ़बैए। माए-बाप नोकर जकाँ सेवा करैए। दुनू गोरेक बीच धन आ जातिक अन्तर अछि। सरोजनी चिन्तित हुअ लगल।

मनमे उठलै- राजा दशरथोकेँ स्त्री तीन जातिक छेलैन। हुनका कहाँ अधर्म भेलैन! जिनगी हँसैत शान्तिसँ चलए, यएह तँ सबहक इच्छा होइ छइ। रमेश दिल्ली-बम्बइ जा कोठी आकि मिलमे नोकरी करत। आइ धरिक जे सिनेह रहल ओ टुटि जाएत।

हरदेवकेँ गोड़ लागि रिजल्टक जानकारी दैत रमेश आँगन गेल। सरोजनी घरसँ निकैल आबि रमेशकेँ पुछलक- “कौलेजमे नाओं लिखाएब की नहि?”

“पढ़ैक इच्छा तँ अछि मुदा...।”

‘मुदा’ सुनि भगवतीक रूप जकाँ आँखि निहारैत सरोजनी बाजल-

“रमेश, हम निश्चय कऽ लेलौं जे अहींसँ बिआह करब। तखने दुनू परिवारक कल्याण हएत।”

सरोजनीक बात सुनि रमेशक करेज डरसँ काँपए लगल। आँखिमे डर सन्हिया गेलइ। मुदा सरोजनी बजिते रहल-

“दुनू गोरे एम.ए. तक पढ़ि, गामेमे हाइ-स्कूल बना शिक्षक बनब।”

कँपैत हृदयसँ रमेश पुछलक-

“पिताजी विरोध करता, तखन?”

“अपन मालिक हम स्वयं छी। हुनको बुझैबैन। पुतोहु इसाइ भेलैन से बड़ बढ़ियाँ आ..! अखन धरि जातिक पहाड़ जे समाजमे बनल अछि ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ पेट नै भरैए, नाँगैटकेँ वस्त्र नै दऽ सकैए, बेघरकेँ घर नै बना सकैए, मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैए, लुटैत इज्जतकेँ बँचा नै सकैए, ओइ समाजकेँ विरोध करैक कोन अधिकार छइ?”

तैपर रमेश बाजल-

“सभ रहलाक बादो समाजमे मिलि कऽ रहब आवश्यक होइ छइ।”

“हँ होइ छइ। जे समाज अछि ओ हमरा अहाँ छोड़ि कऽ नै अछि। जे समाज हमरा विचारकेँ महत नै देत ओहो अपन विचार थोपि नै सकैए। तँए समाज सोचऽ जे हमर कल्याण केना हएत।”

सरस्वतीक फोटोमे पहिरौल फूलक माला धरसँ उतारि सरोजनी रमेशक गरदैनमे पहिरा देलक।



शब्द संख्या: 1810

सुभद्रा

सुरूजक किरिण अन्हारकेँ धकलैत, संघर्ष करैत, पाछू-मुहेँ ठेलए लगल। जीव-जन्तुक गाढ़ निन्न पतराए लगल। चिड़ै-चुनमुन्नी प्रभात बेलाक धूनमे मस्त, गाए-महींस घर-सँ-बाहर होइले डिरयाइत...। एकाएक कमलनाथक ऐठाम कन्नारोहट शुरू भऽ गेल। गाएकेँ डोरी पकैड़ रविया बाहर करै छल तखने कानब सुनलक। कानब सुनि अकानए लगल कि गाइक डोरी हाथसँ छुटि गेलइ। गाए पड़ा गेल। गाए पकड़ैले रविया पाछू-पाछू दौगबो करए आ कानबो अकानए। बेहटवाली कलपर पानि भरैले अबै छेली आकि गाए हुरपेट देलकैन। रस्ताक किनछैरमे बनल खाधिमे गिर पड़ली। चोट तँ कम्मे लगलैन मुदा सड़ल थाल-पानि सौंसे देहमे लेबहैर गेलैन। ..चुट्टीक धाड़ी जकाँ लोक कमलनाथक ऐठाम जाए लगल।

एक तँ ब्लड-पेसरक रोगी दोसर दुखद समाचार सुनि कमलनाथ दलानक ओसारपर अचेत पड़ल छला। बेधरक गिरने कमलनाथक ऐगला दुनू दाँत टुटि गेलैन, जइसँ खून बहए लगलैन। जिज्ञासा केनिहार हुनके मृत्यु बुझि आँखिसँ नोरो बहबैत आ नाक लग आँगुर दऽ, छातीपर हाथ दऽ, परेखबो करैत। छातीक धुकधुकी आ साँस ठीके रहैन।

मोतीहारी अस्पतालमे डॉक्टर चन्द्रकान्त कार्यरत छैथ, अखन ओ गामेमे आएल छैथ। समाचार सुनिते चन्द्रकान्तो एला। अबिते कमलनाथकेँ देखि बिऐन होंकैले कहि, बेटीकेँ कहलखिन-

“बौआ, कनी बैग नेने आबह?”

आँगन जा, टेबुलपर रखल बैग लऽ बेटी दौगल आएल। आला निकालि चन्द्रकान्त जाँच कऽ, एकटा सुइया लगा देलकैन। दसे मिनटक पछाइत कमलनाथ होशमे एला। होशमे अबिते कानि-कानि बाजए लगला-

“अन्याय भऽ गेल! जुलुम भऽ गेल! बाप-रे-बाप, एहेन विपैत केकरो नै दिहक! हे भगवान, हमरा कोन सन्ताप देखैले रखने छह!”

बजैत-बजैत कमलनाथ फेर बेहोश भऽ गेला। आँगनमे पत्नियोँ कपार पटैक-पटैक फोड़ि कऽ अचेत भऽ ओंघराएल। एक्के-दुइए आँगनसँ दरबज्जा धरि लोकक करमान लगि गेल। दछिनबरिया घरमे सुभद्रा बताहि जकाँ ओंघरनियाँ दइत।

अगहनक बिआह-पंचमी दिन सुभद्राक बिआह इंजीनियर बरक संग भेल। दू भाँइक बीच एकटा बेटी रहने कमलनाथ हृदय खोलि बिआहमे खर्च केने छला। आगू पढ़ैले जमाए अमेरिका जाइत रहथिन। हवाइ जहाज दुर्घटना भऽ गेल। यात्रीसँ चालक धरि कियो ने बँचल। वएह खबैर टेलीफोनसँ चारि बजे भोरमे कमलनाथकेँ एलैन। से सुनिते परिवारमे, जेना पहाड़ टुटि केकरो देहपर खसैत, तहिना भेल। खरचाक सोच नहि, मुदा सुभद्रा विधवाक जिनगी बितौत सोच तेकर। अखन धरि समाजो जेकरा अधला बुझैत, अशुभ बुझैत।

जेहने सुभद्रा हँसमुख तेहने सुन्नैर। जोरसँ बजैत कियो ने सुनने। पढ़बोमे चन्सगैर। घरक सभ काजक लूरि माएसँ सिखने। भोरे उठि, फुलडाली धोइ, फूल तोड़ि सभ दिन नहा कऽ पूजा करैत। सालो भरि जे उपास होइत ओ सभ सुभद्रा करैत। पिताकेँ खुऔने बिना मुँहमे पानियोँ ने लइत। भगवानकेँ कोसैत नवटोलवाली बाजल-

“भगवानो नीकेकेँ अधला करै छथिन। पपियाहा सबहक बेरमे सुति रहता!”

ओसारक खुट्टा लगल ठाढ़ भेल सुशील सभ देखैत-सुनैत। किछु-काल देखि गुम्मे अपना ऐठाम विदा भऽ गेल। अपना ऐठाम आबि कोठरीक चौकीपर पड़ि रहल। सुशीलक मनकेँ, जेते घटना नै झकझोड़ैत तइसँ बेसी समाजक बेवहार। अखन धरि सुशीलक विचार पढ़ाइ समाप्त कऽ राँचीए-मे नोकरी करैक छल। मुदा औझुका घटना विचारकेँ बदैल देलकै। जहिना भुमकम भेलापर खाधि ढिमका बनि जाइत आ ढिमका खाधि, तहिना।

सुशीलक पिता समाज शास्त्रक प्रोफेसर। दू तल्ला कोठा राँचीमे बनौने छैथ। दस कट्ठा वाड़ियो कीनने छैथ, जइमे तीमन-तरकारी उपजबै छैथ।

एकाएक शुशीलकेँ गामक आकर्षण आ संकल्प जागल, जे कुबेवस्थाकेँ मेटौने बिना समाजक नीक नै भऽ सकै छइ। जेकरे चलैत ढेरो बहिन सभ पापिनी बनि समाजमे मुँह नुका-नुका जीबै छैथ। परीक्षा लग रहने, दोसर दिन सुशील बससँ राँची विदा भऽ गेल।

सुशीलक मन्हुआएल मुँह देखि माए-पिता सन्न भऽ गेला। बिना किछु बजने सुशील दुनू गोरेकेँ गोड़ लागि नहाइले गेल। माए थारी परोसलक। चिन्तित भऽ पिता कुरसीपर बैसल, टेबुलपर केहुनीक बले मुँहपर हाथ दऽ सोचए लगला। नहा कऽ आबि सुशील खेनाइ खाए लगल, मौका बुझि माए पुछलखिन-

“बौआ, बसमे बेसी झमार भेल जे मुँह सुखल अछि?”

“नहि।”

“तखन मन्हुआएल किए छी?”

“आब ऐठाम–राँचीमे–नइ रहब। परीक्षा दऽ गाम चलि जाएब।”

माए-बेटाक गप-सप्प कान पाथि पिता सुनैत रहैथ। मनमे उठलैन-सुशील पढ़ाइसँ किएक विमुख भऽ रहल अछि? ऐ तारतममे प्रोफेसर तरूणक दिमाग ओझरा गेलैन। रंग-बिरंगक सवाल-जवाब मनमे उठए लगलैन। सिरिफ तीन साल अपन नोकरी बँचल अछि। अखन धरिक कमाइक मकानेटा अछि, के रहत? अपन इच्छा छल जे सुशील एम.ए. कऽ अहीठाम नोकरी करत, सभ मिलि कऽ रहब। मुदा सभ विचार धूरा बनि हवामे उड़िया रहल अछि! सुशील नवयुवक अछि जे निर्णय कऽ लेत तइमे पाछू नै हटत। जिद्दी तँ ओ शुरूहेसँ अछिए। जँ हम दुनू परानी राँचीमे रही आ सुशील गाममे, तखन केकर सेवा के करत? राँचियोक वातावरण जे पहिने छल ओ धीरे-धीरे अधला भेल जा रहल अछि। सेवा-निवृत्ति भेलापर पेंशन भेटत। पिताजीक देल गाममे बहुत सम्पैत अछि। ऐठामक सभ किछु बेच गामेमे बना लेब। सुशीलोक बिआह नइ ऐ साल तँ आगू साल करबे करब। गामेमे सभ गोरे मिलि रहब।

सुभद्राक समाचार रूपलाल बाबाक कानमे सेहो पड़लैन। शरीरसँ असमर्थ बाबा। 1934 ईस्वीक भुमकममे सेवाक इमानदारीक चलैत सभ

गाँधीजी कहए लगलैन। लोकक बीच बाजब, गोलबन्द करब इत्यादि रूपलाल बाबा जहलमे सिखलैन। आजादीसँ पहिने बकास्त सिक्कमी जमीनक लड़ाइ लड़ि गरीबक बीच सेहो बँटौलैन। जमीन्दार सबहक विरोध ऐ रूपेँ केलैन जे सस्तेमे बेच-बेच सभ जमीन्दार गामसँ पड़ाएल। रूपलाल बाबाकेँ समाजमे केकरोसँ कोनो भेद-भाव नहि। ने जाति-पाति आ ने छोट-पैघ, आ ने कहियो ई-धरम-उ-धरमक पछड़ामे पड़ला। सबहक ऐठाम एनाइ-गेनाइ, नीक-बेजाएक गप-सप्प केनाइ शुरूहेसँ रहलैन। आजादीक उपरान्त जखन गाँधीजी गोलीक शिकार भेला, रूपलाल बाबाक मन टुटि गेलैन। अपन जीवन-यापन-ले समाजसँ सिकुड़ि परिवारमे समा गेला। जवानीक सभ अरमान आ क्रिया-कलाप बुढ़ाड़ीमे चूर-चूर भऽ गेलैन।

आनर्सक परीक्षा समाप्त होइते सुशील गाम चलि आएल। बसक झमारसँ भरि दिन घरमे सुतले रहल। गामक जानकारी पबैले भोरे चाह पीब रूपलाल बाबा ऐठाम गेल। पाकल आम जकाँ जिनगीसँ लड़ैत रूपलाल बाबा दलानेपर बैस सुइया-डोरासँ धोती सीऐत रहैथ। एकटा पतरे ठेंगा बगलमे रखल रहैन। आँखिक ज्योति सेहो कमि गेलैन। पएर छुबि सुशील गोड़ लगलकैन। अनचिन्हार बुझि बाबा पुछलखिन-

“नइ चिन्हलौं?”

विस्तारसँ अपन परिचय दऽ सुशील आगूमे बैसल। पहिलुका सभ वृतान्त रूपलाल बाबा कहलखिन। जिज्ञासा भरल स्वरमे सुशील पुछलकैन- “समाज कल्याणक सम्बन्धमे अपनेक की विचार अछि?”

“बौआ, हमर नेता गाँधीजी छला। जाबे जीबैत रहला आ जे कहथिन जान-परान लगा लड़ैत रहलौं। कहियो पाछू घुमि नै तकलौं। मुदा जखन हुनका गोली लागब सुनलौं तँ मन टुटि गेल। जखन गाँधीजी सन तियागी-तपस्वी नेता गोलीसँ दागल गेला तखन समाजक कल्याण केना हएत। पढ़ल-लिखल नइ छी। हुनकर लिखल पोथी जे कीनलौं ओहिना बक्सामे राखल अछि। जेकरा हाथमे देशक शासन गेल, अपन सुख-भोगक खातिर, अपना-अपना ढंगसँ गाँधीजीक विचारकेँ व्याख्या करए लगल। बेइमानी-शैतानी बढ़ैत गेल।”

बिच्चेमे सुशील-

"बड़ अनुभवक बात बाबा कहलौं।"

"जहलमे बड़का नेता सभ कहथिन जे गामक भीतरक सभ किछु गौंआँक छी। ओकरा अधिक-सँ-अधिक उबजाए गामक विकास करब। छोट-छोट कारोबारक जन्म हएत। आमदनी बढ़ैत जेतइ, छोट कारोबार पैघ बनैत जाएत। जेते पैघ कारोबार होइत जेतै गाम ओते खुशहाल होइत जाएत। छोट-छीन झगड़ा अपनेमे फरियाएत। सबहक धिया-पुता पढ़त-लिखत। दबाइ-दारूक जोगार सरकार करतै। स्वस्थ समाज, स्वस्थ देशक निर्माण करब। मुदा सभ सपना भऽ गेल। जेते दिनका दाना-पानी अछि, जीबै छी। सभकेँ सभ जाल बुनि-बुनि फँसबए चाहैए। शान्तिक जगह अशान्ति लए लेलक आ प्रेमक जगह कटुता। समाज टुटि-टुटि कमजोर बनैत जा रहल अछि!"

जे विचार सुशीलक मनमे आइ धरि नै उठल छल, ओकर जमीन हृदयमे तैयार हुअ लगल। गुम-सुम्म सुशील एक टकसँ रूपलाल बाबा दिस देखैत रहल। जहियासँ सुभद्राक सम्बन्धमे बाबा सुनलैन तहियासँ राति कऽ निन्न नै होइन। भादो मास जकाँ सदिखन आँखिसँ नोर झहैरते रहैन। सोगाएल स्वरमे सुशील पुछलकैन- "बाबा जइ विपैतमे सुभद्रा फँसि गेल, ओइसँ उबरबाक कोनो रस्ता छइ?"

"हँ अछि। जइ विपैतक चर्चा केलौं ओ बनौआ छी। ओकरा सुधारल जा सकैत। सुधारलासँ ओइ विपैतक अन्त भऽ जेतइ।"

"सुधारैक की रस्ता हेतइ?"

"समाजमे सभ-ले ई विपैत नै अछि मात्र किछु जातिक बीच अछि। अइले नौ-जबानकेँ डेग उठबए पड़त। मेहौता बरद जकाँ हमहूँ सभ पाछू-पाछू चलब।"

उत्साहित भऽ सुशील पुछलकैन- "बाबा, अइले जे करए पड़त, करब। अहाँक असिरवाद चाही।"

"बौआ, जेना लोक जीबैए तेना हम मरि गेल रहितौं। अस्सीसँ ऊपरे वएस भऽ गेल। दधीचिक हड्डी जकाँ जे जरूरत होएत अखनो तैयार छी।"

“अखन जाइ छी, काल्हिखन फेर आएब।”

कहि सुशील विदा भेल। सुतल जवानी रूपलाल बाबाक पुन: जागि गेलैन। देहमे नव शक्तिक संचार हुअ लगलैन। थरथर कँपैत शरीर, हाथमे ठेंगा नेने बाबा कमलनाथ ऐठाम विदा भेला।

सोनपुरवाली दादी चौपारिपर सोंफ बिछा बारहोटा पोता-पोतीकेँ खेलबैत रहैथ। कोरामे केतेकेँ रखितैथ। सभ धिया-पुता खेलाइत। खेलबैले दादी एकटा छिपली आ कड़चीक टुकड़ी रखने छेली। जहाँ कोइ कानए लगै छल तँ दादी छिपली बजा गीत गाबए लगै छेली। बच्चो चुप भऽ दुनू हाथे थोपड़ी बजा दादीक संग गीत गाबए लगै छल। दादीक लाटमे आनो-आनो गोरे अपना बच्चाकेँ आनि ओतइ खेलबैत।

महरैलवाली हँसमुख। सदिखन हँसिए कऽ बजैत। मुदा आइ मन्हुआएल देखि ननौरवाली चुटकी लैत टोकलकैन-

“दीदी, बड़ मन्हुआएल छैथ, भैया किछु कहलकैन?”

बिच्चेमे कछुबीवाली टपैक गेली-

“भैयाकेँ तँ दीदी खेलौना बनौने छैथ, ओ की कहथिन।”

कछुबीवालीक बात सुनि महरैलवाली उत्तर देलखिन-

“नै कनियाँ, सुभद्रा दाइक दुख मोन पड़ि गेल। भरि दिन अन्नो ने नीक लगल।”

सुभद्राक नाओं सुनि ठाढ़ीवाली च्यू,च्यू करैत बजली-

“कनियाँ, तूँ सभ नव-नौतुक छह। नइ बुझल हेतह। हमर जे मझिली पुतोहु अछि, ओ दोती अछि। पहिलुका घरबला जे रहै ओ वौर गेलइ।”

कछुबीवाली पुछलक- “केतए वौर गेलइ?”

ठाढ़ीवाली- “दिल्लीमे नोकरी करए गेल, से घुमि कऽ नै आएल। बेटा तँ हमर कुमार रहए। बापक मन दोती लड़कीसँ बिआह करैक नइ रहैन। मुदा विदेसरक मेलामे जे कनियाँ देखलौं, देखि कऽ मनमे गड़ि गेल। हमरे जोरसँ बिआह भेलइ। अखन ओकरेपर गिरथाइन बनल छी। जेठकी

तँ तेहेन अछि जे कहिया ने झोंटिया कऽ बैला देने रहिताए।”

सोनपुरवाली दादीकेँ सभ बुधियारि आ बेसौह बुझैत। ओ बजली-

“कनियाँ, तोरा सभकेँ नै बुझल हेतह। हमर बिआह ढेरबामे भेल। दादी जीविते रहैथ। ओ दोसर बिआहकेँ अधला बुझैत रहथिन। बाबू हमर बड़ विचारक। साल भरिक पछाइत माएकेँ कहलखिन, ‘बुच्चीक दोसर बिआह कऽ देबइ। जाबे अपना दुनू गोरे जीबै छी ताबे ने। जखन मरि जाएब तँ ओकरा के देखतै। गाममे तँ देखिते छिऐ जे केहेन-केहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि। खानदानक नाक कटि जाएत।’ हम सुनलौं तँ बुकौर लगि गेल। माए पोलहा-पोलहा बुझौलक। हम ‘हँ’ कहि देलिऐ। अखन देखिते छहक जे भगवानक दयासँ केहेन फड़ल-फुलाएल परिवारमे सुख करै छी। भगवान सभकेँ सुख-भोग देथुन। केकरो मन कलपै नहि।”

रूपलाल बाबाकेँ अबिते देखि कमलनाथ आगू बढ़ि बाँहि पकैड़ दुआरपर अनलकैन। दुनू आँखिसँ कमलनाथकेँ नोर टघरए लगलैन। कानि-कानि अपन दुखनामा बाबाकेँ सुनबए लगलखिन। बबोक आँखिसँ नोरक टघार गालपर होइत चौकीपर ठोपे-ठोप खसए लगल। कनैत रूपलाल बाबा कमलनाथकेँ कहलखिन-

“कमल, समाज एहेन नाशक रस्ता धेने अछि जे केकरो नीक नै हेतइ। आइ तोरा जे भेलह केते दुखद अछि। हमर नेता गाँधीजी कहथिन मर्द-औरतक बीच जे विषमता अछि ओकरा मेटबए पड़त। तखन समाज एकरंग बनत। अखनो देखै छी जे मरद तीन-तीनटा बिआह करैए मुदा औरत जिनगी भरि बैधव्य भारसँ कलंकित जरैत रहैए। ने कोइ देखिनहार आ ने कोइ ओकरा मनुक्ख बुझिनिहार अछि।”

“भाय, एकर उपए?”

“हँ छइ। लकीर-क-फकीर बनब नीक नहि। पैघ-पैघ समाज सुधारक समाज सुधारलैन। अखनो किछु बाँकी छइ। जे हमहीं-तोहीं ने सुधारबै।”

कमलनाथक हृदयमे जे बेथाक पहाड़ बनल अछि आस्ते-आस्ते पघिलए लगलैन। चेहरामे चमक आ मुँहमे मुस्कान आबए लगलैन।

उत्साहित भऽ बजला- “भाय, समाज अहाँकेँ गुरु मानै छैथ। जिनगीमे केकरो नीक छोड़ि अधला नै केलिऐ। हमहूँ अहाँसँ बाहर नइ छी। जे कहब मानि लेब।”

कमलनाथक बदलल विचार रूपलाल बाबाकेँ जुआनीक उमंग आनि देलकैन। ठहाका मारि दुनू गोरे हँसला। गदगद हृदयसँ रूपलाल बाबा बजला- “कमल, तोरा कोनो तर्दुत नै करए पड़तह। सभ भार हमरा ऊपर। हमहूँ जिनगीक अन्तिम घड़ीमे जुआनिक कएल कीर्तिकेँ पुन: जोड़ि जीब। समाजक बीच ढोलहो दऽ कहबै जे पढ़ल-लिखल नौजबान ‘सुशील’ अछि। देखबोमे भव्य, विचारो उत्तम छइ। ओकरा संग सुभद्राक बिआह होएत।”

हँसैत कमलनाथ बजला- “सुभद्रा हमरे बेटी नै समाजक छिऐ। तँए नीक-अधलाक भार समाजक ऊपर।”

उठि कऽ ठाढ़ होइत रूपलाल बाबा बजला- “कन्यादान हम करब।”

गाममे फगुआक उमंग जकाँ रंग-अबीर उड़ए लगल। मुरझाएल सुशील एकाएक प्रफुल्लित भऽ गेल। जहिना जाड़क मासमे ठंढसँ गाछ-बिरीछ मरनासन्न भऽ जाइत अछि। मुदा वसन्तक बयार पबिते लहलहा उठैए, तहिना समाजमे भेल। सौंसे गामक लोक बरहम स्थानमे जमा भेला। की मरद, की औरत, की बुढ़, की बच्चा सभमे खुशीक आनन्द। समाजक बीच सुशील-सुभद्राक बिआह परस्पर माला पहिरा सम्पन्न भेल।

लोक नारा लगबए लगला-

“रूपलाल बाबा- अमर रहे-2”

“विधवा बिआह- अमर रहे-2”



शब्द संख्या: 1922

सोनमाकाका

भरि राति ओछाइनपर एक कड़सँ दोसर कड़ उनटैत-पुनटैत सोनमाकाका कखनो उठि कऽ बैसै छला, तँ कखनो पेशाब करैले बाहर निकलै छला। पोह फटिते चिड़ै-चुनमुनीक चहचहेनाइ सुनि डिबिया नेस कुट्टी काटए लगला। पत्नीक इलाज करबैले डॉक्टर ऐठाम जाएब छैन। काल्हिए डेढ़ साए-मे खस्सी बेचला। सबेरे विदा हएब तखन ने समैपर पहुँच बेर धरि घुमि कऽ आबि सकब। तँए सोनमाकाका औगताइ करैत गाम परहक काज सम्हारए लगला। घरवालाक चाल-चूल पाबि रूपनी सेहो उठि कऽ हाँइ-हाँइ मकैक चिक्कस निकालि चूल्हि लग पानि छीट पजारली। रोटिपक्का धिपै दुआरे चूल्हिपर चढ़ौली। चिक्कसमे लसिए ने पकड़ै तँए बेसी काले सानि दुनू हाथ पानिमे भिजा-भिजा रोटी ठोकि रोटिपक्कामे देली। रोटिपक्कामे रोटी दऽ कोठीपर रखल मौनीसँ चारिटा अल्लू निकालि चूल्हिमे घोंसिया देलखिन। जाबे किरिण फूटै ताबे रोटी आ सन्ना बनि गेल। सोनमाकाका नादिमे कुट्टी दऽ पानि छीट दुनू हाथे मिला गाएकेँ घर-सँ-बाहर केलैन आ लोटा लऽ कलपर जा हाथ-मुँह धोइ पानि नेने एला। अपनेसँ पिढ़ी लऽ जलखै करैले बैसला। पतिक आगूमे थारी दऽ रूपनी कलपर जा हाथ-पएर धोइ आबि चूल्हिए लग बैस खाए लगली। जलखै खा धोती, गोल-गला आ पैरमे चट्टी पहिर सोनमाकाका पत्नीकेँ कहलैन-

"केते दूर जाए पड़त से नइ बुझै छिऐ, फुर्ती करू!"

पत्नीकेँ कहि सोनमाकाका काँख तर छाता, कान्हपर तौनी आ धोतीक खूटमे रुपैआ बन्हलैन आ विदा भेला। ..रूपनीकेँ हुक्काक चहैट छैन। बिना हुक्के भरि दिन केना कटतैन, मुदा हुक्का लैयो केना जेती, तँए बीड़ी-सलाइ खोंइछामे लऽ तैयार भेली। आगू-आगू सोनमाकाका पाछू-पाछू रूपनी बाजार दिसुका बाट पकैड़ विदा भेल।

तिनमहला भारी-भरकम मकान देखि सोनमाकाकाकेँ फाटकसँ भीतर जाइक साहसे नै होइन। पीचपर ठाढ़ भऽ रिक्शाबलाकेँ पुछलखिन-

“बौआ, डॉक्टर साहैब ऐठाम जाएब?”

“जा-जा वएह मकान डॉक्टर साहैबक छिऐन।”

रिक्शाबला हाथक इशारा दैत बाजल।

पीचसँ उतैर फाटक लग सोनमाकाका जाइते छला कि खाटपर टँगने एकटा रोगीकेँ भीतर जाइत देखलैन। सोनमोकाका पाछू-पाछू बढ़ला। लोकक करमान लगल देखि रूपनीक दिल दहैल गेलैन। मने-मने बजली-

“बाप रे बाप, एते दुखता केतए-सँ एलइ! असकरे डॉक्टर साहैब केना इलाज करथिन!”

सोनमाकाका भीतर जा कम्पाउण्डर लग फीस दऽ पुरजा बनौलैन। पुरजा दैत कम्पाउण्डर सोनमाकाकाकेँ कहलकैन-

“ताबे बाहर जा बैसू। जखन नम्मर औत तखन सोर पारि लेब।”

सोनमाकाका बाहर निकैल फुलवारीमे घुमि-घामि फूल देखए लगला। रंग-बिरंगक फूल फुलवारीमे। कोनो-कोनो सुगन्धितो आ कोनो-कोनो बिना सुगन्धेक। किआरी बनल। पतियानीमे फूलक गाछ रोपल। पटैले पनिबट बनल। टहलै-बुलैले दू हाथ चाकर रस्ता। रस्तापर गदगर दुभि...।

पछबारि भाग नीमक गाछ तर बैस सोनमाकाका तमाकुल चुनबए लगला। चून झाड़ि तमाकुल मुँहमे लऽ आगू तकलैन कि दस-बारहटा खढ़ियाकेँ गाछक दोगे-दोग दौगैत देखलखिन। कोनो उज्जर, कोनो कारी, कोनो भटरंग खढ़ियाकेँ देखि दुनू परानी सोनमाकाकाकेँ खुशी होइत रहैन। हवा सिहकैत छल। नीमे गाछ तर गमछा बिछा सोनमाकाका पड़ि रहला। थोड़े-कालक पछाइत कम्पाउण्डरकेँ सोर पारिते दुनू गोरे डॉक्टर लग पहुँचला। रूपनीकेँ ब्रेंचपर बैसा डॉक्टर आला लगा जाँच करए लगलखिन। बेमारीक भाँज नइ बुझि डॉक्टर साहैब सोनमाकाका दिस ताकि पुछलखिन- “केते दिनसँ बेमार छैथ, की सभ होइ छैन?”

मिरमिरा कऽ सोनमाकाका बजला-

“पौरूँका साल गाममे हैजा भेलइ। बड़ लोक मुइलै। हमरो जेठका बेटा आ मझिली बेटी मरि गेल। तहिये-सँ बेमारीक परबेस भऽ गेलइ।”

“कएटा बाल-बच्चा अछि?”

“आब एक्केटा छोटकी कनटिरबी रहल।”

डॉक्टर साहैब एकटा टॉनिक लिखि कागत दऽ देलखिन।

कम्पाउण्डर सामनेमे रोडक पच्छिम दबाइ दोकान हाथक इशारासँ सोनमाकाकाकेँ देखा देलकैन। खाट उठा कऽ जे अनने छल ओकरा देखि सोनमाकाका पुछलखिन-

“भाय, तोरा रोगीकेँ की भेल छह?”

माथ कुरियबैत ओ बाजल-

“की कहब भैया, हमरा भायकेँ दूटा स्त्री। अपने हर जोतए गेल रहए। आँगनमे दुनू सौतिन झगड़ा करए लगल। छोटकी बुफगर, ओ बड़कीकेँ उठा कऽ सिलौटपर पटैक देलकै आ मुकियाबए लगलै। मुकियबैत-मुकियबैत बेहोश कऽ देलकै। जाबे भैयाकेँ खबैर होइ आ आबै ताबे थारी-लोटा-नुआक मोटरी बान्हि समदौआ पड़ा गेल। हमहूँ गामपर नइ रही। जखन एलौं तँ देखलिऐ। लगले एक साए रुपैआ पितियाइनसँ लऽ टँगने एलौं।”

दबाइ-फीस लगा सोनमाकाकाकेँ साए रुपैआ खर्च भेलैन। रुपैआ गनि देखला तँ पचास रुपैआ बँचल रहैन। मने-मन सोचलैन जे कहिया बाजार आएब कहिया नइ। से नइ तँ बिछानोक तकलीफ अछि आ अन्नो राइ-छित्ती होइत रहैए। किराना दोकान जा सुपारीबला खलिया चारिटा प्लास्टिकक बोरा कीनि लेब। अन्न रखैले दूटा बोरे राखब आ दूटाकेँ सिऐन उधारि कऽ बिछानो बना लेब। पथारो सुखत आ सुतबो करब...। जखन बाजारसँ बहरेला आकि धक-दे सोनमाककाकाकेँ मोन पड़लैन जे बाजार एलौं किछु खेलौं कहाँ? घुमि कऽ कनी आगू बढ़ला कि मुरही-कचड़ी बेचैत एकटा बुढ़ियाकेँ देखलैन। पाँच रुपैआक मुरही-कचड़ी मिला सोनमाकाका कीनि लेला। अदहा अपने गमछाक खोचैड़ बना लेलैन आ अदहा रूपनीकेँ

देलखिन।

रूपनी खोंइछामे लऽ लेली। दुनू गोरे रस्तो चलैथ आ खेबो करैथ। कचड़ीकेँ गुड़ि मुरहीमे सोनमाकाका मिला देने रहथिन। थोड़े दूर आगू बढ़ला तँ मुँहमे मिरचाइक टुकड़ी पड़ि गेलैन। कड़ू मिरचाइ रहने सोनमाकाकाकेँ हुचकी उठि गेलैन। दुनू आँखिसँ नोर सेहो झहड़ए लगलैन। जहाँ हाथसँ नोर पोछला कि आँखियोमे लगि गेलैन। पानिक केतौ पता नहि। सोनमाकाका सुसुएबो करैथ, आँखिसँ नोरो चुबैन आ हुचकबो करैथ। मील भरि जखन बढ़ला तँ रस्ताक बगलोमे उतरबारि भागमे इनार देखलैन। इनार देखिते सोनमाकाकाक हूबा जगलैन। इनारक चारूकात सिमटीक लहरा बनल अछि, ओहीपर चारि-पाँच गोरेकेँ पानि भरैत देखि हुचकैत सोनमाकाका बजला-

“बुच्ची, कनी पानि पिआबह, कड़ू लगल अछि!”

बिच्चेमे फेर हुचकी उठलैन। हुचकैत आ सुसुआइत सोनमाकाकाकेँ देखि पनिभरनी सभ आँचरसँ मुँह दाबि-दाबि हँसबो करए। करिया डोलमे पानि भरि सोनमाकाकाकेँ देलक। पानि पीब सोनमाकाका इनारक बगलेमे कनैल फूलक छाहैरमे बैस खाए लगला। तैबीच करिया भूल्लीकेँ कहलक-

“हे गै पितरिया आँखिवाली बाबाकेँ देखि-देखि हँसै छीही?”

आँखि डेढ़ करैत भूल्ली करियाकेँ कहलक-

“हे गै जरसी गाए, अनके टेटरे सुझै छौ। देखै छीही रूपनीदादीकेँ अखनो बाबाक संग हाट-बाजार घूमैले जाइत अछि।”

बिच्चेमे नेंगरी बहिरीकेँ कहलक-

“अपना सभ चल। एकरा दुनूकेँ ठिठियाए दही। नहेबो ने केलौं हेन।”

सोनमाकाका पानि पीब तमाकुल चुनबए लगला। रूपनी बीड़ी नेस पीबए लगली। दुनू गोरे रस्ता धेलैन। अपना गामसँ कोस भरि पाछूए दुनू परानी रहैथ कि रौदक गरमी लगलैन। रस्ताक बगलेमे पीपरक गाछ देखि दुनू परानी सुसताइक विचार केलैन। भोलबाकेँ पहिनेसँ सुसताइत देखि सोनमाकाका पुछलखिन- “तूँ केतए-सँ अबैत छेँ भोला?”

उठि कऽ बैसैत भोलबा कहलकैन-

“तेल पेरबैले गेल छेलौं। रौदमे मन घूमए लगल। काकीकेँ केतए लऽ गेल छेलहक?”

“की कहबौ भोला। तीन सालसँ विपैतमे पड़ल छी। साल भरिसँ बुचिया-माए तरे-तर खियाएल जा रहल अछि। पहिने होइ छेलए जे बेटा-बेटी मुइलाक सोग भऽ गेलै, मुदा डॉक्टर लग गेलौं तँ बेमारी ठहरल।”

“देखहक काका, ऐ देहियाकेँ कोन ठेकान। मुदा जाबे तक शरीरमे परान रहै छै ताबे तक सेवा करैक चाही। जाबे तक आँखि तकै छह तेतबे-काल ई दुनियाँ अछि आ स्वर्ग-नर्क सभ एतै छइ।”

“बेस कहलेँ भोला। ई तँ अपनो सोचै छी जे घरवालीक भार घरबलापर रहै छइ।”

“काका, हमर विचार अछि जे दोसर बिआह कऽ लएह। बिना बेटे बापकेँ गति नै होइ छइ।”

“भोला तूँ चौल करै छँह। बुढ़ाड़ीमे दोसर बिआह कऽ गरदैनमे ढोल बान्हब! जाबे थेहगर छी, कहुना-कहुना दिन कटिये जाएत, बादमे बुझल जेतइ।”

तीनू गोरे गाम दिसक बाट पकड़लैन। थोड़े आगू एलापर पिपराहीमे हल्ला सुनलैन। कान लग हाथ दऽ दऽ सभ कियो अकानए जे हल्ला कथीक होइ छइ। ओना गामे छिऐ, कोनो-ने-कोनो हल्ला होइते रहै छइ। हल्ला सुनि सभ अपन-अपन डेग नमहर केलैन। गाममे प्रवेश करिते हल्ला स्पष्ट सुनाइ पड़ए लगलैन। कियो कहै ‘नीक भेलै’ तँ कियो कहै ‘अधला भेलइ।’ तीनू गोरेकेँ कोनो भाँजे ने लगैन। रस्ताक दछिनबारि भाग मुनेसरकेँ दरबज्जापर बैसल देखि तीनू गोरे रस्ता छोड़ि मुनेसर ऐठाम जा पुछलैन।

मुनेसर अखरे चौकीकेँ अंगपोछासँ झाड़ि पहिने तीनू गोरेकेँ बैसैले कहि कहए बाजल-

“बजैत लाज होइए। मुदा जब पुछलौं तँ कहबे करब। आ-हा-हा रामलोचनकाका छला! कहियो केकरो अधला नै केलैन आ ने केकरोसँ

कहियो मुहाँ-ठुठी भेलैन। सभ साल कातिकमे भोज कऽ सौंसे गौंआँकेँ खुआबै छला। कोनो चीजक कमी नहि। वेचारे मरला आकि तेहेन चालि-चलैन बेटा धेलकैन जे सभ सम्पैत बोहौलक। घैला-घैले ताड़ी पीब अनेरो लोककेँ गरियेबो करइ। घराड़ियो नै बँचलै। बापक रखल नाओं 'रामकिसुन' रहै जेकरा सभ बतहा कहए लगलै। वएह मुइल, तँए कोइ नीक कोइ अधला कहै छइ।"

सोनमाकाका मुनेसरसँ पुछलक- "परिवारमे के सभ छइ?"

"एकटा तेरह-चौदह बर्खक बेटा छइ। ओहो मइटुग्गर अछि। समदौआ बौह जे छेलै ओ मास दिन पहिने भागि गेलइ। अन-अनकेँ बतहा मुइल। अँगनामे ओहिना पड़ल अछि। ने बाँस छै जे चचरी बनत आ ने कपड़ा छइ। लगमे बैस बेटा कनै छइ।"

मइटुग्गर सुनि रूपनी काकीक आँखिमे नोर आबि गेलैन। सोनमा-कक्काक हृदय पसीज गेलैन। बजिते-बजिते मुनेसरक आँखिमे सेहो नोर आबि गेल। सोनमाकाका मुनेसरकेँ कहलखिन-

"भाय साहैब, मुरदा जरा दियौ। बेटा धन छिऐ, चरबाहियो करि कऽ जीबे करतै।"

सोनमा-कक्काक विचार सुनि मुनेसरक मन बदैल गेल। चौकीपर सँ उठि बाजल-

"सभ कोइ चलि कऽ देखियौ। जँ कोनो जोगार हेतै तँ अँगनेमे बेटासँ मुँहमे आगि दिया गारि देबइ।"

रामकिसुन बतहाक बेटाक नाओं भुखना। जहिना पूब-मुहेँ बतहा सुतल तहिना अछि। भुखना लगमे बैसल कनबो ने करैत। केते कानत। कनैत-कनैत मुँह दुखा गेलइ। जहिना ओसमे भीजल दुभि रौद लगिते सुखि जाइत तहिना मुनेसरक क्रोध भुखनाक दशा देखि सुखि गेल। हृदय पघिल गेलइ। डेन पकैड़ मुनेसर भुखनाकेँ उठा कहलक-

"बच्चा, अखैन सँ तोरा हम बेटा बना रखबौ।"

मुनेसरकेँ देखि टोलोक लोक एकाएकी आबए लगल। सोनमाकाकाकेँ जे बीस रुपैआ बँचल छेलैन ओ डाड़सँ निकालि कपड़ा-ले

देलखिन। मुनेसर अपने गाछीमे जरबैले सेहो कहलक। जारैन आ चचरीक बाँस सेहो देलक। सभ मिलि बतहाकेँ जरौल गेल। समाज समुद्र होइ छइ। अधला-सँ-अधला आ नीक-सँ-नीक सबहक समाबेश समुद्रे जकाँ समाजोमे होइ छइ।

गरमी मास रहने सोनमाकाका भोरे हाँसू-छिट्टा लऽ घास-ले विदा भेला। कनी आगू बढ़ला तँ मनमे एलैन जे भुखनाकेँ अपने ऐठाम आनि बेटीक संग बिआहो कऽ देबै आ रखियो लेब। घुरि कऽ आबि हाँसू-छिट्टा रखि छाता लेलैन आ पिपराही विदा भेल। पिपराही जा मुनेसरकेँ कहलखिन-

“भाय, हमरो बेटा नै अछि, एकटा बेटी अछि। विचार भेल जे भुखनाकेँ बेटीसँ बिआह कऽ जमाए बना राखी। ओहू बच्चाकेँ नीक हेतै आ हमरो दुनू परानीकेँ।”

हँसैत मुनेसर-

“तेलोसँ चिक्कन। अखने भुखनाकेँ नेने जाउ।”

सोनमाकाका भुखनाकेँ संग केने अपना ऐठाम एला। गाममे जेते घरहटिया अछि, सभकेँ घरहटाइक एक-एकटा काज करैक लूरि सोनमाकाका सिखौने छथिन, तँइ सभ काका कहै छैन।



शब्द संख्या: 1572

दोती बिआह

पचास वर्षीए प्रोफेसर उमाकान्त दोहरा कऽ बिआह कइये लेलैथ। केना नै करितैथ? संयमी रहने पचास बर्खक चेहरा पैंतीस-चालीससँ ऊपर नइ बुझि पड़ै छैन। पत्नीक मुइने घर सुनसान लगए लगलैन। चौघारा कोठरी सभ ढन-ढन करैत रहैन। अपना छोड़ि ने दोसर भैयारी आ ने कियो आन परिवारमे रहैन। दुइए-टा सन्तानो। जेठ बेटी प्रोफेसर पतिक संग बनारसेमे रहै छैन जे दुरागमनक पछाइत आइ धरि मात्र तीन बेर माए-बापसँ भेँट करए एली। बेटो तहिना छैन। डॉक्टरीक अन्तिम साल, बंगलोर मेडिकल कौलेजमे पढ़ै छैथ जे सालक दुर्गापूजाटा मे गाम अबै छैथ।

किरिण फुटिते तीनू बकरी घरसँ निकालि बाहरक खुट्टीमे बान्हि, कटहरक पात आगूमे दऽ बगलमे बैस अपने फुरने असकरे बैसल बहिरी बाजए लगली-

“घोर कलयुग! घोर कलयुग आबि गेल! जेते दिन ई दुनियाँ चलैए, चलैए, नइ तँ धरती फाटत, सभ ओइमे चलि जाएत। सुआइत लोक कहै छै जे मनुक्ख तेते पपियाह भऽ गेल अछि जे खिआइत-खिआइत चुट्टी-पिपरी जकाँ भऽ गेल। हमरा सभकेँ भगवान पार लगौलैन जे एतेटा मनुक्ख भेलौं। आबक लोक थोड़े एते-एतेटा हएत। तेहेन हएत जे लग्गी लगा-लगा भँट्टा तोड़त।”

ओना बिआहसँ दू दिन पहिनहिसँ स्त्रीगणक बीच गुन-गुनी शुरू भऽ गेल छेलै मुदा कियो खुलि कऽ नै बाजए चाहै छेली। मुदा आइ सबहक मुँह खुजि गेलैन।

टोलक बीच सरकारीक चापाकल तीनेटा अछि। बाँकी पाँचो अपन-अपन अँगनेमे लोक गड़ौने छैथ, जैपर आन-आन नइ जाइत। तीनूमे सँ एकटाक हेडे खोलि तड़िपीबा सभ बेच कऽ ताड़ी पीब गेल। दोसराक फील्टरे फुटि गेल छै, जइमे पानिसँ बेसी गादिए अबैए। खाली चौराहा

परहक कल बँचल अछि। मुदा ओहो कोन जन्मक पाप केने अछि जे भरि दिनमे कखनो अराम नइ भेटै छइ। चारू दिससँ पनिभरनी सभ अपन-अपन बाल्टीन-घैल लऽ आबि-आबि चारू दिससँ घेर बेरा-बेरी पानि भरैत रहैए। तँए गप-सप्प करैक नीक अवसरो आ जगहो फइल।

चिक्कारी मारैत मझौरावाली सोनरेवाली दिस देखि कऽ बाजल-

“सौनक लगनक गीत अबै छैन, दीदी?”

मुस्की दैत सोनरेवाली उत्तर देलखिन-

“जहिना एक्के लोढ़ीसँ सिलौटपर मिरचाइयो पीसल जाइ छै आ मिसरियो, तहिना ने डहकनो फागुनोक लगनमे गौल जाइत अछि आ साउनोमे।”

दुनू गोरेक चिकारी सुनि बेलौंचावाली बाजल-

“अपना भैंसुरकेँ नै देखै छुहुन जे काठपर जाइ बिना दुइर भेल जाइ छथुन आ तैपर पुट्ठा खलीफा घर लऽ अनलखुन, से बड़बढ़ियाँ बड़ चिक्कन आ प्रोफेसर भैयाकेँ अखन की भेलैन हेन। मारे दरमहो कमाइ छैथ आ उमेरे केते हेतैन। तीस-पैंतीस बर्खसँ बेसी थोड़े भेल हेतैन।”

मझौरावालीक पछ लैत, मुँह चमकबैत मोहनावाली बाजल-

“जानियेँ कऽ तँ पुरुख छुद्दर होइए। तइमे उमाकान्ते जँ छुद्दरपना केलैन तँ कोन जुलुम भऽ गेलइ!”

मोहनावालीक करुआएल गप सुनि बेलौंचावालीक मन जरए लगलैन। तुरैछ कऽ बजली-

“सभ पुरुख तँ छुद्दरे होइए मुदा मौगी तँ सभटा गिरथाइने होइए, सएह ने। सत-सतटा मुनसा देखैए मौगी आ छुद्दर होइए पुरुख! हिनके पुछै छिऐन जे प्रोफेसर भैयासँ नीक अपन घरबला छैन?”

घरबलाक नाओं सुनि मोहनावाली काँख तरक घैल निच्चाँमे रखि आगू बढ़ए लगली। मुदा तैबीच साठि बर्खक झबरीदादी जोरसँ बजली-

“मरदक कमाएल खाइ जाइ छह आ गरमी चढ़ै छह तँ कलपर झाड़ैले अबै छह। एक्को दिन कोइ उमा बौआकेँ भानसो कऽ दइ छहक

आकि एक लोटा पानियोँ भरि कऽ दऽ अबै छहक, से कियो नहि! आ मुदा उल्लू जकाँ मुँह दुसल सभकेँ होइ छह! वेचारा नोकरीपर सँ अबै छैथ, अपने हाथे बरतन-बासन धोइ, पानि भरि भानस करै छैथ से बड़बढ़ियाँ, मुदा बिआह कऽ लेलैन से बड़ अधला।"

झबरीदादीक गप ओते मोहनावाली नै सुनैथ जेते तरे-तर बेलौंचावाली जरैत रहैथ।

छह मास पूर्व प्रोफेसर उमाकान्तक पत्नी स्वर्गवास भऽ गेलैन। जाधैर जीबै छेलखिन ताधैर घरक कोनो भार प्रोफेसर साहैबकेँ नइ बुझि पड़लैन। जहिना कोसीक धार अनवरत बोहैत रहैए तहिना उमाकान्तोक परिवार अपना गतिसँ छह मासक पछाइत धरि चलैत रहैन। ओना दस बर्ख पूर्व धरि माए-पिताक नजैरमे उमाकान्त बच्चे आ पत्नी कनियेँ छेलखिन। घरक भार दुनूमे सँ किनकोपर नइ छेलैन। सोल्होअना माइए-बाबू सम्हारै छेलखिन। पढ़नाइ-पढ़ौनाइ उमाकान्तक आ दुनू साँझ भानस केनाइ पत्नीक काज रहैन।

मुदा पत्नी-मुइला पछाइत उमाकान्तकेँ घर-आँगन सून-मशान बुझि पड़ए लगलैन। चौघारा घरक आँगन, नमहर दरबज्जा, तैबीच असकरे उमाकान्त रहै छैथ। परिवारकेँ डगैत देखि उमाकान्तक मनमे बेचैनी बढ़ए लगलैन। जहिना भुमकमक समय धरतीक संग-संग ऊपरक सभ किछु काँपए लगैए तहिना मनक संग-संग उमाकान्तक बुधि-विवेक डोलए लगलैन, हृदय चहकए लगलैन, मन मसकए लगलैन। मसकैत-मसकैत एहेन चिरक्का लगि गेलैन जे उपयोग करै-जोकर नइ रहलैन। अनासुरती धैर्यक सीमा बाउलक मेड़ जकाँ ढहए लगलैन। ढहैत-ढहैत सहीट भऽ गेलैन। सहीट होइते बर्खा-पानि जकाँ उमाकान्तक हृदयमे रस्ता बनबए लगलैन, जइसँ नव-नव विचारक जन्म भेलैन। नव-नव विचारकेँ जनैमते आँखि उठा आगू तकला तँ मेला-जकाँ दुनियाँ बुझि पड़लैन। सभ रंगक देखनिहार। सभ तरहक वस्तुक दोकानपर एका-एकी एबो करैत आ जेबो करैत। अपन-अपन धुनिमे सभ बेहाल। दोसर दिस देखैक केकरो समय नहि। अपने ताले सभ बेताल, जइसँ केकरो-केकरो आँखिसँ नोरो खसैत आ कियो-कियो ठहक्को मारैत। अनका दिससँ नजैर हटा उमाकान्त

अपना दिस मोड़लैन तँ जिनगी-ले संगीक जरूरत अनिवार्य बुझि पड़लैन। मोन पड़लैन पत्नीक मृत्यु। मृत्युक उपरान्त सोग परगट करैले तँ बहुतो एला, मुदा की सबहक नोरमे एक्के रंगक वेदना रहैन? एक घटना रहितो एक रंगक विचार आ वेदना कहाँ छेलैन? भरिसक सभ भाँज पुरबैले आएल छला। मुदा प्रोफेसर हरिनारायणक नोर किछु आरो छेलैन। की हुनकर नोर पत्नीक प्रति छेलैन आकि पढ़ैत बच्चाक प्रति, आकि हमर विधुर जिनगीक प्रति..?

उमाकान्तक मनपर भार पड़लैन। भारक तर मन दबेलैन, जइसँ सोचै-विचारैक रस्तो अवरुद्ध हुअ लगलैन। मुदा तरमे दबल मन कहलकैन-

“समाजक लोक की कहत?”

फेर मनमे उठलैन, की कहत समाजक लोक! जेते लोक तेते विचार। जहिना ताड़ीक गन्धसँ केकरो उल्टी होइ छै तँ कियो सुगन्ध बुझि आत्म-तुष्टि करैए तहिना अछि। बुढ़-बुढ़ानुस परम्परानुसार कहता जे संयुक्त परिवारमे बेकती-विशेषक वेदना परिवारक बीच हरा, फुलाएल फूल जकाँ हँसैए, जइसँ अभाव कोनो वस्तु नइ रहि जाइत अछि। फेर मनमे उठलैन, जइ कौलेजमे शिक्षक रूपमे छी, बेटा-तुल्य विद्यार्थीकेँ जिनगीक बाट देखबै छी, ओ की कहत? मुदा कोनो घटनो तँ अनिवार्य नै होइत आकष्मिको होइ छइ। जे सबहक संग घटबे करत, तेकर गारंटी नहि, घटियो सकैए, नहियोँ घटि सकैए। ..मन ओझड़ेलैन। किछु-कालक पछाइत मनमे एलैन, जे मनुक्ख ऐ धरतीपर जन्म लैत अछि ओ मृत्युपर्यन्त हँसैत जीबए चाहैए, मुदा से कहाँ भऽ रहल अछि? पहिलुका जकाँ परिवारो नइ रहल। असकर जीबो कठिन अछि। दोसराक जरूरत सदिकाल पड़ैए। भलेँ जिनगीक क्रिया निमाहि लेब मुदा मनक बेथा के सुनत? सभठाम ने तँ लोक कानि सकैए आ ने हँसि सकैए। मुदा परिवार तँ हँसै-कनैक जगहे छी। जँ से नइ भेटए तँ गुड़-घा जकाँ तरे-तर सड़ैन करैत रहत। जेते सड़ैन करत तेते शरीरसँ गन्ध निकलबे करत, जइसँ कष्टो हएत आ औरुदा घटत। जखने औरुदा घटत तखने जिनगी सिकुड़त। जेते जिनगी सिकुड़त तेते मृत्यु करीब औत...। उमाकान्तक मन फेर ओझरा

गेलैन। ओझराइते नजैर घुमौलैन तँ कौलेजक इतिहास विभागक प्रोफेसर हरिनारायणपर पड़लैन। हरिनारायणे बाबूटा एहेन जिज्ञासु भेला जिनका आँखिसँ हृदयक वेदना, पहाड़पर सँ खसैत झरनाक पानि जकाँ अनघोल करैत रहैन जे “बाप रे, अन्याय भऽ गेल। उमाकान्त ठूठ गाछ सदृश भऽ गेला। जइमे फूल-फड़क संग छाहैरो अलोपित भऽ जेतैन। अपने जानटा लऽ कऽ पत्नी नै गेलखिन। असीम वेदनाक पहाड़ सेहो माथापर पटैक गेलखिन। सभ किछु छिड़िया जेतैन। केना समेट पौता उमा भाय! की एकरे जिनगी कहबै?”

चेतना शून्य उमाकान्त दुनियाँक बाजारमे हरा गेला। चारू दिसक बाट बन्न बुझि पड़ए लगलैन। केमहर जाएब से रस्ते नहि। की उमाकान्त खरहोरिक गाड़ल ओइ कड़ची सदृश भऽ गेला जेकरामे कोनो क्रिया नइ भेनौं लोक ओगरवाह बुझैए? अनासुरती मनमे जगलैन जे दुनियाँमे कियो अप्पन नहि। जाधैर आँखि तकै छी ताधैर दुनियोँ अछि नइ तँ ओहो नै अछि। अपने करनीसँ कियो दुनियाँकेँ सुन्दर बनबैए आ कियो अधला। आगू जीबैले संगीक जरूरत सभकेँ होइ छइ। आनक अपेक्षा हरिनारायणबाबू लग बुझि पड़ै छैथ। अखने हुनका ऐठाम जा अपन मनक बात कहबैन।

उमाकान्तकेँ देखिते दुनू हाथसँ दुनू बाँहि पकैड़ हरिनारायण अरियाति कऽ अपन कोठरीमे बैसा पत्नीकेँ पानि नेने आबए कहलखिन।

बामा हाथमे लोटा दहिना हाथमे पानिसँ भरल चमकैत स्टीलक गिलास उमाकान्त दिस बढ़ौलखिन। पत्नी विहिन उमाकान्त नजैर निच्चाँ केने शोभाक हाथसँ गिलास लऽ पानि पीबए लगला। मुदा दू घोंटक पछाइत पानि कण्ठसँ निच्चाँ धँसबे ने करैन। दोसर गिलास भरैले शोभा बामा हाथक लोटा दहिना हाथमे लैत उमाकान्तपर नजैर गाड़ने रहली। ने उमाकान्त मुहसँ गिलास हटबैत आ ने पानि पीबैथ। उमाकान्तक बेथा हरिनारायण बुझि गेला। शोभा हाथक लोटा अपना हाथमे लैत कहलखिन-

“अहाँ चाह बनौने आउ। भायकेँ हम पानि पिआ दइ छिऐन।”

चाह बनबैले शोभा कीचेन रूम चलि गेली।

मुँहमे गिलास सटल उमाकान्तक मनमे आबए लगलैन। जँ कहियो हरिबाबू हमरा ऐठाम जेता तँ किनका चाह बनबैले कहबैन। उमाकान्तकेँ विचारमे डुमल देखि हरिनारायण बजला-

"भाय, अपनेसँ हम छोट छी मुदा एकरा धृष्टता नइ बुझि दिलक धड़कन बुझू। अपने बेसी दुनियाँ देखलिऐ मुदा...।"

चौंक कऽ उमाकान्त पुछलखिन- "मुदा की?"

आइसँ पहिने मनुक्ख जेते असुरक्षित जिनगी बितबै छल ओइमे बहुत कमी आएल अछि। सोलहन्नी सुरक्षित तँ नहि, मुदा पहिलुका अपेक्षा सुरक्षित भेल अछि। ओना खतरा पहिनेसँ अधिक भऽ गेलै हेन। मुदा बदलल रूपमे। पहिलुका रूपमे सुरक्षित भेल अछि। जइसँ जिनगीक नमती सेहो बढ़ि रहल अछि। ओना पूर्वज शतायुकेँ सही औरुदा बुझै छला। मुदा ईहो बुझिनिहार तँ छैथ जे चालीसकेँ घपचालीस बुझै छैथ, ओहो ओहिना नइ बुझै छैथ। अखनो चालीस बर्खसँ ऊपर केते गोरे छैथ जे पूर्ण स्वस्थ छैथ? मुदा किछु बर्ख पूर्व धरि अस्सी बर्खसँ ऊपर गोटि-पँगरा पहुँचै छला। से आब अदहासँ बेसी पहुँचए लगला अछि। तँए, मोटा-मोटी नब्बेकेँ अधार बना हरिनारायण पुछलखिन-

"अपनेक आयु केतेक अछि?"

'आयु' सुनि उमाकान्त विस्मित भऽ गेला। हृदय बमकैत रहैन मुदा मुहसँ बोली निकलबे ने करैन। किछु-काल बिलैम बजला-

"पचास बरख।"

'पचास बर्ख' सुनि हरिनारायण उछैल कऽ बजला-

"अदहासँ किछु अधिक भेल अछि मुदा अदहा तँ बाँकीए अछि। अदहा-ले...।"

नमहर साँस छोड़ि, उमाकान्त आँखि उठा कखनो हरिनारायणपर दैथ आ कखनो निच्चाँ कऽ धरती देखए लगैथ। मुस्कियाइत हरिनारायणे बाबू बजला-

"अपने दोसर बिआह कऽ लेल जाउ। जरूरी नहि, जे सभ औरत

कुल्टे होइए। एहनो औरतक कमी नइ अछि जिनकामे मानवीय संवेदना गंगाक धार जकाँ सदिखन उमड़ैत रहै छैन। नारीक पहिल गुण मातृत्व छी, जेकरा प्रवल बनबैले पुरुखक सहयोग जरूरी अछि। जखने अनुकूल परिस्थिति नारीक प्रति बनत तखने दुनियाँक रंग-रूप बदलल-बदलल बुझि पड़त।”

चाह पीब, विदा होइत उमाकान्त बजला- “अहाँक विचारसँ सहमत छी, मुदा काजक भार अहाँपर।”

दुनू गोरे दू गामक। मुदा कोसे भरिक दूरी दुनूक बीच छैन। अपने गामक पच्चीस बर्खक यशोदियाक संतप्त जिनगी हरिनारायणक सोझहेमे छैन। सोलह बर्खक देहैरपर जखन यशोदिया पहुँचल, अट्ठारह बर्खक गुणेश्वर, फूलक सुगन्धकेँ भौरा जकाँ झपैट लेलक। जिनगीक हरियर-हरियर प्रलोभन देबाक संकल्प करैत, लोक-लाजसँ बँचैले गाम छोड़ि दिल्ली चलि गेल। मुदा दिल्लीक सड़कपर जखन दिन-राति बितए लगलै तखन यशोदियाकेँ छोड़ि निपत्ता भऽ गेल। असकर यशोदिया वौआए लगल। हारि-थाकि यशोदिया एकटा कोठीक शरणमे गेल। आठ बर्खक पशुवत् जिनगी यशोदियाकेँ बदलैले बाध्य केलक। नव बाट ताकए लगल। अपनाकेँ मृत बुझि एक राति सभ किछु छोड़ि पड़ा कऽ गाम आबि गेल। गाम आबि हरिनारायणक पएर पकैड़ ताधैर कनैत रहल जाधैर ओ बाँहि पकैड़ मनुक्खक जिनगी जीबैक भरोस नै देलखिन।

हरिनारायण परिवारमे यशोदिया रहए लगली। यशोदियाक मनमे तँ चैन आबि गेल मुदा हरिनारायणक बेचैनी बढ़ए लगलैन। समय पाबि, बिलटैत दू जिनगीकेँ जोड़ि एक परिवारकेँ लहलहाइत देखलैन। मनमे खुशी एलैन।

अखन धरि उमाकान्त यशोदियाकेँ प्रोफेसर हरिनारायणक बहिन बुझै छला। यशोदियाक असली परिचय नै छेलैन तँए मनमे खुशी रहैन जे सभ्य परिवारक लड़की घरमे औती, जइसँ पहिलुके जकाँ फेर परिवार अपन पटरीपर आबि आगू-मुहेँ ससरए लगत।

दिन-बेरागन छोड़ि हरिनारायण उमाकान्तकेँ पुछलखिन-

“अखन तँ बिआहक समय नै अछि तखन..?”

“एक-एक दिन पहाड़ लगि रहल अछि। बिआहक जे कोनो बन्हन अछि से काँच सूतसँ बान्हल जाइत अछि। जइसँ सदिखन टुट-फाट होइत रहैए। तँए दुनूक माने पुरुख-नारी हृदयक योग हेबा चाही?”

हरिनारायणक प्रश्नसँ उमाकान्त गुम्म भऽ बजला-

“समय आ परिस्थितिकेँ देखैत...।”

उमाकान्त यशोदियाक बीच साउनेमे बिआह भऽ गेल।

❑ शब्द संख्या: 1822

पड़ाइन

पछुलका बाढ़िमे खेतक फसिल तँ धुआइए गेल जे मालो-जाल गामसँ उपैट गेल। अपनो दुनू बरदो आ महींसो मरि गेल। जहिना जंगलक जानवरकेँ मेघसँ खसैत पाथरक चोट छटपटबैत तहिना ऐ साल आन-आन किसानक संग अपनो भेल। बाधसँ लऽ कऽ घर धरिक दशा सहाज करै-जोकर नइ रहल। बाढ़ि अबिते खेतक धान डुबि गेल। मोटाइत-मोटाइत पानि आँगन-घरमे सलाढ़ लगि गेल। नारक टाल पानिक बेगमे भँसि गेल। भुसकाँर खसि पड़ल जइसँ गहुमक भूसी भँसिया गेल। आश्रमक घरक संग-संग मालो घरमे पानि पहुँच गेल। जहिना लाठीपर लाठी खाइत दशा होइत तहिना भेल।

चढ़िते कातिक ऐगला खेतीले सभ सूर-सार करए लगल। मुदा खेतीक तँ प्रमुख अंग बरद छी। बिनु बरदे खेत जोताएत केना। अपनेटा गामक एहेन दशा नहि, परोपट्टाक एक्के रंग दशा। किसानक बीच एक्के रंग समस्या पसैर गेल, जइसँ बँचल-खुचल माल-जालक दाममे आगि लगि गेल। बरदक दाम दोबर-तेबर भऽ गेल। एक तँ भेटैबला नहि, दोसर पैकार सभ जे बाहरसँ आनि-आनि बेचै ओकरो वएह हवा।

अपन इलाका छोड़ि दोसर इलाकासँ बरद कीनि अनैक विचार भेल। मुदा असगर-दुसगर आननाइयो भारी बुझि पड़ल। गाममे गप्प चलेलौं। एक्के-दुइए आठ-नअ गोरेक विचार भेल। जोड़ा कीननिहार तीन गोरे भेलौं। बाँकी छबो- गोरे पल्ले-पल्ला कीननिहार। हुनका सबहक विचार जे एकटा बरदसँ हर नै जोतल जाएत मुदा जोड़ा लगा लेलासँ भजैती नीक रहत। बेजोड़ बरद रहने एकटाकेँ बेसी भीड़ होइ छै आ एकटाकेँ कम, जइसँ साले भरिमे बरद टुटि दाम बुड़ा दइ छइ।

तेसर दिन नअ गोरे लौकहावाली गाड़ी झंझारपुर हॉल्टपर पकड़लौं। साढ़े बारह बजे लौकहा स्टेशन उतैर मेन रोड छोड़ि धनबदहेक

उत्तर-मुहेँ रस्ता पकड़लौं। कखन सीमा टपलौं से बुझबे ने केलिऐ। एक्के रंग बाध आ बाधक उपजा। नमहर-नमहर बाध, खेतमे लहलाहइत धान। दुधाएल धानक सीस, जहिना धानक गाछक रंग तहिना सीसोक। ऊँचगर-चौड़गर खेतक आड़ि, जैपर राहैड़ फुलाइतो आ छीमियोँ भेल। टाट जकाँ राहैड़क गाछ खेत सबहक परिचय करबैत। अपन सभ जकाँ चनकी राहैड़क गाछ नहि, मझोलका गाछ...।

खेसारी छिटैत एक गोरेकेँ पुछलिऐ तँ कहलक जे ऐ दिगारमे बेसी पये राहैड़ होइ छइ। धानेक संग-संग अगहनेमे कटाइ छइ। सोहरी लगल घुरछा-घुरछे ओ राहैड़ फड़ल। छीमियोँ नमहर। कोला-कोली गिरहस्त खेसारी, मौसरी छिटैत। आड़ि सभपर जेरक-जेर ढेरबा-सँ-सियान धरि घसवाहिनी घास छिलैत। उपजा देखि माटि निहारलौं तँ सोलहन्नी खसिआइ माटि बुझि पड़ल, देखैमे कारी। माटि देखि मन गदगद भऽ गेल। मुदा अपन इलाका मोन पड़िते मन तिता गेल। कमला-कोसीपर खौंझ उठल। दुनू तेहेन हेहर अछि जे इलाकाक माटिकेँ बिगाड़ि देलक। बाउल भरि खेतकेँ बलुआह बना देलक। रस्ताक पछबारि भाग एकटा नमगर-चौड़गर परतीपर पचासो महींस चरैत देखि मन खुशी भऽ गेल। चरवाह सभ महींसकेँ अनेर चरैले छोड़ि अपने सभ खेलाइत। खेलो अजगुत, ठेंगा-ठेंगा। कनी अँटैक देखए लगलौं। एकटा सीमा देने। ओइ सीमापर सँ रागक तर देने उनैट कऽ दुनू हाथे ठेंगा फेकैत। जेकर ठेंगा जेते दूर जाए ओ ओते सुरक्षित। जेकर लग रहै ओ हारइ। जे हारै ओकरा घुघुआपर चढ़ि ठेंगा लग तक जाए। फेर दोहरा कऽ खेल शुरू होइ। गोबरबिछनी सेहो बैस कऽ खेल देखैत। कोनो धड़फड़ी रहबे ने करइ। तीनिए चारि गोरे रहए, पथियामे केते अँटितै। जहिना एकाधिकार पूजीपतिक कारोबार निचेनसँ चलैत, कोनो प्रतियोगिता रहबे ने करैत, तहिना पचास महींसक गोबरक बीच तीनू-चारू गोबरबिछनी। मुदा एकटा देखलिऐ जे एकबेर एकटा महींस धानक खेत दिस बढ़ए लगलै तँ एक गोरे माने एकटा ढेरबा गोबरबिछनी उठि कऽ महींस घुमा देलकै।

कोसक अन्दाज आगू बढ़लौं तँ हाट लगल देखलिऐ। समैयो चारिक करीब भऽ गेल। मनमे भेल जे कोनो ठेकानल जगहपर थोड़े जाइक अछि

जे अबेर हएत। जखन एलौं तँ देखैत-सुनैत जाएब। हाट देखए बढ़लौं। गमैया हाट। कट्ठा डेरहेक परतीपर लगल। तीन-चारि पल्लाबला दू-तीनटा अन-पानिक दोकानदार, दस-बारहटा तीनम-तरकारीक, एक-एकटा माछ-मासुक दूटा झिल्ली-कचड़ी-मुरहीवाली, एकटा मनिहारा, एकटा माटिक बरतन, एकटा छिट्टा-पथियाक, एकटा चाहक दोकान आ एकटा पान-बीड़ीक। मुदा खरीदारी बढ़ियाँ होइत। अन्दाज केलौं तँ बुझि पड़ल जे जेते किनिनहार अछि ओतबे समानो आ बेचनिहारो। चाहक दोकानपर बैस चाह दइले दोकानदारकेँ कहलिऐ। चूल्हिक छाउर झाड़ि, डोमौआ बीऐन होंइक, चूल्हिपर केटली चढ़ौलक। दोकानदारसँ पुछलिऐ-

"हाट सभ दिन लगैए?"

दोकानदार कहलक-

"ऐ पँचकोसीमे चारिटा हाट लगै छइ। सोम आ शुक्रकेँ ई हाट लगैए। रवि आ बुधकेँ बिस्टौल लगै छै, मंगल आ वरसपतिकेँ चिकना आ शनि-मंगलकेँ परसा।"

चाह बनल। सभ कियो पीब दोकानदारकेँ पाइ दऽ विदा भेलौं। अपने गाम जकाँ गामो, अपना सबहक तँ पोखैर-इनार या तँ बाउलमे भोथा गेल वा मरने भऽ गेल अछि, ओइ सभमे अखनो अछिए। गोटि-पँगरा ईंटाक घर। रस्ता-पेरा कच्चीए। उत्तरे-दछिने गाम सभ। जइसँ आगि-छाइसँ सुरक्षित। जँ केतौ पुरबा-पछबामे आगि लगबो कएल तँ कम घर जरल। जहिना गाम उत्तरे-दछिने तहिना अँगनो सभ। अपने सभ जकाँ लोकोक बगए-बानि आ बोलियो। जइसँ अनभुआर जकाँ बुझिऐ ने पड़ए। गोसाँइ लूक-झूका गेला। जहिना पछबा सबेर-सकाल अपन बोरा-बिस्तर समेट लैत तहिना ने परदेसियोकेँ सबेर-सकाल ठौर पकैड़ लेबाक चाही। मनमे उठिते अँटकैक गर लगबए लगलौं। एक गोरेसँ पुछलिऐ-

"कोन गाम छी?"

"रोहितपुर।"

मुदा कोनो निसचित गाम तँ जेबाके नै छल जे दोहरा कऽ पुछितिऐ। तैकाल एक गोरेकेँ दोसर गोरे सोर पाड़लक- "मधेपुरबला हौ, हौ

मधेपुरबला। कनी एमहर आबह।”

मधेपुर सुनि मन चौंकल। मुदा लगले असथिर भऽ गेल। नाम-गामक कोनो ठेकान अछि। एक-एक नामक केतेक लोको आ केतेक गामो होइए। मुदा मनमे तैयो घुरियाइते रहि गेल। मधेपुरबलाक घर पुबारि भाग रस्ताकातेमे। घास झाड़िते मधेपुरबला उत्तर देलक-

“हाथ लगल अछि, लगले अबै छी।”

कहि घास झाड़ब छोड़ि मधेपुरबला उत्तर-मुहेँ विदा भेल। लगमे अबिते पुछलिऐ-

“कोन मधेपुर रहै छी?”

गामक नाओं सुनि बाजल-

“अहाँ सभ केतए रहै छी?”

कहलिऐ-

“हमहूँ मधेपुरे रहै छी। तँए पुछलौं।”

मधेपुर सुनि ओ चौंक गेल। जेना किछु भेट गेल होइ तहिना। मुस्कियाइत बाजल- “झंझारपुरसँ पूब-दच्छिनक जे मधेपुर छै, ओही मधेपुर रहै छी।”

अपन मधेपुर सुनि हमहूँ हँसैत बजलौं-

“हमरो सबहक घर तँ ओही मधेपुर अछि।”

हमरा सबहकेँ दरबज्जापर बैसबैत बाजल-

“लगले अबै छी। ओइ वेचारा ऐठाम पाहुन सभ औत डेढ़िया परहक टाट लगौत ओकरे गर धरौने अबै छी। हमर भाग जे गौंआँ-घरूआ सभ एला।”

अपन भेटैत ठौर देखि कहलयैन- “हँ, हँ भेल, आउ। समाजमे सबहक काज सभकेँ होइ छइ।”

काजक बोझसँ अपनाकेँ लदल देखि चेथरू रस्तेपर सँ सोर पाड़ि पत्नीकेँ कहलक- “लगले अबै छी। ताबे अहाँ एक बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा आनि पएर धोइले दियौन।”

कहि चेथरू आगू बढ़ल। भरि बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा नेने चमेली दरबज्जापर आबि पुछलैन-

“बौआ, अहाँ सबहक घर केतए अछि?”

कहलयैन-

“मधेपुर।”

जहिना अनचोकमे देहपर खढ़ो गिरिते लोक चौंक जाइए तहिना मधेपुर सुनि चमेली चौंक गेली। अदहा मुँह झँपैत बजली-

“औक्सी महादेव मन्दिरसँ थोड़बे हटि कऽ हमरो नैहर अछि।”

चमेलीक बात सुनि दुभिक मुहसँ छोड़ैत नव पत्ती (पात) जकाँ हृदयमे भेल। अपन तीस बर्ख पहिलुका जिनगीमे ओ डुबि गेली। मुँह शिथिल भऽ गेलैन, जइसँ किछु आगूक बकार नै निकललैन। मुदा दरबज्जापर आएल अतिथि-ले घरवारीक रहब अनिवार्य बुझि खुट्टा जकाँ ठाढ़ रहली। बेरा-बेरी हमहूँ सभ पएर धोइ-धोइ चौकीपर बैसए लगलौं। जहिना देवालयमे दर्शकक नजैर एकाएकी मुरती सभपर पड़ैत तहिना चमेलीक आँखि हमरा सभपर नाचए लगलैन।

घुमि कऽ अबिते चेथरू पत्नीकेँ कहलखिन-

“जलखै नेने आउ। रस्ताक झमाड़ल सभ छैथ। भूख लगल हेतैन।”

हमहूँ सभ बेरा-बेरी कुर्रा कऽ बैसलौं। चँगेरा भरि मुरही, नोन-मिरचाइ आँगनसँ आनि चमेली बीचमे रखि देलैन। जलखै देखि चेथरू बजला-

“अहाँ सभ जाबे जलखै करब ताबे छिड़िएलहा काज सभ समेट लइ छी।”

कहि एकटा छिट्टा आ हँसुआ नेने बाड़ी दिस चेथरू आ आँगन दिस चमेली बढ़ली। कातिक मास रंग-बिरंगक तरकारीसँ सजल चौमास। बिना तजबीज केनहि चेथरू आठो-नओ रंगक तरकारीक छिट्टा आँगनमे रखि, लगमे आबि बैसला। बैसते कहलयैन-

“अपन इलाकाक जहिना खेती-पथारी उपैट गेल तहिना मालो-

जाल। मुदा बिना बरदे खेती केना करितौं। तँए एलौं। सुनै छी जे ऐ इलाकाक लोक अपना इलाकाबलाकेँ कहै छैथ जे अपन कमाएल रुपैआ लऽ कऽ एलौं आकि बाप-दादाक, से ठीके छिऐ?”

हमर बात सुनि चेथरू तरे-तर हँसए लगला। मुदा अपनाकेँ दुनू ठामक पाबि कनीकाल गुम रहि बजला-

“खिस्सा-पिहानी अहिना लोक जोड़ती-जोड़ि बना लइए। एहनो-एहनो बात हुअए। कोनो धरती कर्मभूमिसँ धर्मभूमि बनैए। देखै छी जे गामोमे दिल्ली-बम्बइसँ घुमि कऽ आएल कनियाँ सभ अतिथि-अभ्यागतकेँ ओतुक्के चालि-ढालिसँ स्वागत करै छैथ तँ एहनो सभ छैथ जे केरल-मद्रासमे रहितो गाम-घर जकाँ स्वागत करै छैथ। हम-अहाँ भैयारी भेलौं। तँए भैयारी जकाँ दुख-धन्धाक गप-सप्प करू।”

चेथरूक विचारसँ मन खनहन भऽ गेल। हृदय बाजि उठल जे सहारा भेटल। अखन तँ धान फुटबे कएल, जखन पाकत तँ बीयो-बालि लऽ जाएब। ऐठामक बरदो अपना ऐठामक बरद तँ सक्कतो होइ छै आ बेसी दिन जीबो करै छइ। अपना ऐठामक माल गदियाह भऽ गेल। ऐठामक जमीनक माल निरोग अछि। चुप्पा-चुप्पी देखि पुछलयैन-

“अहाँ केना ऐठाम आबि गेलौं?”

हमर बात सुनि चेथरूक मन पसीज गेलैन। गपकेँ आगू नै बढ़ा बजला-

“भानसो भऽ गेल हएत। अहूँ सभ थाकल छी। जखन बरद कीनए एलौं तँ हेबे करत। कोनो की अनतए एलौं। अपन घर छी। पाँच दिनमे इलक्को घुमा कऽ देखा देब। मन मोताबिक बरदो कीनि देब।”

चेथरूक बात सुनि हुँहकारी भरैत बजलौं-

“हँ, हँ, से तँ ठीके। देस-कोस ने बदलैए। मनुक्ख तँ मनुक्खे रहैए किने।”

खेला-पीला पछाइत संगी सभ नीनसँ सुति रहला। मुदा अपना नीने ने हुअए। अदहा घन्टा बाद चेथरू खा-पी, मालक घरक घूर सेरिया, खाइले दऽ बरका बाटीमे शुद्ध तोड़ीक तेल नेने आबि बजला- “सुति

रहलौं।"

आरो गोरेक साँसे कहैत जे सुतल छी। बजलौं-

"नइ, जगले छी।"

हमरा लग आबि चेथरू तेलक बाटी बढ़बैत कहलैन-

"थाकल-ठेहियाएल छी, पैरमे तेल औंस लिअ।"

दहिना हाथ तेलमे डुमा बजलौं-

"भऽ गेल। एकरे मिला लइ छी। रखि दियौ।"

एकेठाम बैस दुनू गोरे गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलयैन-

"ऐठाम एला केते दिन भेल?"

कनीकाल चुप रहि चेथरू बजला-

"जहिना बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक (टिप्पणि दुआरे) बेटा-बेटीक जन्मोक ठेकान नइ रहैत तहिना हमहूँ छी। अन्दाज पच्चीस बर्खसँ ऊपरे भेल हएत?"

"ऐठाम बेसी नीक लगैए आकि ओइठाम, मधेपुरमे?"

प्रश्न सुनि चुप भऽ गेला। जहिना दुबट्टी-तिनबट्टीपर पहुँच अपन रस्ता लोक हियाबए लगैत तहिना चेथरूओ हियाबए लगला। उठि कऽ तमाकुल थुकैड़ आबि बैस बाजए लगला-

"जेतए बसी वएह सुन्दर। भने अखन दुइए भाँइ जागल छी। अपन गाम मोन पड़ैए तँ छाती दहैल जाइए। बाबाक रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल। बाबाक कहल सभ बात तँ मोन नै अछि मुदा गोटे-गोटे मन अछि। कहने छला जे केना अपन गाम बसल आ अखन धरि केना परिवार चलैत रहल। दैवी चक्र एहेन चलल जे बिगड़ैत-बिगड़ैत एते बिगैड़ गेल जे बास होइ-जोकर नइ रहल।"

कहैत-कहैत हुचकी उठए लगलैन। गरा -कण्ठ- बाझए लगलैन। चुप होइत देखि पुछलयैन-

"से की? से की?"

आँगुरसँ अपन मौसाक घर दिस देखबैत बजला- "हमरा अबैसँ

पहिने ऐठाम मौसा एला।”

मौसाक नाओं सुनि पुछलयैन- “ओ किए एला?”

चेथरू- “आब तँ अपने नै छैथ, बेटा छैन। वएह ऐठामक गाम-परधान छी। ओकरा दुआरपर पाँचटा धरम बखारी छइ। सौंसे गौंआँ बेर-बेगरता-ले धान जमा केलक। साले-साले बढ़बैत गेल। अखन तेते जमा भऽ गेल अछि जे जेकरा जेते बेगरता होइ छै ओ ओते लइए आ पीठक-पीठ आपस करैए।”

मुहसँ निकैल गेल- “वाह! अच्छा, ओ किए एला?”

चेथरू- “मौसाकेँ अनटेटल गप आ अन्ट-सन्ट काज पसिन नै छेलैन। सोभावे ओहने छेलैन। जेकरा चलैत चारि-पाँच बेर गौंआँ सभ मारलकैन। अन्तिम मारिमे बेसी चोट लगलैन। मन टुटि गेलैन। जहिना एक घटनासँ कियो वैरागी बनि जाइत तँ कियो अपराधी, कियो निरमोही बनि घर-परिवार छोड़ि दैत तँ कियो सिंह सदृश गर्जन करैत रहैए, तहिना गामक मोह छोड़ि खेत-पथार बेच चलि एला।”

“अहाँकेँ की भेल?”

“कोनो एक्के गाम ओहन अछि। हमर गाम तँ आरो बेसी बिगैड़ गेल। एक दिस महाजनक अतियाचार तँ दोसर दिस खेत-पथारक बेइमानी-शैतानी। बलजोरी अपन नमहर खेतमे छोटका खेतक आड़ि तोड़ि जोइत लइत। तहिना चोराइयो आ देखाइयो कऽ खेतक जजात गाए-महींससँ चरा लइत। आम तोड़ि लैत, दोसराक माए-बहिनक इज्जत-आबरूपर हाथ बढ़बैत तँ आगि-पानि ढाठि भागैले उड़ी-बिड़ी लगबैत। सेन्ह काटि-काटि घरक वस्तु-जात लऽ भागैत तँ बिना किछु बजनौं दसटा बात-कथा कहि दइत।”

चेथरूक बात सुनि, जहिना भुम्हुर आगिक धुआँ निकलैए तहिना लहरल हृदयक गर्म सांस निकलल।

पुछलयैन- “शुरूमे (एलापर) तँ बड़ दिक्कत भेल हएत?”

“नहि। अपना तीन कट्ठा खेत रहए। दू साए रुपैए कट्ठा बेच लेलौं। घरो बेच लेलौं। खाली अपन देहक कपड़ा आ रुपैआ लऽ कऽ मौसे ऐठाम

एलौं। वएह दस कट्ठा खेतो कीनि देलैन, एकटा घरो बना देलैन आ कहलैन जे जइ चीजक बेगरता हुअ, से लिहह। घरक बिचला खुट्टा जकाँ ठाढ़ भऽ गेला। आब तँ अपने सभ किछु भऽ गेल। जाबे सासु-ससुर जीबै छला ताबे सासुर जाइ छेलौं, मामा-मामी धरि मात्रिक। बहिन-बहनोइ ऐठाम जाइते छी। ओहो सभ अबिते अछि।”

चेथरूक बात सुनि मन औनाए लगल। कछ-मछी आबि गेल।

कहलयैन-

“नीनसँ देह भँसियाइए। बड़ राति भऽ गेल। अहूँ सुतैले जाउ।”

“एतै ने हमहूँ सूतब।”

पाँच दिन मेहमानी केलौं। छठम दिन बरद नेने गामक रस्ता धेलौं।



शब्द संख्या: 1970

केतौ नै

चारि-पाँच बर्खसँ जनकपुरक बिआह पंचमी देखैक विचार मनमे उठैत रहल मुदा माए कहै छेली, ‘अखन बाल-बोध छह, केतौ हरा-तरा जेबह, नइ जा।’

माइक बात नीक नै लगए। हुअए जे जहिना गाम-घरमे लोक नै हराइए तहिना ओतौ किए हराएत? ई नइ बुझिऐ जे ओइठीम दूर-दूरक लोक देखए अबैए, जइसँ भीड़-भाड़ बढ़ि जाइ छइ। भीड़े-भाड़मे बालो-बोध आ चेतनो हराइए।

चौदहम बर्ख टपिते पनरहमक शुरूए-मे अगहन-इजोरियाक पंचमी आएल। गामक लोकमे मेला देखैक सुन-गुनी शुरू भेल एक्के-दुइए सौंसे गाम पसैर गेल। एक गामक कोन बात सगतैर भेल। हमहूँ सुनलौं। माइक बात मोन पड़ल। भलेँ भोँट खसबै-जोकर नइ भेलौं मुदा बालो मजदूर-जोकर तँ नइ रहलौं। हराइयो जाएब तँ की हेतइ? अपन खेबा-खरचा ने तीने दिनमे सधि जाएत मुदा तैयो तँ कमाइत-खटाइत, खाइत-पीऐत दस दिनक पछाइतो तँ आबिए जाएब। आशा जगल। बिसवास बढ़ल। माएकेँ कहलयैन- “गामक लोक उनैट कऽ जा रहल छैथ, हुनके सभ सेने हमहूँ जाएब।”

माए किछु बजली नहि, कहली- “नुआ-बस्तर खीच लिहह।”

माइक बात सुनि बिसवास भऽ गेल। मनमे उठल, आब टिकुलाक बीआ जकाँ थोड़े खिच्चा छी, भलेँ पाकल जकाँ सक्कत आँठी नइ भेलौं मुदा कोशाएल जकाँ तँ जरूर सकता गेल छी। अगुआएल-पछुआएल दुआरे गामक बीच यात्रीक गिनती नइ भेल। ओना गिनतीक महत बुझबो ने करिऐ। गामक सिमानपर पहुँचते ऐगला यात्री रूकि कऽ पैछला सभकेँ हाथक इशारासँ शोरो पाड़थिन आ आँखि उठा-उठा देखबो करथिन। हमहूँ पहुँचलौं। पतराइत रस्ता देखि गिनती हुअ लगल। मर्द-औरत मिला

सताइस गोरे भेलौं।

गिनतीमे सभसँ उमेरगर सुचितादादी रहैथ। बजली-

“सभ कियो सुनि कऽ कान धरब! तीर्थ-वीर्त करए जाइ छी, तँए रस्ता-पेरामे केकरो कोनो चीज-वौस नै छुबै, आ ने झूठ-फूस बाजि केकरो ठकबै! भाए-बहिन जकाँ सभकेँ बुझबै आ जँ कियो अगुआ-पछुआ जाएब तँ ठाढ़ भऽ कऽ संग करैत चलब।”

दादी गपक असर भेल। सभसँ कम उमेरक रही। बिना कहने-सुनने कफलाक टहलू बनि गेलौं। दादीकेँ कहलयैन- “दादी, अपना कम्मे समान अछि, एक अढ़ैया चूड़ा आ कपड़ा झोरामे अछि, अहाँकेँ भारी लगैत हएत, लाउ नेने चलै छी।”

बात सुनि दादी, छिट्टा भरि असिरवाद दैत अपन मोटरी दऽ देलैन आ दादी अपन पुरना खेरहा सभ कहैत चलए लगली- “बौआ, अहिना कुशेसर जाइत रही। तीन बर्खसँ नियारैत रही, घरमे गाइक घी पड़ल रहए। केना चौदह कोस डेरहे दिनमे चलि गेलौं से बुझबे ने केलिऐ। तइ दिनमे समरथाइयो रहए।”

पुछलयैन- “केतए-केतए गेल छिऐ दादी?”

कनीकाल गुम रहि मन पाड़ि बजली-

“अपन गामक तीनू स्थान- दच्छिनमे कुशेसर, पूबमे सिंहेसर आ उत्तर- पच्छिमक बीचमे जनकपुर पड़ैए। कनीए रस्ताक तरपट हेतइ। हँ, तँ कहए लगलयह, अहिना आठ-नअ गोरेक कफलामे सिंहेसर स्थान विदा भेलौं। अखन तँ चढ़न्त जाड़ अछि मुदा शिवरातिक समय जाड़ फटए लगै छइ। सबहक विचार भेल जे घोंघररिया तक टेनसँ जाएब, फेर सुपौल तक पएरे जाएब आ सुपौलसँ बस पकैड़ जाएब।”

बिच्चेमे पुछलयैन- “कोसी-धार सेहो टपए पड़ल हएत किने?”

“हँ, हँ। पहिने टेनक बात सुनि लएह। जखन गाड़ीमे चढ़लौं तँ खाली सीट सभ देखलिऐ। दुनू कातक सीट मिला कऽ तीन-चारि गोरे बैसल रहइ। हमरो सभकेँ जगह भऽ जाइत। मुदा तेहेन ऐंठल सभ रहै जे नहियेँ बैसए देलक। पुरुख सभसँ मुँह केना लगैबतौं। सभ स्त्रीगणे रही।”

"किए ने बैसए देलक?"

"तेहेन-तेहेन छुद्दर पुरुख सभ भऽ गेल अछि, जे केकरोमे पुरुखपाना छइहे नहि। अपना ऐठीमक पुरुख अनको माए-बहिनकेँ अपन बुझैए। ओइ इलाकाक थोड़ै बुझै छइ। ठाढ़े भेल घोंघररिया तक गेलौं। निच्चाँमे बैसबो करितौं से तेते सिकरेट-बीड़ीक अधजरुआ टुकड़ी आ चिनियाँ बदामक खोंइचा रहै जे बैसैक परपन नइ भेल।"

"मोटरी की केलिऐ?"

"मथेपर रखने गेलौं। ऊपरका सीटपर गेंड़ा जकाँ दूटा मुनसा सुतल रहै, किन्नो नै मोटरी राखए देलक। जखन कोसी धारमे नावपर चढ़लौं तँ घटवारक संगे कहा-कही हुअ लगल। मुदा बाबापर सुरैत लगा कहुना पहुँच गेलौं।"

स्टेशन पहुँचते गप-सप्प बन्न भेल। गाड़ी आएल। सभ कियो चढ़ि गिनती कऽ जयनगर पहुँचलौं। जयनगरक प्लेटफार्म यात्रीसँ भरल। तिल रखैक जगह नहि। मुदा एते बिसवास भऽ गेल जे एते दूर देखलो भइये गेल। आब तँ बालो-बोध नहियेँ छी जे बिसैर जाएब। जँ कहीं छुटियो जाएब आकि हराइयो जाएब तैयो घुमि कऽ गाम चलिए जाएब।

नेपालक गाड़ियो छोट आ इंजिनो कमजोर, मुदा तैयो निच्चाँ-ऊपर लादि यात्रीकेँ पहुँचाइए दइ छइ। गाड़ीमे चढ़ै-दुआरे केते यात्री एक स्टेशन पएरे चलि उनटामे चढ़ि पहुँचै छैथ। मुदा सीमा कखन टपलौं से बुझबे ने केलौं। लोको एक्के रंग आ बोलियो तहिना। जनकपुर पहुँच गेलौं।

यात्री-सभकेँ देखि मन उधिया गेल। मन मानि गेल जे ऐ भीड़मे केतौ जरूर हराइए जाएब। मुदा लोकक भीड़मे लोक अपनाकेँ हराएल केना बुझत। सभ तँ लोके छी। सबहक मुँहमे बोलो अछिए। सभ तीर्थे करए आएल छैथ तखन हराइक प्रश्न केतए? मुदा तैयो मन थरथराइते रहल। फेर भेल जे हराएब तखन ने, आ जँ नै हराइ। तइले अनेरे चिन्ता किए करै छी...।

खाइत-पिऐत एक फेरा लगबैत तीन बजि गेल। बिआहक प्रकरण तँ रातिमे हएत मुदा बिआह होइक कारण तँ धनुष टुटब अछि। तँए पहिने

धनुखा जेनाइ उचित हएत। घुमैत-फिरैत एकठाम बैस सभ विचारए लगलौं। बिआह प्रकरण देखए एलौं अखन धरि बरियातियो पछुआएले अछि। पछुलके धरमशल्लामे अँटकल अछि। ऐठाम अबैमे चारि-पाँच घन्टा लगत। से नहि, तँ अपनो सभ ताबे धनुखासँ भऽ आबी। एक स्वरमे विचार भेल। बसक भाँजमे विदा भेलौं। सभ आगू-आगू, हम आ दादी सबहक पाछू-पाछू। यात्रीकेँ देखबैत दादी बजली- “बौआ, तूँ ने अखन तक दोसर कोनो स्थान नै गेल छह, मुदा हम तँ बहुत ने देखने छी।”

एते बात सुनिते मनमे भेल जे दादी कोनो ठेकनगर बात कहए चाहै छैथ। हुँहकारी दैत कहलयैन-

“हँ से तँ ठीके। अखन हमरा भेबे की कएल, जनैम कऽ ठाढ़ भेलौं हेन।”

आगू दादी बजली- “देखहक ई स्थान भगवान राम आ सीताक छिऐन। अयोध्यावासी राम आ मिथिलाक जनकक कन्या सीता दुनूक मिलन स्थल छी। तँए देखै छहक जे सभ रंगक यात्रियो अछि, स्त्रीगण-पुरुखमे बेरौल हेतह जे पुरुख बेसी अछि आकि स्त्रीगण। तहिना देखै छहक जे सभ रंगक मुँह-कानबला यात्री अछि। केकरो मान-अपमानक बात अछि। मुदा आन-आन स्थानमे से कहाँ देखबहक। जहिना एकचलिया लोक तहिना एकचलिया चालि।”

मैक्सीपर बैस सभ-कियो धनुखा विदा भेलौं। घन्टा भरि लगैत-लगैत धनुखा पहुँचलौं। गाड़ीक ड्राइवर आ खलासी उतैर देखबए विदा भेल। मन्दिरक हाताक भीतर पहुँचते ड्राइवर बाजल-

“भगवान राम जे धनुष तोड़लैन ओ तीन टुकड़ी भऽ गेल। एक टुकड़ी एतै खसल। सएह स्थान छी। देखै छिऐ, धनुषेक टुकड़ी छिऐ किने!”

दर्शन केलौं। सबहक विचार भेल जे बिना किछु खेने-पीने आ सनेस नेने केना जाएब। हमहूँ चाह पीब पान खेलौं आ हनुमानी-बद्धी कीनि कऽ गरदैनमे पहिर लेलौं। किरिन डुबि गेल। मुदा केकरो औगताइ नहि। किएक तँ घन्टे भरि जाइमे लगत आ आठ बजेमे बरियाती दुआर लगता।

गाड़ी चलल। करीब चारि माइल आगू बढ़ल आकि अपने ठाढ़ भऽ गेल। पंचमीक चान, ओसेसँ घेराएल। झल-अन्हार। गाम-घर केतौ नै देखिऐ। बीच पाँतरमे गाड़ी रूकल। ड्राइवरो आ खलासियो रिंच-हथौरी निकालि ठोक-ठाक शुरू केलक। हमहूँ सभ गाड़ीसँ उतैर देखए लगलिऐ। केतबो ठोकि-ठाकि ड्राइवर गाड़ीमे बैस चलबए चाहै, मुदा चलबे ने करइ। फेर उतैर कऽ ठोकै मुदा फेर ओहिना होइ। समय बीतल जाए। मोबाइल देखि ड्राइवर बाजल-

"आठ बजल!"

दुआर लगैक समय बुझि सुचितादादी बजली-

"केतए एलौं तँ केतौ नहि?"

मन हुअए जे कहिऐ- 'पाइ घुमा दएह।' दोसर गाड़ीसँ चलि जाएब।' इजोरियो डुबि गेल। दिसम्बरक अन्तिम समय तँए जाड़ो बढ़ैत गेल। मुदा सभकेँ ओढ़ना रहबे करै, ओढ़ि लेलौं। होइत-हबाइत भोरमे गाड़ी ठीक भेल। घुमि कऽ जनकपुर एलौं। ताबे बिआहक सभ प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल छल। रौतुका जगरनासँ यात्रियो सभ ओंघाएल। हमहूँ सभ तहिना रही।

यात्री सभ ट्रेन पकैड़ घुमए लगला। हमहूँ सभ नहा कऽ एकबेर सौंसे मेला घुमि, डोरि-सिनुर आ सनेस कीनि आबि, खेनाइ खेलौं आ गाड़ी पकड़ैले विदा भेलौं। भरि बाट दादी रटैत रहली-

"केतए एलौं तँ केतौ नहि! केतए एलौं तँ केतौ नहि! केतए एलौं तँ केतौ नहि!"



शब्द संख्या: 1203

Notes

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
